भक्ति की शक्ति

मानव जीवन एक ऐसा जीवन है जो मात्र जीना ही नहीं जानना भी चाहता है, सद्ग्रहस्थ का लक्ष्य मात्र जीवन निर्वाह ही नहीं जीवन निर्वाह के साथ जीवन में कुछ निर्माण की निर्वाण की ओर अग्रसर होना चाहता है।

मानव को जीवन निर्वाह के लिये जितनी भोजन की आवश्यकता होती है उससे कहीं ज्यादा मानव को मानवता की उत्कृष्टता को प्राप्त करने अर्थात आत्मा से परामात्मा के जागरण के लिये भक्ति, स्तुति, प्रार्थना, वंदना, भजन की आवश्यकता होती है। भोजन शरीर की खुराक है तो भक्ति श्रावकों के लिये आत्मा की खुराक है।

विवेक व युक्ति पूर्ण की गई परमात्मा की भक्ति में वह शक्ति है जो मुक्ति की ओर अग्रसर कर देता हैं। पूर्वाचार्य के नवदेता स्तोत्र सुप्रभात स्तोत्र भक्ताभर स्तोत्र सरस्वती स्तोत्र कलयाण मंदिर स्तोत्र आदि भक्ति स्तोत्र इसके जीवन्त उदारण है। भक्त को अपने भाग्य को सौभाग्य मय बनाने भक्त से भगवान इंसान से ईश्वर, शव से शिव बनने अपने इष्ट प्रभु व गुरू की आराधना ही एक सशक्त माध्यम है क्योंकि इष्ट की भक्ति ही कष्ट से मुक्ति दिला सकती है।

भक्ति के दो ही मार्ग है ध्यान और भक्ति अर्थात् स्तुति, प्रार्थना, भजन, गीतादि पहला मार्ग तो

ग्रहस्थों को संभव नहीं। यह मार्ग योगियो का है। गृहस्थों का मार्ग भक्ति का मार्ग हैं भक्ति के मार्ग का अनुशरण कर श्रावक अपना मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

भक्ति की अभिव्यक्ति ही आराध्य की आराधना का सर्वोत्तम साधन है। भक्त प्रभु व गुरू भक्ति अनेकों रूपों में करता है। जैसे दान, पूजा, स्वाध्याय, संत समागम, वैयावृति, आहार, विहारादि ये सभी क्रियायें अपने–अपने स्थान पर अपना महत्व पूर्ण स्थान रखती है, किन्तु इनके अतिरिक्त भावों को व्यक्त करने अपने इष्ट प्रभु व गुरू के गुण स्मरण, गुणगान करने का एक अति महत्वपूर्ण माध्यम है गीत (भजन) एवं गीत की स्वर लहरी संगीत को माध्यम बनाती है तो वह गीत हृदय के तारों को वीणा के तारों की भांति झंकृत कर देता है।

भक्ति गीत सुप्त आत्मा को जगाने का एक अमोघ अस्त्र है। रीटा जी आपने वर्षायोग में गुरू भक्ति से प्रेरित हो भजन, प्रार्थना, वंदना, स्तुति आदि के बहुरंगी पुष्पो का जो 'भक्ति निर्झर' नामक गुलदस्ता तैयार किया है यह संग्रहित गुलदस्ता अनेकों आत्माओं को सुवासित कर आत्मा के तारों को झंकृत करें।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ

मंगल आशीर्वाद

मुनि अरुण सागर

गुरू चरणों में समर्पित

पुष्पगिरि तीर्थ प्रणेता वात्सल्य दिवाकर परम पूज्य आचार्य श्री १०८ पुष्पदंत सागर जी महाराज के सरल स्वभावी, करूणा के धारी परमपूज्य मुनि श्री १०८ अरूण सगार जी महाराज ने महती अनुकम्पा कर २००४ का वर्षायोग औद्योगिक धर्मप्राण नगरी फरीदाबाद में हम जैसे भक्तों को देकर बड़ा ही उपकार किया है।

गुरू मील का वह पत्थर है जो अटके भटकों को संकेत कर राह दिखाते है गुरू के बिन जीवन शुरू नहीं। गुरू ही जीवन जीने की कला सिखाते हैं। गुरू महिमा का बखान मैं कहाँ तक करूँ साक्षात् बृहस्पति भी गुरू की महिमा का बखान नहीं कर पाता है मैं तुच्छ बुद्धि यदि कुछ कहू तो ऐसा होगा जैसे पर्वत की तुलना एक राई से करना।

गुरू भक्ति भक्त को दिव्यता व भव्यता की ओर अग्रसर करती है तो गुरू द्वारा प्रदत्त प्रभु भक्ति का मार्ग भक्त भगवत्ता की ओर अमरता को अग्रसर करता है। वर्षा योग में गुरूवर के द्वारा बताये मार्ग का हम सभी ने अपनी शक्ति के अनुसार पालन किया। उसका ही सुफल है कि गुरू भक्ति से प्रेरित हो, गुरूवर के संकतों को साकार करते हुये उनके सानिध्य में सभी भक्तों ने जो भक्ति गीत गुनगुनाये उन्हीं में से कुछ

सुन्दर भाव पूर्ण भजनों की यह ''भक्ति निर्झर'' कृति मैने तैयार करने की चेष्ठा की है इसमें मेरा अपना कुछ भी नहीं है जो कुछ है सब गुरू कृपा है।

मेरा मुझमें कुछ नहीं जो कुछ है तोर।
तेरा तुझ को सौपते क्या लागे है मोर॥

भावों के पुष्पों से सुसज्जित भावपूर्ण इस गुलदस्ता (भक्ति निर्झर) कृति में मेरा अपना कुछ नहीं मैं तो मात्र उस कारीगर की भांति हूँ जो यहाँ वहाँ हुई सामग्री को यथायोग मिलाकर भूमि पर एक महल तैयार कर देता है उसी प्रकार मैंने मात्र तत्र से भजनों को लेकर यह कृति तैयार की है।

गुरूवर के मुख मंडल पर बिझरी हुई मन्द मन्द मुस्कान भक्तों को स्वतः ही कुछ कहने कुछ लिखने के लिये प्रेरित करती है जिनकी मंद मंद मुस्कान ने भावपूर्ण लेखनी को गति प्रदान की ऐसे सम्यक चारित्र की साक्षात् मूर्ति रत्नत्रय के धारी मुनि अरूण सागर गुरूवर के चरणों में नमन् करती हुई भूलों की क्षमा याचना के साथ साथ शत्–शत् वंदन नमन्।

नमोस्तू नमोस्तू नमोस्तू

रीटा जैन

प्रचार मंत्री–महिला जागृति मंच, फरीदाबाद

संगीत की महिमा

पुष्पगिरि प्रेणता, वात्सल्य दिवाकर आचार्य श्री पुष्पदंत जी महाराज के परम प्रिय शिष्य मुनि श्री अरूण सागर जी ने धर्म व संस्कृति की रक्षा हेतु, पाप पंक का प्रक्षालन करने हेतु, आत्मा में धर्म का बीजारोपण करने के लिए, भव तम व भोगों से विरक्ति हेतु, कषायों की मंदता में सहायक संयम की प्रेरणा देने वाले भजन, आरती, स्तुति, वंदना व भक्ति पाठों का संकलन करवाया है।

संगीत की महिमा बड़ी विचित्र है। गीत, नृत्य एवं वाद्य तीनों संगीत हैं। संगीत का प्रभाव तो प्रकृति पर भी पड़ता है। संगीत गीत से पुष्प पल्लव अधिकता से विकसित होते हैं, संगीत से गजराज वशीभूत हो जाते है, वनस्पतियों पर भी गीतों का सवर्धनात्मक प्रभाव पड़ता है, मन को शान्ति मिलती है। गीत संगीत मन को प्रसन्न, शान्त व मुग्ध बनाते है इसीलिए प्राचीन काल में स्त्रियाँ चक्की पीसते समय, धान कूटते हुए, कुऐं से पानी खीचतें हुए गीत गाती थी चूढियों की झनकार उनके श्रम का मान कम कर देती थी।

प्रभु के समक्ष भावों की अभिव्यक्ति का श्रेष्ठ माध्यम है भक्ति। भक्ति संगीतमय होकर भजनों के,

गीतों के, मुक्तकों के माध्यम से हृदय में प्रस्फुटित होकर सारे वातावरण को आध्यात्मिक आह्लाद से परिपूर्ण कर देती है।

सरल स्वभावी, शान्त हृदयी, परम हितैषी मुनि श्री १०८ अरूण सागर जी महाराज का फरीदाबाद में वर्षायोग होने के कारण दिनांक २८.६.०४ से २.१.०५ तक सानिध्य मिला। इस मध्य अनेकों धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आयोजन उनके सानिध्य में हुए। इन सभी आयोजनों में 'जैन महिला जागृति मंच' फरीदाबाद ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। धर्म प्रभावना की भक्तो ने धर्म की गंगा में अवगाहन कर आत्म चिंतन किया, मन को पवित्र किया भगवद् भक्ति एवं गुरू भक्ति की अविरल साधना कर अनेकानेक भजनों गीतों द्वारा भक्ति भावना को सुदृढ़ किया। ऐसे करूणाधारी, परोपकारी, दयालु गुरू श्री अरूण सागर जी महाराज के चरणों में शत् शत् नमन वन्दन। सदा आपका आशीर्वाद मिलता रहे इस आशा के साथ विनम्र।

माधुरी जैन (अध्यक्ष)

एवं

समस्त जैन महिला जागृति मंच

फरीदाबाद

विषय सूची

क्रं.		पेज संख्या	क्रं.		पेज संख्या
1	णमोकार महामंत्र	1	27	देना हो तो दीजिये	29
2	मंगलाचरण	2	28	अजब निराले अजब निराजे	30
3	जिनेन्द्र प्रार्थना	3	29	गुरू बिना सूनो लगे संसार	31
4	गुरू वन्दना	4	30	अरूण सागर मिले हमको ऐसे	32
5	गुरू वन्दना	6	31	गुरूवर तेरी सूरत से अलग	33
6	गुरू भक्ति	7	32	मुनिराजों का रूप बनाया	34
7	गुरू भक्ति	8	33	पीछी रे पीछी इतना	35
8	वंदन सदगुरू चरणन	10	34	मेरा कोई न सहारा बिन तेरे	36
9	ऊँ गुरू ऊँ गुरू सच्चिदानंद	11	35	गुरूदेव मेरे तुमको	37
10	प्रार्थना (भोले भोले)	12	36	हे शारदे मां, हे शारदे मां	38
11	चरणों में झुका है माथा	13	37	जल जावे जिव्हा पापिनी	39
12	आये है मेरे गुरूवर	14	38	काहे उढा दई चदरिया	40
13	अरूण सागर के दर्शन से	15	39	जो बीत गये फिर वो जमाने	41
14	मंत्र जपो नवकार	16	40	मैली चादर ओढ़ के	42
15	सुनियों श्रावकों रे मुनिराज	17	41	णमोकार महामंत्र वंदन	43
16	जय बोलो जय बोलो	18	42	जिनवाणी स्तुति	44
17	मान गुरू का कहना	19	43	वो दिन गुरू जी	45
18	दुख तो मानव की सम्पत्ति	20	44	पारस प्रभु का दर्शन होगा	46
19	ये पंच परम गुरू प्यारे	21	45	जो रत्नत्रम से शोभित है	47
20	णमोकार मय मेरा	22	46	रोम रोम से निकले	48
21	जिस दिन प्रभु जी तेरा	23	47	गुरू तू न मिला	49
22	प्रभु मैं तो थक गई हूँ	24	48	पधारो महावीर भगवान	50
23	दर्शन करके महावीरा	25	49	खुशी से फूल बरसाओ	51
24	मम्मी मेरी मुझे मंगा दो	26	50	छोड दिया जिसने घर अपना	52
25	आकाश गंगा में जब तक	27	51	गुरूवर तेरे चरणों की	53
26	अपने ही रंग में मोहे	28	52	परमपूज्य मुनिराज हमारे	54

53	करूणा सागर भगवान	55	81	मेरे गुरूवर आये है	83
54	तुम हो तारण तरण	56	82	मैंने छोड दिया पापों का संग	84
55	तुम अगर दास अपना	57	83	जिनवाणी को रखना	85
56	आसरा इस जहाँ का	58	84	गुरूवर हम आये है	86
57	वीर की शरण में तुझको	59	85	संयम के झरोखों से	87
58	निशदिन करता जिनका ध्यान	60	86	गुरूवर तुम हो मालामाल	88
59	संसार के सागर में	61	87	मैं क्या करूं नाथ	89
60	सब पाप करम कट जाते हैं	62	88	प्रभु सुमिरन	90
61	अरूण गुरू की वन्दना	63	89	मुनिराज हमारे	91
62	ए मुक्ति चाहने वालो	64	90	शत् शत् नमन	92
63	तुझे नैया कहूँ खिवैया	65	91	तुझको तपना होगा	93
64	ठिकाना पूछते हो क्या	66	92	प्रभु नाम जपने से	94
65	एक भूपाल है एक कंकाल है	67	93	मैं फूल बनकर	95
66	छू लेने दो पावन चरणो को	68	94	गुरूवर आये	96
67	मेरे रोम रोम में बसने वाले वीर	69	95	अरिहंत देव स्वामी	97
68	एक मुनिवर के दर्शन से ऐसा लगा	70	96	पालना 1-2	98
69	कृपा की एक नजर गुरूवर	71	97	पालना 3-	99
70	मेरे प्रभु तू मुझको बता	72	98	दयालु प्रभु से हम	100
71	यदि भला किसी का कर न सको	73	99	पार्श्व प्रभु जी पार लगादो	101
72	वो पुण्य कहां से लाऊँ	74	100	सोते सोते मैं निकल गई	102
73	गाये जा गुण गुरूवर के	75	101	प्रभु रथ में हुये सवार	103
74	मिलती है मुनि संघ की	76	102	गहरी गहरी नदियां	104
75	चलते फिरते तीरथ मुनिवर	77	103	करूणा सागर भगवान	105
76	ज्ञान के दीप जलते चले जायेंगे	78	104	नर जन्म मिल गया था	106
77	मेरी विपदा मिटा दो भगवान	79	105	बैठ अकेला दो घड़ी	107
78	मैं भी पूजूं तुम भी पूजो	80	106	चाह जगी मुझे दरशन की	108
79	नी मैं खुशी मनाना नी	81	107	केशरिया केशरिया आज	109
80	महावीर ले ले फिर से जनम	82	108	जैन धर्म के हीरे मोती	110

109	साधु संत बन के बिचरूं	111	137	गुरूवर मेरे मन मन्दिर में	137
110	सांवलिया पारसनाथ शिखर पर	112	138	श्री अरूण सागर	138
111	फूल तुम्हें भेजा है	112	139	आँखों में है करूणा	139
112	गुरूदेव तेरे दर पर	113	140	करते है तुझको वन्दन	140
113	रंग लाग्यो महावीर	114	141	महावीर प्रभु के नाम की	141
114	गुरूवर आज मेरी कुटिया में	115	142	अरूण मुनि निशदिन हम	142
115	जहां भक्त नहीं होगें	116	143	तेरी तस्वीर दिल में गुरूवर	143
116	मिलती है जिन्दगी में	116	144	पीछी कमण्डल धारी	144
117	चाला चाला रे प्रभु का रथ	117	145	रहना न दूर हमसे	145
118	चल दिया छोड़ घर बार	118	146	मेरे भगवान मेरी	146
119	तुम्हारे दर्श बिन गुरूवर	119	147	हमें गुरू तेरा सहारा	147
120	जैनी होके पानी न छाना	120	148	नवप्रभात की नई किरण से	148
121	चरणों में आया हूँ	121	149	वन्दन गुरूवर अमृत सरवर	149
122	अरे हाय हाय ये मजबूरी	122	150	घट घट जीवन ज्योति जगादो	150
123	जिनवाणी माता दर्शन की	123	151	इक झोली में फूल भरे हैं	151
124	वाणी सरस्वती तू	124	152	आगे आगे अपनी ही अर्थी के	152
125	चूनरिया शिवधाम की	125	153	मिलती है जिन्दगी में	154
126	जन्माभिषेक आरती	126	154	तेरे चरणों की धूल बाबा	155
127	झीनी झीनी उड़े रे गुलाल	127	155	जीवन की रूलाती घड़ियों में	156
128	तूने खूब रचा भगवान	128	156	गुरूवर के दर्श पाना	157
129	ढोल बजा के बोल	129	157	रंगमा रंगमा रंगमा रे	158
130	दुनियां में ऐसा	130	158	जीवन के किसी भी पल में	159
131	वीरा तेरी वाणी अमृत	131	159	जीवन की पहेली सुलझाने	160
132	चौबीसी स्तवन	132	160	समता को धारने वाले	161
133	सिद्धपुरी को करने गमन	133	161	तुम अगर साथ देने का वादा	162
134	गुरूवर तुम में	134	162	साधु नहीं ये चलते फिरते	163
135	छू लेने दो चरणों को	135	163	जिस गुरू ने मुझको होश दिया	164
136	गुरूवर हमें सन्मार्ग	136	164	होली खेले मुनिराज	165

165	छोटा सा मन्दिर बनायेंगे	166	193	मनवा मगन भवो	194
166	मोक्ष के प्रेमी हमने	167	194	आ दर्श दिखा दे गुरूदेव	195
167	श्री वीर प्रभु की जय बोलो	168	195	गुरूदेव मेरे तुमको	196
168	मिलता है सच्चा सुख केवल	169	196	सज धज कर जिस दिन	197
169	आज के इस इन्सान को ये	170	197	सागर से भी गहरा वन्दे	198
170	अच्छा सिला दिया तूने	171	198	थोड़ा ध्यान लगा गुरूवर	199
171	वीरा जिनको याद करे	172	199	गुरूवर ओ मेरे गुरूवर	200
172	कैसे हो कल्याण करनी	173	200	गुरूवर दया करके	201
173	शुद्ध हृदय हो पल में	174	201	मेरे गुरूदेव मेरी	202
174	झूठी दुनिया से मन	175	202	नेहा लगाके गुरूवर	203
175	उड़ा जा रहा है पंछी	176	203	मेरा आपकी कृपा से	204
176	प्यारा लगे वीरा मुझे	177	204	भक्त तुम्हारा याद में रोये	205
177	प्रभु नाम जपने से	178	205	विनती न सुनेंगे	206
178	जहां सत्य अहिंसा और धर्म	179	206	दिन रात मेरे स्वामी	207
179	जैन धर्म की जय बोलो	180	207	एक आरजू है जब मिले	208
180	नेमि प्रभु दुल्हा	181	208	भगवन समय हो ऐसा	209
181	कुण्डलपुर श्री महावीरा	182	209	मीठो मीठो बोल थारो	210
182	गुरूवर एक बात माने खटकी	183	210	दीन बन्धु दयालु	211
183	तीरथ करने चली सती	184	211	ये धर्म है आतम ज्ञानी का	212
184	जपले बन्दे नाम	185	212	संकल्प एक ही हो इंसान	213
185	नमन तुम्हें भेजा है	186	213	इतनी शक्ति हमें देना दाता	214
186	ओ जगत के शांतिदाता	187	214	मुझे रास आ गया है	215
187	भक्ति करता छूटे म्हारा प्राण	188	215	श्री सिद्धों की स्तुति	216
188	जंगल जंगल पर्वत पर्वत	189	216	उमरिया रह गई थोड़ी	217
189	बाजे कुण्डलपुर में बधाई	190	217	वीरा प्रभु के ये बोल	218
190	मेरी एक ही तमन्ना	191	218	ओम है परम पिता का धाम	219
191	मोक्ष पद मिलता धीरे धीरे	192	219	जिनवर तू हैं चन्दा	220
192	मुझे ऐसा वर दे दो	193	220	सब पाप करम कट जाते है	221

221 तुम्हारे दर्श बिन स्वामी 222
222 सोया भाग्य जगादो गुरूवर 223
223 आया हूँ तेरे दर पे 224
224 सिद्धान्त की डगर पर 225
225 तुमको बांध लिया है 226
226 मोहे चौरासी के चक्कर 227
227 मनिवर ही रहवर है 228
228 अरूण सागर के दर्शन 229
229 जय अरूण सागर तू रटता चल 230
230 सब मिलकर के जय बोलो रे 231
231 श्री पुष्पदन्त फलवारी से 232
232 जय अरूण सागर की 233
233 रंग लाग्यो महावीर 234
234 ऋषभ ऋषभ कहना सभी 235
235 करमन की गति है न्यारी 236
236 जिनवर तू है चंदा 237
237 Come Here सब श्रावक भाई 238
238 सब पाप कर्म कट जाते है 239
239 आया हूँ तेरे दर पे प्रभु ध्यान 240
240 मुझे ऐसा वर दे दो 241
241 वीर नाम सुखदाई भजन करो 242
242 संसार में सार को बुन करके 243
243 जो बीत गई सो बात गई 244
244 आके चरणों में कुछ 245
245 बोलो तो बोलो सदा मीठे वचन 246
246 हो मैने तो धार लिया 247
247 सब जैन धर्म की जय बोलो 248
248 अपनी अपनी करनी का 249
249 आज चन्दन के मन की ना पूछो 250
250 अपनी कहानी सुन जा 251
251 अरिहंत नाम लड्डू सिद्ध नाम 252
252 क्षण भंगुर जीवन की कलियां 253
253 चरणों में आये है 254
254 गुरूवर है जग का नूर 255
255 विद्यासागर पुष्पदन्त की कथा 256
256 दिल में धर के ध्यान 257
257 कबहूँ कीन्हों ना भजनवा 258
258 छवि बसालो इनकी आखो में 259
259 निर मोहियो से ना मोह 260
260 कैसे टूटे बन्धन 261
261 ओ मेरे आत्मन जागो 262
262 पुरूष रूपा पुष्प हृदया 263
263 नन्हा सा फूल हूँ 264
264 कैसे मिलन प्रभु जी से होय 265
265 पशु जो वन में रहते है 266
266 पलट के रख दी जिसने सब 268
267 खुशियां छायी है अपार 270
268 जनम सफल सब करलो रे 271
269 गुरूवर अरूण सागर जी आये 272
270 अतिथि भवन आये 273
271 नी मै खुशी मनाना नी 274
272 जिन्दगी भजन बिना लुट गई रे 275
273 क्यों आये इतने नर नारी 276
274 कभी कभी मुनिवर को श्रावक 277
275 मुझे तजकर मेरे गुरूवर 278
276 आरती आचार्य श्री पुष्पदंत जी 279
277 आरती मुनि अरूण सागर जी 280
288 संक्षिप्त सूतक विधि 281

णमोकार महामन्त्र

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।

चत्तारि मंगलं अरिहंतामंगलं सिद्धामंगलं साहूमंगलं
केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा अरिहंतालोगुत्तमा सिद्धालोगुत्तमा
साहूलोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि अरिहंतेसरणं पव्वज्जामि
सिद्धेसरणं पव्वज्जामि साहूसरणं पव्वज्जामि
केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि।
एसो पंच णमोयारो, सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होइ मंगलं।।

मंगला चरण

ऊँ को नमन ओंकार को नमन
अरिहंतो को नमन श्री सिद्धो को नमन
आचार्यो को नमन उपाध्यायो को नमन
सर्व साधु को नमन, जिन धर्म को नमन
ऊँ मंगलं.....

ऊँ मंगल ओंकार मंगलं
अरिहंत मंगलं श्री सिद्ध मंगलं
आचार्य मंगलं उपाध्याय मंगलं
सर्व साधू मंगलं जिन धर्म मंगलं
ऊँ मंगलं.....

ऊँ उत्तमा ओकार उत्तमा
अरिहंत उत्तमा श्री सिद्ध उत्तमा
आचार्य उत्तमा, उपाध्याय उत्तमा
सर्वसाधु उत्तमा जिन धर्म उत्तमा
ऊँ उत्तमा.....

ऊँ शरणं ओकार शरणं
अरिंहत शरणं श्री सिद्ध शरणं
आचार्य शरणं उपाध्याय शरणं
सर्व साधु शरणं जिन धर्म शरणं
ऊँ श्रणं.....

जिनेन्द्र प्रार्थना

जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र बोलिए।
जय जिनेन्द्र की ध्वनि से अपना मौन खोलिए।।
सुर असुर जिनेन्द्र की महिमा को नही गा सके
और गौतम स्वामी न महिमा का पार पा सके
जय जिनेन्द्र बोलकर जिनेन्द्र शक्ति तोलिए।।
जय जिनेन्द्र.....

जय जिनेन्द्र ही हमारा एक मात्र मंत्र हो।
जय जिनेन्द्र बोलने को हर मनुष्य स्वतंत्र हो।।
जय जिनेन्द्र बोल बोल खुद जिनेन्द्र हो लिए।।
जय जिनेन्द्र.....

पाप छोड़ धर्म जोड़ ये जिनेन्द्र देशना।
अष्ट कर्म को मरोड़ ये जिनेन्द्र देशना।।
जाग जाग जाग चेतन बहु काल सो लिए।।
जय जिनेन्द्र.....

हे जिनेन्द्र ज्ञान दो मोक्ष का वरदान दो।
कर रहे हैं प्रार्थना, प्रार्थना पर ध्यान दो।।
जय जिनेन्द्र बोलकर हृदय के द्वार खोलिए।।
जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र बोलिए।
जय जिनेन्द्र की ध्वनि से अपना मौन खोलिए।।

गुरू वन्दना

अखण्ड आत्मज्ञायक, अखण्ड मुक्तिदायक।
गुरूदेव तुमको नमस्ते – नमस्ते।।
तुम्हारे चरण में जो लग जाये रहने।
वो पा जाये मुक्ति फिर हंसते–हंसते।।
गुरूदेव तुमको नमस्ते नमस्ते.....
तुम्हारे चरण के परस में जो आये।
वो मिथ्या को तज के सम्यक को पाये।।
तुम्हीं ने तो खोले हैं आगम के दस्ते।
गुरूदेव तुमको नमस्ते नमस्ते.....
तुम्हारे चरण में मिले ज्ञान पानी।
तुम्हारे चरण में कटे जिन्दगानी।।
कई जन्म से खोती आई हैं सुधियां।
भोगो के पथ पर तरसते तरसते।।
गुरूदेव तुमको नमस्ते नमस्ते.....
चिदानन्द तुम हो, दयानन्द तुम हो, हमारे
लिए तो, श्री कुन्द तुम हो ।।
उपदेश देकर निकाला है हमको, मोह
कीच माया में फसते फसते।।
गुरूदेव तुमको नमस्ते नमस्ते.....

नहीं पार पाया किसी ने तुम्हारा। जो
आया शरण में वो पाये सहारा।।
विमल सिन्धु गहरा हूँ छोटी नदी सा।
मिला लो स्वयं में आहिस्ते–आहिस्ते।।
गुरूदेव तुमको नमस्ते नमस्ते.....
लहराता उपवन है पुष्प धनी का। इठलाता
यौवन है नन्हीं कली का।।
करता हूँ विनती हे अरूण सागर। खिला
लो कली को महकते महकते।।
गुरूदेव तुमको नमस्ते नमस्ते.....

खाने सोने चलने पढ़ने, में जो भी गुरू दोष लगे
क्षमादान दे प्रायश्चित दे, जिससे वे कर्म शीघ्र भगे
तुम जिन आगम में रत्नाकर, मैं अवगुण की खान रहा
तेरे चरण कमल में गुरूवर, अपना मस्तक झुका रहा

तीरथ कर कर धन्य भये
गया न मन का फेर
अब भी बदल ले दृष्टि अपनी
क्यों करता है देर

गुरू वंदना

गुरूदेव तुमको नमस्ते नमस्ते
नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते

गुरूदेव.....

है पुण्य हमारा जो तुम यहाँ पे आये,
ज्ञान की गंगा तुम साथ में लाये।
दिया तुमने वात्सल्य और प्रेम आकार,
हुआ आज धन्य तेरी भक्ति पाकर।।
काटो मेरे भी करम हसँते हसँते

गुरूदेव.....

जब से देखा है हमने ये पाया,
ज्ञान का सागर है तुम में समाया।
तुम तो हो मुनिवर गुरू हमारे,
शतशत हो वन्दन चरणों में तुम्हारे।।
करो पार हमको तुम हँसते हँसते

गुरूदेव.....

श्री अरूण सागर बसे उर में मेरे
करे दूर पल में जो जग के अंधेरे
लाखों को जिसने दिया है सहारा
ऐसे गुरूवर को नमन हो हमारा
करो कर्म शमन मेरे भी हसँते हसँते

गुरूदेव.....

गुरू भक्ति

गुरूवर श्री पुष्पदन्त सागर जी महाराज के चरणों में समर्पित

मुझे तुमने गुरूवर, बहुत कुछ दिया है
तेरा शुक्रिया है, तेरा शुक्रिया है
मुझे है सहारा, तेरे आशीषों का
ये भेष दिगम्बर, तेरी कोशिशों का
मिला मुझको जो कुछ, तुम्हीं से मिला
तेरा शुक्रिया.....

किया कुछ न मैने, शर्मसार हूँ मैं
तेरी रहमतो का कर्जदार हूँ मैं
दिया कुछ नहीं बस लिया ही लिया है
तेरा शुक्रिया.....

कृपा की ना होती, जो आदत तुम्हारी
तो कैसे सुधरती, ये हालत हमारी
उसे क्या कमी, जो तेरा हो लिया है
तेरा शुक्रिया.....

मेरा ही नही, तू सभी का है ज्ञाता
तू ही सबको देता, तू ही तो है दाता
तेरा ही दिया, मैंने जीवन जिया है
तेरा शुक्रिया.....

मुनि अरुण सागर

गुरू भक्ति

मुझे तुमने गुरूवर, बहुत कुछ दिया है
तेरा शुक्रिया है, तेरा शुक्रिया है
बचपन से देखा, था मैंनें ये सपना
बनूगां किसी का, कभी मैं भी अपना
चरणों ने तेरे, ये पूरा किया हैं।।
तेरा शुक्रिया.....

तूने बताई है, मुक्ति की युक्ति
सुबह शाम गुरूवर, करूँ तेरी भक्ति
तूने ही जीने के, काबिल किया हैं।।
तेरा शुक्रिया.....

जहाँ में नहीं हैं, कोई तुमसा दूजा
दिल में बसा कर, करूँ तेरी पूजा
गिरते हुये को सहारा दिया हैं।।
तेरा शुक्रिया.....

नयनों में हरदम, हैं तस्वीर तेरी
तूने बनाई हैं, तकदीर मेरी
कड़ी धूप में, जैसे साया किया हैं।।
तेरा शुक्रिया.....

अंधेरों में ज्ञान, के दीपक जलाये
राहो से तूने ही, काँटे हटाये
मेरी जिन्दगी में, उजाला किया हैं।।
तेरा शुक्रिया.....

मैं बन्दा हूँ गुरूवर, तेरी बन्दगी का
है तू ही खिवैया, मेरी जिन्दगी का
भँवर में फंसे को, किनारा दिया हैं।।
तेरा शुक्रिया.....

गुरू देव मेरे, करू क्या मैं अर्पण
ये जीवन ही मेरा, तुझको समर्पण
तूने ही बिन्दू को सिन्धु किया है।।
तेरा शुक्रिया.....

बुराई और दुश्मनी का रहे न नामो निशान
प्रेम दया करूणा को दे दो मम में है स्थान

वंदन सदगुरू चरणन

वंदन सदगुरू चरणन वंदन
हम करते हैं अभिनन्दन....तेरा.....
साक्षात हमने अरिहंत देखे, चलते फिरते महावीर देखे,
ज्ञान का मद नहीं ध्यानी हो, गुरूवर,
मुक्ति रमा के स्वामी हो गुरूवर,
धन्य हुये ये नैन हमारे, पाकर तुमरे पावन दर्शन..वंदन.
जीव दया गुरू में धारे,
समदृष्टि से सबको निहारें
ज्ञान की गंगा अविरल बहती,
तन मन जीवन ''निर्मल'' करती,
चातक बन के ज्ञान पिपासु, निशदिन करते सेवा अर्चन..वंदन.
सत्य को खोजें वो संत कहायें,
तिमिर हटादें वो गुरू कहलाये
सदगुरू जो सदमार्ग बतायें
सदमारग पर चलना सिखायें
शिवपुर के सब द्वार खुलाकर, अवचेतन को कर दें चेतन....
मम वंदन श्री सदगुरू चरणा,
मांगे बस इतनी सी करूणा
मैं भी तुम सम, भीतर झाकूं,
सद् चिद् आनंद को ही तलाशूं,
चेतन भोगी बन के गुरूवर,
माटी से हो जाऊँ मैं चंदन.....

ॐ गुरू ॐ गुरू

ॐ गुरू ॐ गुरू सच्चिदानंद गुरू
सच्चिदानंद गुरू, समदर्शी गुरू
ॐ गुरू.....
अरिहन्त श्री गुरू, सिद्ध परम गुरू
ॐ गुरू.....
नासा दृष्टि प्यारी तेरी, हम नाचे हम गाये गुरू
ॐ गुरू.....
इन आंखों में काजल बनकर, रहना मेरे सदगुरू
ॐ गुरू.....
आत्मा ही गुरू समदर्शी गुरू
ॐ गुरू.....
सत्य अहिंसा धारा बहती, तब चरणों में सदगुरू
ॐ गुरू.....
परमेष्टी के अंश तुम्ही हो, मन भावन हो सदगुरू
ॐ गुरू.....
सम्यक दर्शन लक्ष्य भजन का, प्रतिपल समता चाहे गुरू
ॐ गुरू.....

प्रार्थना

भोले भाले भगवान मेरे
मौन लिए क्यों बैठे हो?
हाथ जोड़कर नमन करें हम
क्या तुम हमसे रूठे हो।।

आंख खोलकर देखो भगवन
हम क्या तुम्हें चढ़ाते हैं।
एक बार तो बोलो भगवन
मन से तुम्हें बुलाते है

जिसने भी अरज करी
उनका दु:ख दर्द मिटाया है।
सन्मति सुखदाता हो जग में
जन–जन ने यश गाया है।

नहीं भूलाना भगवान हमको
वीतराग गुणगान गुनें।
विद्या यश सब होवें
और हम भी भगवान बनें।

चरणों में झुका है माथा

तर्ज :– बड़ी देर भई नन्दलाला

चरणों में झुका है माथा, गुरू दे दो ये चौमासा–टेक
बाल, वृद्ध हर युवा हृदय में, एक यही अभिलाषा
चरणों.....

भूल हुई है हमसे गुरूवर, कब हमने इन्कार किया
सोये थे हम हमें जगाया, गुरूवर अब क्यू विसार दिया
कोई नहीं है तुम बिन गुरूवर, हम सबका रखवाला रे
चरणों.....

आये है हम आशा लेकर, हमको न इन्कार करो
नारियल को रियल कर दो, चौमासा स्वीकार करो
तेरे नाम की बच्चा बच्चा, जपता है अब माला रे
चरणों.....

कही न कही तो चौमासे के लिये रूकेगे चरण गुरू
क्या हम इतने दुर्भागी है, तेरी दया न पाये गुरू
हृदय हमारा चीर के देखो, इसमें तुम्हारा वासा रे
चरणों.....

आये है मेरे गुरूवर

तर्ज :—आये हो मेरी जिन्दगी में तुम बहार बनके

आये है मेरे गुरूवर, अपना मुझे बनाने
अज्ञान का अन्धेरा मन से मेरे मिटाने
गुरू के मुखारविन्द से, सदा ज्ञान गंगा बहती—२
करो सबसे प्रेम प्यारे, वाणी इन्हीं की कहती
सत्संग रूपी अमृत, लाये हमें पिलाने
आये है मेरे.....

कल्याण हो जगत का, उपदेश ये ही देते
उद्धार हो जगत का, संदेश ये ही देते
मिलजुल सभी से रहना, आये हमें सिखाने
आये है मेरे.....

ये ब्रह्मा और विष्णु, गुरू का ही रूप समझे
दाता दयालु इनको, शिव का स्वरूप समझो
हम माता, पिता, भ्राता गुरूदेव को ही माने
आये है मेरे.....

अरूण सागर के दर्शन से

तर्ज :– जहाँ डाल डाल पर सोने की चिड़िया

श्री अरूण सागर जी के दर्शन से–टेक
मिटता भव भव का फेरा
है इनको वन्दन मेरा–२
यहाँ सत्य अहिंसा और धर्म का
हर पल लगता डेरा
है इनको.....

इनके चरणों में झुका हुआ है, ज्ञान पिपासु वाला
इनकी वाणी से आत्मकमल को, मिलता सच्चा उजाला–२
यहाँ मुक्ति मार्ग और ज्ञान लक्ष्मी का
निर्शादन सांझ सवेरा
है इनको.....

इनके यश गौरव की गाथा, नर नारी निर्शादन गाते
जो रोते रोते आते है, वे हँसते हँसते जाते–२
इनके दर्शन को पाकर के, अब जनम सफल हुआ मेरा
है इनको.....
श्री अरूण सागर.....

मंत्र जपो नवकार

मन्त्र जपो नवकार मनवा मंत्र जपो नवकार–टेक
पाँच पदों के पैंतीस अक्षर हैं सुख के आधार
मनवा.....

अरिहन्तों का सुमिरन कर लें, सिद्ध प्रभु का नाम तू जप ले
आचार्य सुखाकार मनवा मन्त्र जपो नवकार
मन्त्र.....

उपाध्याय को मन में ध्याले, सर्वसाधु को शीश नवाले
होवे भव से पार मनवा मन्त्र जपो नवकार
मन्त्र.....

धनहीन सुख सम्पत्ति पावे, मनवांछित हर काम बनावें
सुखी रहे परिवार मनवा मन्त्र जपो नवकार
मन्त्र.....

रोग शोक को दूर भगावे, जन्मजरा मृत दोष मिटावे
भव दु:ख भंजनहार मनवा मन्त्र जपो नवकार
मन्त्र.....

सुनियों श्रावकों रे मुनिराज

सुनियो श्रावकों रे मुनिजन केश लोंच क्यों करते–टेक
देखो तो निज कर से कैसे मुनिजन बाल उखाड़े–२
जैसे कृषक धान के पौधे जड़ से खींच निकाले
सुनियो.....

स्वर्ण कसौटी पर कसकर ही जैसे परखा जाता–२
कितना मोह घटा काया से केंश लोंच बतलाता
सुनियो.....

जीवन भर ये एक बार ही दिन में ले आहारा–२
केशलोंच दिन व्रत रखते है निर्जल और निरहारा
सुनियो.....

जिन आगम में जैन साधु के गुण अटठाईस बताये–२
उनमें से ही एक मूल गुण केंश लोंच कहलाये
सुनियो.....

जिन आगम में जैन साधु को गुरूवर देते दीक्षा–२
केशलोंच करके वे उनकी लेते प्रथम परीक्षा
सुनियो.....

जय बोलो जय बोलो

तर्ज :– सायोनारा

जय बोलो जय बोलो, जिव्हा में अमृत घोलो–टेक
शान्त दिगम्बर अरूण सागर की सब मिल करके जय बोलो
जय बोलो.....
शान्त तपस्वी देखो यहाँ, ध्यान में अपने लगा हुआ
तुम तन मन से मैल हटा के, हृदय नयन के पट खोलो
जय बोलो.....
इनके खेल निराले हैं, सब सुख देने वाले हैं
कर्म सभी कट जायेंगे, इनकी भक्ति में डोलो
जय बोलो.....
अतिशय का भंडार है ये, सर्वगुणों की खान है ये
श्रद्धा भक्ति भाव सहित, शत–शत अभिनन्दन कर लो
जय बोलो.....

नदी नही है जिस बस्ती में, सागर उसमें आते है
आसमान के शीतल चंदा, धरती पर आ जाते है
उस सागर से गागर भर लो, चंदा की लो शीतलता
ऐसे गुरूवर के चरणो में, वंधु मेरे तू झुकता जा

मान गुरू का कहना

मान गुरू का कहना, नहीं तो पछतायेगा
माटी का पुतला माटी में मिल जायेगा
शाले दुशाले को क्या तू ओढे
मखमल के गद्दो पर नित तू सोये
दो गज कफन में तू बंधा चला जायेगा
माटी.....मान.....

महल अटारी हजार बनवाये
खिड़की झरोखे चन्दन के लगवाये
दो मन की लकड़ी में
तू जला चला जायेगा
माटी.....मान.....

बाग बगीचे हजार बनवाये
फूल और क्यारी अपने हाथो से सजाये
पिजड़े का पंछी तू उड़ा चला जायेगा
माटी.....मान.....

काया और माया में क्या इतराये
आखिर में तेरे ये संग में न जाये
धर्म करेगा तो तू सुख पायेगा
माटी.....मान.....

दुख तो मानव की सम्पत्ति

दुख तो मानव की सम्पत्ति है, तू क्यों दुख से घबराता है
दुख आया है तो जायेगा, सुख आया है तो जायेगा
दुख जायेगा तो सुख देकर, सुख जायेगा तो दुख देकर
सुख देकर जाने वाले से रे, मानव क्यो भय खाता है
सुख में है व्यसन प्रमाद भरे, दुख में पुरूषार्थ चमकता है
दुख की ज्वाला में पड़कर ही, कुन्दन सा तेज चमकता है

सुख संध्या का वह लाल क्षितिज
जिसके पश्चात् अंधेरा है
दुख प्रातः का झुटपुटा समय
जिसके पश्चात् सवेरा है
दुख का अभियासी मानव ही
सुख पर अधिकार जमाता है
दुख तो मानव...

दुख के सम्मुख जो सिहर उठे
उनको इतिहास न जान सका
जो दुख में कर्मठ धीर रहे,
उनको ही जग पहचान सका
दुख एक कसौटी है जिस पर
ये मानव परखा जाता है
दुख तो मानव.....

ये पंच परम गुरू प्यारे

तर्ज :– बच्चे मन के सच्चे

सच्चे सबसे सच्चे, ये पंच परम गुरू प्यारे
ये वो कल्पतरू है जो कि पाप समूह को विदारे
सच्चे.....

अरिहंत देव में मंगल है मेटे सकल अमंगल है,
घात करम चतु नाश करे, लोकालोक प्रकाश करे
छियालिस गुणों से शोभित होकर, समवशरण में राजे
सच्चे.....

सिद्ध देव विख्याता है मुक्ति के भी दाता है
अष्ट कर्म का नाश किया, अनन्त गुणों को धार लिया
तीन लोक के ईश्वर जिनको, अपने ध्यान में धारे
सच्चे.....

आचार्य देव के गुण गाये, भविजन उनसे बन जाये
जिनपर का कल्याण करे, रत्नत्रय युत ध्यान करे
छत्तिस गुणों को धारण करके, संघपती कहलाये
सच्चे.....

उपाध्याय की जय बोलो, उनकी महिमा को तोलो
ज्ञान गुणो के धारक है, भविजन बोध सुखाकर है
पच्चीस गुणो को धारण करके, मुनिजन बोध कराये
सच्चे.....

साधु जी लोकोत्तम है, सबसे बड़े गुणोत्तम है
बाइस परीषह सहते है, भय से निर्भय रहते है
अट्ठाइस गुण रत्नों से भूषित, भेष दिगम्बर धारे
सच्चे.....

णमोकार मय मेरा

णमोकार मय मेरा जीवन बना दो
चरणों की रज से मेरा मस्तक सजा दो
णमोकार मय.....
मैं हूँ फूल छोटे तुम्हारे चमन का
कहीं ले न जाय इसे झोका पवन का
अरिहंत निज गांव मुझको बुलालो
चरणों की छाया में मुझको बिठा दो
णमोकार मय.....
रहे देह में पर विदेह बने हो
बन्धन में रहकर के बंध न सके हो
में बन्धता झूठे जग के बन्धनों से
मेरा आप परिचय स्वयं से करा दो
णमोकार मम मेरा जीवन बना दो
णमोकार मय.....

जिस दिन प्रभु जी

जिस दिन प्रभुजी, तेरा दर्शन होगा
उस दिन सफल, मेरा जीवन होगा
उस दिन.....
मैं तो तेरे नाम की दीवानी बन जाऊँगी
तेरी सच्ची भक्ति की परवानी बन जाऊँगी
इन अंखियों से तेरा दर्शन होगा
उस दिन.....
तेरे मेरे बीच की दीवारें हट जायेंगी
और ये जुदाई की जंजीरे कट जायेंगी
तेरे चरणों में मेरा मस्तक होगा
उस दिन.....

खेल खेल में जब खिलौना टूट जाता है
बालक रो देता है, पर ज्ञानी मुस्कराता है
आत्मा के जौहरी को इसका कुछ दर्द नही
कौन जन्म लेता है कौन मृत्यु पाता है

प्रभु मैं तो थक गई हूँ

तर्ज :– यू ही कोई मिल गया था

प्रभु मैं तो थक गई हूँ, तेरी राह तकते–तकते–२
ये मन है मेरा मन्दिर, तुम इसके देवता हो–२
अब देर क्यो लगाई, मेरे मन ने आते आते
प्रभु.....

माना कि जग में तुमने, सब पापियों को तारा–२
क्यों आज रूक गये हो, उद्धार करते–२
प्रभु.....

जो बात मेरी प्रभु जी, गर आप ना सुनोगे–२
रटती रहूँगी हरदम, तेरा नाम मरते मरते
प्रभु.....

जीत सके तो क्रोध जीतले कर दे मान का तू खण्डन
माया ठगनी न ले कही लोभ करे स्व का खण्डन
गुरूवाणी को हृदय धर ले निर्मल कर ले अपना मन
निर्मल मन में वास करे यह चिदानंद आतम चेतन

दर्शन करके महावीरा

दर्शन करके महावीरा चले जायेंगे
जब बुलाओगे जब ही चले आयेंगे
दर्शन.....

तेरे दर्शन की जब मैने इन्तजारी करी
हुआ दीदार तेरा मेरी शुभ घडी
याद सारी उमरिया किये जायेंगे
जब.....

यह न पूछो यहाँ से किधर जायेंगे
तू जिधर भेज देगा उधर जायेंगे
हम भी माला तुम्हारी रटे जायेंगे
जब.....

जिसके हृदय में वीरा तेरा ध्यान है
वो ही ज्ञानी गुणी वीर इन्सान है
ध्यान महावीर जी का धरे जायेंगे
जब.....

टूट जाये न माला तेरे प्रेम की
ये रतन है कि मोती बिखर जायेंगे
आप मानों या ना मानों है खुशी आपकी
हम मुसाफिर हैं कल घर चले जायेंगे
दर्शन.....

मम्मी मेरी मुझे मंगा दो

तर्ज :– मम्मी मै तो सिखूगा

मम्मी मेरी मुझे मंगा दो सफेद साड़ी खादी की
जिसे पहनकर बन जाऊँगी मैं छोटी सी एक माता जी
मम्मी.....

एक हाथ में पिच्छी लूंगी, और कमण्डल धारूँगी
चार हाथ की भूमि देखकर, धीरे–२ चालूँगीं
मम्मी.....

एक बार भोजन को निकलूँ, बरतन हाथ बनाऊँगीं
तीन बार सामायिक करके, नाशा दृष्टि लगाउँगीं
मम्मी.....

घर–घर गाफिल सैर करूँगी, आतम ध्यान लगाँऊगीं
मनोभावना पूरी होगी, महामोक्ष फल पाऊँगी
मम्मी.....

संसार में पतित था गुरू ने उठाया
अज्ञान का तिमिर था गुरू ने मिटाया
आचार्य वर तरण तारण ज्ञान धारी
श्री पुष्पदंत गुरूवर जय हो तुम्हारी

आकाश गंगा में जब तक

तर्ज :— गंगा मैया में जब तक के पानी रहे

आकाश गंगा में जब तक सितारे रहे
मेरे गुरूवर तेरी जिन्दगानी रहे
गुरूवर मेरे गुरूवर, गुरूवर ओ अरूण सागर
दीन दुखियों के तुम हो सहारे, विश्व बगिया के तुम रखवाले
कहते सत्य वचन, व्यर्थ हो न जीवन,
हर जन्म तुमको गुरूवर हम पाते रहे—२

गुरूवर.....

आकाश गंगा.....

इनको नटवर कहो या ईश्वर, इनको गुरूवर कहो या रघुवर
आत्मज्ञानी यही, अर्न्तयामी यही, सभी रूपों में गुरूवर आते रहे

गुरूवर.....

आकाश गंगा.....

ज्ञान अपने गुरू से जो पाया
उसको जन—जन में तुमने फैलाया
पूजा मन से करे, सेवा तन से करे
अपना जीवन तेजस्वी बनाते रहे

गुरूवर.....

आकाश गंगा.....

अपने ही रंग में मोहे

अपने ही रंग में मोहे रंग दो गुरूवर
आतम का रंग मोहे रंग दो गुरूवर
रंग दो रंग दो रंग दो गुरूवर
ज्ञान में मोह की धूल लगी है
धूल लगी है गुरूवर धूल लगी है
इससे मुझको छुड़ा दो गुरूवर
अपने ही.....आतम.....

सच्ची श्रद्धा रंग अनुपम
रंग अनुपम, गुरूवर रंग अनुपम
इससे मुझको सजा दो मेरे गुरूवर
अपने ही.....आतम.....

रत्नत्रय रंग तुमरा सरीखा,
तुमरा सरीखा गुरूवर तुमरा सरीखा
इससे मुझको सजा दो गुरूवर
अपने ही.....आतम.....

हम सब चरण पडे गुरूवर के
हम तो चरण शरण आतम की
जन्म मरण दुख मेरा मिटा दो...
अपने ही.....आतम.....

देना हो तो दीजिए

तर्ज :– जन्म जन्म का साथ है निभाने को

देना हो तो दीजिये, जन्म–जन्म का साथ
मेरे सिर पर रख दो गुरूवर, अपने दोनो हाथ
इस जन्म में सेवा देकर, बहुत बड़ा एहसान किया
बड़े दयालु तुम हो गुरूवर, मैने तुम्हें पहचान लिया
साथ रहे हम जन्मो तक, बस रख लो इतनी बात
देना.....मेरे.....

मेरे जैसे दीन दुखी का, कोई नहीं है रखवाला
झूठी तसल्ली भी मेरे गुरूवर, कोई नही देने वाला
मुझको कुछ ना सूझे गुरूवर, छाई गम की रात
देना.....मेरे.....

बड़े ही निर्बल हाथ है मेरे, चारो और अन्धेरा है
थामें रखना मुझको गुरूवर, बस एक सहारा तेरा है
बस इतना करना गुरूवर कि जाये ना मेरी लाज
देना.....मेरे.....

तुमने तारे लाखों प्राणी, एक मुझे भी तार दो
इस दुनिया से दुखी हुआ मै, अब मेरी भी सार लो
बस इतनी सी विनय है तुमसे, अब रखलो मेरी लाज
देना.....मेरे.....

अजब निराले, अजब निराले

अजब निराले, अजब निराले, अजब निराले री
गुरूवर मेरे अजब निराले री
गुरूवर मेरे.....

जिनवाणी का ज्ञान सिखाते, मोक्ष मार्ग हमको बतलाते
अमृत प्याले, अमृत प्याले, हो अमृत प्याले री
गुरूवर मेरे.....

पापकर्म को मार भगाये, सदमार्ग हमको दिखलाए
पुण्य कमाले, पुण्य कमाले, पुण्य कमाले री
गुरूवर मेरे.....

प्रेम की ये तो मूरत भारी, कर्मो की लंका भी जारी
इन्हें मना ले, इन्हे मनाले, इन्हें मनाले री
गुरूवर मेरे.....

क्या खोया क्या पाया रे मन कुछ तो विश्लेषण कर ले
पक पक अंजुली समय आयु क्षीण है मन में कुछ चिन्तन कर लें
नही रहा यहाँ कोई शाश्वत धन सम्पद कोठी बगले
हंस अकेला उड जायेगा—सब रह जाये हाथ मले

गुरू बिना सूनो लगे संसार

गुरू बिना सूनो लगे संसार, मुझे रखियो चरणो के पास
गुरू ही तन में, गुरू ही मन में, गुरू हमारे नयनन में
पा । गुरू के चरणन शीश नवाऊँ, नमन करू हर बार
गुरू बिना सूनो.....
जिस जीवन में गुरू नही है, उसका जीवन शुरू नहीं है।
गुरू ही जग में ज्ञान सिखाते इनकी महिमा अपरम्पार
गुरू बिना सूनो.....
जबसे मैने दर्शन पाये, ज्ञान दीप गुरूवर ने जलाये
गर गुरूवर का आशीश हो शीश पर, हो जाये भव से पार
गुरू बिना सूनो.....

मृत्यु ने कहा मैं शाश्वत हूँ
जीवन ने कहा मैं शाश्वत हूँ
उनकी बात पर मनुष्य हंस पडा और बोला
अरे झगडते क्यों हो भाई
तुम एक ही सिक्के के दो पहलू हो।

अरूण सागर मिले हम को ऐसे

तर्ज :– हम तुम्हें चाहते है ऐसे

टेक : अरूण सागर मिले हमको ऐसे।

चंदना को कभी महावीर मिले थे जैसे–२।
अरूण सागर जी प्यार तुम्हारा–२।
हर पल हमें–२ देता रहता नशा ये न्यारा।
अरूण सागर.....।

तेरे चरणों का मालिक (अरूण) सहारा–२
देश झूठा लगे–२ तू ही लगे गुरूवर जी प्यारा।
अरूण सागर.....।

सदा प्यार तेरा ही मांगे–२।
और कुछ ना चाहें–२, प्रेम तेरे में तन–मन–वारें।
अरूण सागर.....।

शमां परवाना चाँद चकोर–२।
ऐसा प्यार पाके–२, रूह नाचे जैसे वर्षा में मोर।
अरूण सागर.....।

तेरी याद बिन पल जो भी जाये–२।
ऐसा पल गुरूवर जी–२, सारी जिन्दगी में कभी ना आए।
अरूण सागर.....।

गुरूवर तेरी सूरत से अलग

तर्ज :– ऐ माँ तेरी सूरत से अलग

जिसको नहीं देखा हमने कभी, फिर उसकी जरूरत क्या होगी।
गुरूवर– तेरी सूरत से अलग, भगवान की सूरत क्या होगी, क्या होगी?।
सुख सागर द्वार तुम्हारे, खुशियों के भरे भण्डारे।
है ज्ञान की चाबी हाथ में, कैसे इन्कार करे।
भरते हैं झोली सबकी गुरू ओ–ओ।
भरते हैं झोली सबकी गुरू, फिर उसकी जरूरत क्या होगी।
गुरूवर तेरी.....।।
जब माली आप बने हो, गुलशन कैसे उजड़े।
जो नैया डूब रही हो, गुरूवर उसे पार करें।
जब थाम लिया गुरू का दामन ओ–ओ।
जब थाम लिया गुरू का दामन फिर उसकी जरूरत क्या होगी।
गुरूवर तेरी.....।।
तुम बिन कब ज्ञान मिलेगा, हम मूर्ख और नादानों को।
गुरूवर अब राह दिखाओं हम भटके हुऐ इन्सानों को।
सब मिल आए हैं गुरू की शरण ओ–ओ।
सब मिल आये हैं गुरूकी शरण, फिर उसकी जरूरत क्या होगी।
जब थाम लिया गुरू का दामन फिर उसकी जरूरत क्या होगी।
गुरूवर तेरी.....।।

मुनिराजो का रूप बनाया

तर्ज :– मनिहारी का भेष बनाया

मुनिराजों का रूप बनाया, वीरा ज्ञान बाँटने आया।।टेक।।
भक्त आने लगे भीड़ बढ़ने लगी–२।
इनके चरणों में शीश झुकाया।
वीरा ज्ञान बाँटने आया.....।।१।।
गुरूवर देने लगे भक्त लेने लगे–२।
ऐ जी ज्ञान का कोष लुटाया।
वीरा ज्ञान बाँटने आया.....।।२।।
मैं तो गाने लगा, गुरूवर सुनने लगे–२।
भक्तों का मन हरषाया।
वीरा ज्ञान बाँटने आया.....।।३।।
शीश चरणन धरूं, गुरूवर विनती करूँ–२।
मुझे छोड़ कही मत जाना
वीरा ज्ञान बाँटने आया.....।।४।।

प्रभु मेरी आँखों में वही तस्वीर हो जावे
नजर जिस चीज पर डालू तेरी तस्वीर हो जावे

पीछी रे पीछी इतना

तर्ज – माहे नी माहे

टेक :– पीछी रे पीछी इतना बता तूने कौन सा काम किया है।
गुरूवर ने खुश होकर के, हाथों में थाम लिया है।
तेरी किस्मत सबसे अच्छी, गुरूवर ने अपनाया।
गुरूवर तुझसे प्यार करें क्यों, कोई जान न पाया।
गुरूवर की कृपा होने से–२, जग में नाम किया है।
गुरूवर ने खुश.....।।

मोर पंख से बनी है पीछी, सुन्दरता दर्शाती।
अपने कोमल पंखों से जीवों के प्राण बचाती।
पीछी और कमण्डल–२ का कैसा संजोग मिला है।
गुरूवर ने खुश.....।।

जैसे अपनाया पीछी को, मुझको भी अपना लो।
मुझको अपनी पीछी समझकर, अपने गले लगालो।
गुरूवर का है साथ अनूठा–२, पीछी से जान लिया है।
गुरूवर ने खुश.....।।

नाच रहा है अपने बल पर देखो ये संसार
अपने भावों पर निर्भर है जग पतन ओर उद्धारं

मेरा कोई न सहारा बिन तेरे

मेरा कोई न सहारा बिन तेरे
गुरू देव सांवरिया मेरे
तुम बिन गुरू मेरा कौन यहाँ
गुरू तुम्हें छोड़ मैं जाँऊ कहाँ
मैं आन पड़ा हूँ दर तेरे (गुरूदेव)
मैने जन्म लिया जग में आया
तेरी कृपा से ये नर तन पाया
तूने किये उपकार घनेरे (गुरूदेव)
मेरे नैना कब से तरस रहे
सावन भादो से बरस रहे
अब छाये घोर अन्धेरे (गुरूदेव)
गुरू आ जाओ गुरू आ जाओ
अब और न मुझको तरसाओ
काटो जन्म–जन्म के फेरे (गुरूदेव)
जिस दिन से दुनिया में आया
मैने पल भर चैन नहीं पाया
सहे मैने बहु कष्ट घनेरे (गुरूदेव)
मेरा सच्चा मारग छूट गया
मुझे पाँच लुटेरों ने लूट लिया
मैने जतन किये बहुतेरे (गुरूदेव)
मेरे सारे सहारे टूट गये
तुम भी गुरू मुझसे रूठ गये
आओ करने दूर अन्धेरे (गुरूदेव)

गुरूदेव मेरे तुमको

गुरूदेव मेरे तुमको, भक्तो ने पुकारा है।
आओ अब आ जाओ, एक तेरा सहारा है।।
है चारो तरफ फैला, मेरे घोर अंधेरा है।
अब जायें कहाँ बोलो, तूफानों ने घेरा है।।
हे नाथ अनाथों को, तेरा ही सहारा है। ...गुरूदेव
मझधार पड़ी नैया, डगमग डोला खाए।
मिल जाओ हमें आकर, हम भव से तर जाए।।
बिन तेरे नहीं मेरा, इस जग में गुजारा है...आओऽऽ
तेरे इन चरणों की, धूली ही जो मिल जाए।
भटके हुए राही को, निज मंजिल मिल जाए।।
किस्मत भी चमक जाए, तो चमके सितारा है...आओऽऽ
सेवा गुरू चरणन की, मुक्ति अब तरणन की।
महिमा गुरू वरणन की, ज्ञाता शुभ कर्मन की।
है ज्ञान सभी वन की, बहती इक धारा है...आओऽऽ
भ्रम सम गुरू शक्ति दो, कोई पार नहीं पाए।
दो दर्शन अब गुरूवर चरणों में लिपट जाएं।।
ये भक्त सदा करता, गुणगान तुम्हारा है...आओऽऽ

हे शारदे माँ, हे शारदे माँ,

हे शारदे माँ, हे शारदे माँ।
अज्ञानता से हमें तार देना–२ ।टेक।।
मुनियों ने समझी गुणियों ने जानी,
शास्त्रों की भाषा, आगम की वाणी।
हम भी तो जाने, हम भी तो समझें।
विद्या का फल तो हमें माँ तू देना।।१।। हे शारदे...
तू ज्ञानदायी, हमें ज्ञान दे दे,
रत्नत्रयों का, हमें दान दे दो।
मन से हमारे, मिटा दे अन्धेरे,
हमको उजालों का शिवद्वार देना।२।। हे शारदे....
तू मोक्षदायी ये संगीत तुझपे
हर शब्द तेरा है, हर भाव तुझमें,–२
हम हैं अकेले, हम है अधूरे–२
तेरी शरण माँ, हमें तार देना।।३।। हे शारदे....

प्राणीमात्र पर दया भाव और क्षमा भाव निर्विकार रहे
प्रेम सौहार्द करूणामय छवि का जन मन में संचार रहें

जल जावे जिह्वा पापिनी

जल जावे जिह्वा पापिनी, प्रभु नाम के बिना।
प्रभु नाम के बिना, वर्द्धमान के बिना...२।टेक।।
छतरी यान बिना, विपुल ज्ञान बिना, घर सन्तान बिना...२
देह प्राण बिना, हाथ दान बिना, भोजन पान बिना...२
हो मयूर बेकार नाचना है घनश्याम बिना।।
जल जावे जिह्वा.....।।१।।
पक्षी पंख बिना, बिच्छू डंक बिना, आरती शंख बिना..२
कमल पंख बिना, गणित अंक बिना, निशा मयंक बिना..२
भजन बिना नर ऐसे जीवे, जैसे अश्व लगाम बिना।।
जल जावे जिह्वा.....।।२।।
नैन दर्श बिना, शीश नमन बिना, नारी सुहाग बिना..२
पुष्प बाग बिना, संत त्याग बिना, आदि अन्त बिना..२
व्यर्थ गंवाया कितना जीवन अच्छे काम बिना।।
जल जावे जिह्वा.....।।३।।

मौन रहने से मिलती है शिक्षा
असत्य से होती है रक्षा
कटु वाणी सुनने से बचता
विवाद किसी सक न होता

काहे उढा दई चदरिया

काहे उढा दई चदरिया, अब चलती बिरियाँ..२।टेक।
नैन कहे तुम दर्शन कर लो,
कान कहे सुन लो शास्त्र, अब चलती बिरियाँ।।१।।
पावं कहे तुम तीरथ कर लो,
हाथ कहे कर लो दान, अब चलती बिरियाँ।।२।।
मन कहे तुम उपवास कर लो,
इन्द्रिय कहे लो आहार, अब चलती बिरियाँ।।३।।
आतम राम जब निकसन लागे,
चढ गई आँख पुतलिया, अब चलती बिरियाँ।।४।।
भीतर से जब बाहर लाये,
तज दई महल अटरिया, अब चलती बिरियाँ।।५।।
चार जने जब लेकर चाले,
पहुँचे है मरघट नगरिया, अब चलती बिरियाँ।।६।।
लकड़ी की जब चिता बनाई,
उड़ गई सोन चिरैया, अब चलती बिरियाँ।।७।।
केश जले जैसे घास का पूरा
हाड जले ज्यों लकड़ियाँ, अब चलती बिरियाँ।।८।।

जो बीत गये फिर वो जमाने

जो बीत गये फिर वो, जमाने नहीं आते..२
आते है नये लोग, पुराने नहीं आते जो बीत गये।
लकड़ी के मकानों में, चिरागों को न रखिये..२
पड़ोसी भी यहाँ आग बुझाने नहीं आते..२
जो बीत गये.. ।।१।।
इस पेड़ की हर साख तो सूखी ही पड़ी है..२
पंछी भी यहाँ रात बिताने नहीं आते..२
जो बीत गये...।।२।।
मैं आज के इस दौर का वीराना खण्डहर हूँ..२
बच्चे भी यहाँ शोर मचाने नहीं आते..२
जो बीत गये...।।३।।
प्रभु ध्यान में लग जा यह पुष्प की प्रार्थना..२
तप करके मोक्ष जाने वाले फिर नहीं आते..२
जो बीत गये...।।४।।

नमस्कार महामंत्र मूर्ति यह
मंत्रो का प्राण कहलाता
भक्ति श्रद्धा से जो भी ध्याता
मन वांछित फल पाता

मैली चादर ओढ के

मैली चादर ओढ के कैसे, द्वार तिहारे आऊँ।
हे पावन परमेश्वर मेरे, मन ही मन शर्माऊँ।टेक।।
तूने मुझको जग में भेजा, देकर निर्मल काया।
आकर के संसार में मैने, इसको दाग लगाया।।
जनम जनम की मैली चादर, कैसे दाग छुड़ाऊँ।।१।।
मैली चादर ओढ के.....।।
निर्मल वाणी पाकर तुमसे, नाम न तेरा गाया।
नैन मूँदकर हे परमेश्वर, कभी न तुमको ध्याया।।
मन वीणा की तारे टूटी, अब क्या गीत सुनाऊँ।।२।।
मैली चादर ओढ के.....।।
इन पैरों से चलकर तेरे, मन्दिर कभी न आया।
जहाँ जहाँ हो पूजा तेरी, कभी न शीश झुकाया।।
हे जिनवर मैं हार के आया, अब क्या हार चढ़ाऊँ।।३।।
मैली चादर ओढ के...।।

गुरू दर पर तेरे आने वाला
झोली अपनी भर लेता है
अब तेरे दर से मै क्या मांगू
बिन मांगे तू सब कुछ दे देता है

णमोकार महामन्त्र वन्दन

अरूण सागर जी से पूछे ये जग सारा।
णमोकार नाम का ये कौन मन्त्र प्यारा।।टेक।।
बोले मुस्काते मुनिवर सुनो भाई सारे...२
अनन्तानन्त हैं ये पंचरंग प्यारे
पैंतिस अक्षर से शोभित ऽऽऽ मन्त्र है निराला।
इसीलिये प्यारा ।।१।। अरूण सागर....।।
महामन्त्र कहती इसको है सारी जनता...२
पार लगादे उसको जो इसे जपता
मन्त्र है ये ऐसा जिसने ऽऽऽ अंजन को भी तारा।
इसीलिये प्यारा ।।२।। अरूण सागर....।।
पंच परमेष्ठी के गुणों को प्रचारता...२
धर्मविशेष को ये नहीं है दुलारता
ये महामन्त्र है ऽऽऽ तारण हारा।
इसीलिये प्यारा ।।३।। अरूण सागर....।।
मनोरमा सती का शील था बचाया...२
महामन्त्र का ये वर्णन ग्रन्थों ने गाया।
ऐसे महामन्त्र को ऽऽऽ वन्दन हमारा।
इसीलिये प्यारा ।।४।। अरूण सागर....।।

जिनवाणी स्तुति

मात जिनवाणी हमारी दूर मत करना शरण से ।
दे सहारा मात मेरी मै लगा तेरे चरण से ।।टेक ।।
मात जिनवाणी...।।

पतित जीवन पुण्य होगा, चरण रज से धन्य होगा।
मैंचरण तेरे पखारूँ, भक्ति के गीले नयन से।।१।।
मात जिनवाणी...।।

सप्त भंगी गीत तुझमें, स्याद्वादी रीत तुझ में।
मैं बनूँ संगीत तेरा, छूट जाऊँ भव भ्रमण से।।२।।
मात जिनवाणी...।।

तेरे ही आँचल तले माँ, गर मेरा जीवन पले माँ।
है अटल विश्वास मेरा, जीत जाऊँगा मरण से।।३।।
मात जिनवाणी...।।

ज्ञान का वरदान दे माँ, त्याग का सम्मान दे माँ।
बोधि समाधि मिले मुझको, माँ तेरे ही अनुशरण से।।४।।
मात जिनवाणी...।।

वो दिन गुरूवर जी

तर्ज :– झिलमिल सितारों का.....

वो दिन गुरू जी कितना पावन–टेक
वो दिन गुरू जी कितना पावन होगा।
जिस दिन तुम्हारा दर्शन होगा।
पूरी होगी सब अभिलाषा खुश मेरा मन होगा।
वो दिन गुरूवर जी कितना पावन होगा।।टेक।।
फिर तो झूम–झूम कर, हम गीत खुशी के गायेंगे...२
जय जय कर श्री वीर प्रभु की, आनन्दमय हो जायेंगे।।
धूमधाम से गायन होगा। जिस दिन तुम्हारा....।।१।।
इन्द्र देव तो नहीं है हम, पर इन्द्र समान भाव भाकर...२
ऐरावत पर ले आयेंगे, वीर प्रभु को हम जाकर।।
पाँडुक शिला पर नहवन होगा। जिस दिन तुम्हारा....।।२।।
चाँद से मुखड़े को लख लख कर, मात–पिता हर्षायेंगे..२
सखी सहेली मिल त्रिशला संग, पालना झुलायेंगे।।
स्वर्ग से सुन्दर वो घर होगा। जिस दिन तुम्हारा....।।३।।

पारस प्रभु का दर्शन होगा

पारस प्रभु का दर्शन होगा, चरणों में उनके तन–मन होगा।
ऐसा सुन्दर, उज्जवल, अपना जीवन होगा।टेक।।

पारस...।१।।

पारस प्रभु को भजूँ साँझ और सबेरे।
मोह तृष्णा को तजूँ तब ही कुछ बने रे।।
दश विधि, धर्म का पालन होगा।
चरणों में उनके तन–मन होगा।।

पारस...।।२।।

फिर तो दुनिया के सब ही झमेले छूट जायेंगे।
कर्मों के बन्धन भी, अवश्य छूट जायेंगे।।
केवल ज्ञान का दर्शन होगा।
चरणों में उनके तन–मन होगा।।

पारस...।।३।।

जो रत्नत्रय से शोभित हैं

जो रत्नत्रय से शोभित हैं, उन गुरू को नमन हमारा है।
उनका वन्दन उनकी भक्ति, उनकी सेवा सुखकारी है।टेक।।
है महा दिगम्बर नगन वेष, परिग्रह का जिनको नहीं लेश।
संयम को पाले सकल देश, अघनाशक शिव अधिकारी हैं।
जो रत्नत्रय से.....।१।।
द्वादश तप तपते निवांछित, कर्मों को करते हैं परिजित।
परिषह सहते समचित रहते, उत्तम क्षमा जिन उरधारी हैं।।
जो रत्नत्रय से.....।।२।।
तत्त्वों का चिन्तन करते हैं, रागादिक मर्दन करते हैं।
जिन देवों को वन्दन करते हैं, मिथ्यात्व सभी पराहारी हैं।
जो रत्नत्रय से.....।।३।।
अठबीस मूलगुण जो पालें, वो धर्म ध्वजा के रखवाले।
सत्पथ प्रदर्शित करते हैं, सम्यक् ज्ञानी उपकारी हैं।
जो रत्नत्रय से.....।।४।।

रोम रोम से निकले

रोम रोम से निकले, प्रभु जी नाम ये तुम्हारा...२
ऐसा दो वरदान कि फिर, ना पाऊँ जनम दुबारा।टेक।।
छोड़ न पाऊँ प्रभु जी, पाँच ठगों का डेरा।
किस विधि पाऊँ आखिर, प्रभु जी दर्शन तेरा।।
भटक न जाये ये बालक प्रभुजी, देना आन सहारा।
रोम रोम से निकले...।१।।
दिल से निशदिन प्रभु जी, ज्योति जलाऊँ तेरी।
कब तक मन की होगी, पूरी आशा मेरी।।
इन नैनों से, तेरी ज्योति का देखूँ अजब नजारा।
रोम रोम से निकले...।।२।।
कोई न खाली जाए, तेरे दर से प्रभु जी।
अपनी दया का हाथ तू, सर पर रख दे प्रभुजी।।
तेरे दर पर आये हैं, पाने दीदार तुम्हारा।
रोम रोम से निकले...।।३।।
मन मन्दिर में आके ज्ञान का दीप जलाओ
रोग शोक भय बाधा पल भर में ही भगाओ
भक्ति में शक्ति है ऐसी तिर जाए जग सारा
रोम रोम से निकले...।।४।।

मात पिता तुम मेरे सच्चे मित्र हमारे
सारी दुनिया छोड़ी आए तेरे द्वारे
अजन जैसा पापी तारा हमको मिले सहारा
रोम रोम से निकले...।।३।।
बन के दिगम्बर साधु आतम ध्यान लगाऊं
ऐसी शक्ति दे दो तुम जैसा बन जाऊं
जन्म जन्म तक न भूलेंगे ये उपकार तुम्हारा
रोम रोम से निकले...।।३।।

गुरू तू न मिला-२

गुरू तू न मिला–२, सारी दुनिया मिले भी तो क्या है।
मेरा मन खिला–२, सारी बगिया खिले भी तो क्या है।।
मैं धूल हूँ और तुम हो गगन, कैसे हुए तेरे पावन चरण।
लाख बंधन यहाँ–३, मन मैं भक्ति पले तो क्या है।।
गुरू तू न मिला.....
तकदीर की मै कोई भूल हूँ, डाली से बिछड़ा हुआ फूल हूँ।
तेरा साथी नहीं–३, नहीं संग दुनिया चले भी तो क्या है।।
गुरू तू न मिला.....
चरणों में आके जो रो लेते हम, आँसू नहीं है वो मोती से कम।
तेरे चरण नहीं–३, मेरे आसूँ गिरे भी तो क्या हैं।।
गुरू तू न मिला, सारी दुनिया मिले भी तो क्या है।
मेरा मन खिला.....

पधारो महावीर भगवान

मोरे मन मन्दिर में आन, पधारो महावीर भगवान।टेक।।
भगवन तुम आनन्द सरोवर, रूप तुम्हारा महा मनोहर..२
निश दिन रहे तुम्हारा ध्यान, पधारो महावीर भगवान्।।
मोरे मन मन्दिर में....।।१।।
सुर किन्नर गणधर गुण गाते, योगी तेरा ध्यान लगाते...२
गाते सब तेरा यशगान, पधारो महावीर भगवान्।।
मोरे मन मन्दिर में....।।२।।
जो तेरी शरणागत आया, तूने उसको पार लगाया..२
तुम हो करूणा दया निधान, पधारो महावीर भगवान।।
मोरे मन मन्दिर में....।।३।।
भक्त जनों के कष्ट निवारो, आप तरे हमको भी तारो..२
कीजे हमको आप समान, पधारो महावीर भगवान।।
मोरे मन मन्दिर में....।।४।।
आये हैं, अब शरण तिहारी, पूजा हो स्वीकार हमारी..२
तुम हो प्रभु जी दया निधान, पधारो महावीर भगवान।।
मोरे मन मन्दिर में....।।५।।
रोम रोम में तेज तुम्हारा, भूमण्डल तुमसे उजियारा..२
रवि शशि तुमसे ज्योतिर्मान, पधारो महावीर भगवान।।
मोरे मन मन्दिर में....।।६।।

खुशी से फूल बरसाओ...

खुशी से फूल बरसाओ, जन्म जिनराज पाया है...२
खुशी से रागनी गाओ, जन्म जिनराज पाया है...२ टेक।।
सलोनी साँवली सूरत है देखो मेरे स्वामी की।
रीझ कर देवता आये, साथ में इन्द्राणी भी।।
खुशी से रत्न वरसाओ, सभी ने दर्श पाया है।
न्हवन इनका कराया है।।१।।

खुशी से फूल बरसाओ..।।.....

झूलाता है जो इस जग को, झूलता आज बाँहों में।
है नन्हा रूप लेकिन, देवता चारों दिशाओं में।।
सिमट कर गोद में बैठे, प्रभु की कैसी माया है।
अनोखी प्यारी माया है।।२।।

खुशी से फूल बरसाओ..।।.....

है संकट में प्रभु धरती, जहाँ पर आप खेले थे।
भयानक युद्ध का गर्जन, जहाँ रंगीन मेले थे।।
कहें सब भक्त बस हमको, तो हमने तू ही पाया है।
सभी पर तेरा साया है।।३।।

खुशी से फूल बरसाओ..।।.....

छोड़ दिया जिसने घर अपना...

छोड़ दिया जिसने घर अपना, जन जन के कल्याण को।
शत्–शत् नमन करें हम सब मिल, ऐसे सन्त महान् को ।।टेक।।
मुनिराज को शान्ति कहाँ थी, सजने और संवरने में...२।
इन्हें मुक्ति का मार्ग दिखा था, जन जन के दुःख हरने में...२।।
शत् शत् नमन करें...।।१।।
धन वैभव परिवार और सुख, पलक झपकते त्याग दिया..२
ब्रह्मचर्य की पराकाष्ठा, मुनिव्रत अंगीकार किया..२
शत् शत् नमन करें...।।२।।
ऐसी सरल सौम्य प्रतिमा है, ममता यहाँ बरसती है..२
पाने को आशीष आपका, जनता खूब उमड़ती है..२
शत् शत् नमन करें...।।३।।
आये यहाँ अनेक साधु जन, पर ना मिला तुमसा कोई..२
मन्त्र–मुग्ध कर दिया सभी को, सबने है सुध–बुध खोई..२
शत् शत् नमन करें...।।४।।
इनके चरणों में अर्पित ये, श्रद्धा सुमन हमारे हैं...२
जन–जन के मन वास करें ये, जग की आँख के तारे हैं..२
शत् शत् नमन करें...।।५।।

गुरूवर तेरे चरणों की

गुरूवर तेरे चरणों की, मुझे धूल जो मिल जाये।
चरणों की रज पाकर, तकदीर बदल जाये।।टेक।।
मेरा मन बड़ा चंचल है, इसे कैसे समझाऊँ।
इसे जितना भी समझाऊँ, उतना ही मचल जाये।।
गुरूवर तेरे....।।१।।
मेरी नाव भंवर में है, इसे पार लगा देना।
तेरे एक इशारे पर, मेरी नाव उभर जाये।।
गुरूवर तेरे....।।२।।
नजरों से गिराना ना, चाहे कितनी सजा देना।
नजरों से जो गिर जायें, वो कैसे संभल पायें।।
गुरूवर तेरे....।।३।।
बस एक तमन्ना है, गुरू सामने हों मेरे।
गुरू सामने हों मेरे, चाहे प्राण निकल जायें।।
गुरूवर तेरे....।।४।।

परम पूज्य मुनिराज हमारे

परम पूज्य मुनिराज हमारे, हित उपदेश सुनाते हैं।
जैन अजैन सब दर्शन पाकर, अपना भाग्य सराहते हैं।टेक।।
अमृत सी वाणी है तेरी, तेरे गुण हम गाते हैं।
सुन कर तेरी वाणी मुनिवर, फूले नहीं समाते हैं।
परम पूज्य मुनिराज.....।१।।
करके चातुर्मास यहाँ पर, ज्ञान रत्न बरसाते हैं।
कठिन तपस्या करते मुनिवर, दया–भाव चित्त लाते हैं।
परम पूज्य मुनिराज.....।।२।।
राग द्वेष का नाम मिटाकर, चर्चा सारी करते हैं।
सदा सदा हों दर्शन तेरे, ऐसी आस लगाते हैं।।
परम पूज्य मुनिराज.....।।३।।
पाकर शुभ आशीष तुम्हारा, हम भक्त भजन ये गाते हैं।
सदा सदा हों दर्शन तेरे, ऐसी आस लगाते हैं।।
परम पूज्य मुनिराज.....।।४।।

करूणा सागर भगवान्

करूणा सागर भगवान्, भव पार लगा देना।
तूफां है बहुत भारी, मेरी नाव बचा देना।।टेक।।
निंमोही बन कर मैंने, अब तक जीवन खोया।
अपने ही हाथों से, काँटो का बीज बोया।।
अब तेरी शरण आया, दु:ख जाल हटा देना।
करूणा सागर भगवान्...।।१।।
भगवन् तेरी भक्ति से, संकट टल जाते हैं।
अज्ञान तिमिर मिटता, सुख का फल पाते हैं।।
चरणों में खड़ा हूँ वीर, मुझे राह बता देना।
करूणा सागर भगवान्...।।२।।
लख चौरासी फिरते, बहु कष्ठ उठाया है।
किया जनम–मरण फेरा, सुख–चैन न आया है।।
तेरे चरणों में मस्तक है, मुझे अपना बना लेना।
करूणा सागर भगवान्...।।३।।

नफरत की दीवार गिरा दीजिये,
रोते को गले से लगा लीजिये
इंसान हो इंसानियत से मुँह न मोड़िये
हर दिल में इंसानियत जगा दीजिये

तुम हो तारण-तरण

तुम हो तारण–तरण, मेटो जामन–मरण, अब हमारा।
प्यारा चन्दा प्रभु का सहारा।।टेक।।
कर्म वैरी ने हमको सताया।
चारों गतियों में भाव भाव घुमाया।।
दीने दुःख बहुत घने, कहते नाहीं बने, कष्ट सारा।
पाया चन्दा प्रभु का सहारा।१।।
माया मद में रहा मैं दीवाना।
सच्चा वस्तु स्वरूप न जाना।।
पर में रमता रहा, चाह करता रहा, जो विचारा।
पाया चन्दा प्रभु का सहारा।।२।।
अब तो सेवा करूँ मैं तुम्हारी।
प्रभु जी मेटो व्यथाएँ हमारी।।
सेवक आये शरण, अब तो पकड़े चरण, कर दो पारा।
पाया चन्दा प्रभु का सहारा।।३।।

तुम अगर दास अपना

तुम अगर दास अपना बना लो मुझे,
मैं सदा गीत तेरे ही गाता रहूँ।
तेरी महिमा की गाथा मैं गाता रहूँ,
और सारे जहाँ को सुनाता रहूँ।।टेक।।
तेरे दरबार में आया आशा लिये,
क्या मिलेगा तुम्हारा सहारा नहीं
तेरे दर्शन करूँ मैं यहाँ आकर,
क्या तुम्हें बात इतनी गंवारा नहीं।।
मुझको इसमें भी आनन्द आये बहुत,
धूलि चरणों की सिर पर लगाता रहूँ।।
तुम अगर दास.....।१।।
मैंने छोटा सा मन्दिर बनाया प्रभु,
तुम जो आओ तो अहसान मानूँगा मैं।
कोई हमदर्द दुनिया में मेरा भी है,
बात सच है यही, तो फिर जानूँगा मैं।।
तुम जो आकर के इसमें बसेरा करो,
मैं सदा दीप तेरे जलाता रहूँ।।
तुम अगर दास.....।।२।।

अपनी छाया में मुझको बिठालो प्रभु,
झूठी दुनिया से मैं तंग हूँ आ गया।
तुम दयालू भी हो और दयावान हो,
तेरा दरबार ये मुझको मन भा गया।।
अब तो इतनी लगन है तेर ''भक्त'' को,
तेरा दीदार सबको कराता रहूँ।।
तुम अगर दास.....।।३।।

आसरा इस जहाँ का

आसरा इस जहाँ का मिले न मिले
मुझको तेरा सहारा सदा चाहिये
चाँद तारे गगन में दिखे न दिखे
मुझको तेरा नजारा सदा चाहिये
आसरा.....चाँद तारे

मेरी धीमी है चल और पथ है विशाल
हर कदम पर मुसीबत है अब तू सँभाल
पैर मेरे थके हैं चले न चले
दिल पे तेरा इशारा सदा चाहिये
आसरा.....चाँद तारे

यहाँ खुशियाँ है कम और ज्यादा है गम
जिस तरफ देखूँ बस है भरम ही भरम
मेरी चाहत की दुनिया बसे न बसे
दिल में तेरा बसेरा सदा चाहिये
आसरा.....चाँद तारे

वीर की शरण में तुझको

वीर की शरण में तुझको आना पड़ेगा..२
छोड़ के सारे द्वारे, सुन मेरे प्यारे, तुझको आना पड़ेगा।
वीर की शरण में.....।टेक।।

अब तक भुलाया तूने भूल है भारी।
प्रभु की लगन क्यों दिल से बिसारी, आऽऽऽऽ
नेहा प्रभु से लगाना पड़ेगा।।१।। आना पड़ेगा।
वीर की शरण में.....।।

कुटुम्ब परिवार सब मतलब के साथी।
आये बुलावा तो कोई न साथी, आऽऽऽऽ
मोह का पर्दा हटाना पड़ेगा।।२।। आना पड़ेगा।
वीर की शरण में.....।।

किसको कहे अपना तू स्वार्थ का मेला।
वीर भजन बिन रहेगा अकेला, आऽऽऽऽ
वीर गुण गान गाना पड़ेगा।।३।। आना पड़ेगा।
वीर की शरण में.....।।

अज्ञानता का छाया अँधेरा।
कर ले जीवन में अपने सबेरा, आऽऽऽऽ।।
ज्ञान का दीपक जलाना पडेगा।।४।। आना पड़ेगा।
वीर की शरण में.....।।

निश दिन करता जिनका ध्यान

निशदिन करता जिनका ध्यान, वो मुनिवर आये आज महान्।
वो मुनिवर आये आज महान्, पधारे मुनिवर आज महान्।।
निश दिन करता....।टेक।।

सारे जग को धर्म सुनाते, सबको सत् की राह बताते।
करते जिनवाणी का वखान, वो मुनिवर आये आज महान्
निश दिन करता....।१।।

है ये वीतरागी की महिमा, समता की जिसमें नहीं सीमा।
करते सबको अभय का दान, वो मुनिवर आये आज महान्।।
निश दिन करता....।।२।।

जिनको रागद्वेष नहीं भाये सब जीवों को मोक्ष बतायें।
करते हर मुश्किल आसान, वो मुनिवर आये आज महान्
निश दिन करता....।।३।।

आत्म स्वरूपी दर्श तुम्हारा, सबको भाये लगता प्यारा।
जो हैं हर प्राणी के प्राण, वो मुनिवर आये आज महान्।।
निश दिन करता....।।४।।

संसार के सागर में

संसार के सागर में, मिलते ना किनारे हैं।
आ जाओ प्रभु अब तो, हम तेरे सहारे हैं।टेक।।
गम से भरी दुनिया में, कोई नहीं अपना है।
अरमान अधूरे हैं, टूटा एक सपना है।।
हमको भी सहारा दो, हम भी बेसहारे हैं।
संसार के सागर में.....।।१।।
जीवन का सफर लम्बा, राहों में अंधेरा है।
आँखों में भरे आँसू, दुःख दर्द ने घेरा है।।
दुःख दूर करो भगवन्, हम भी दुखियारे हैं।
संसार के सागर में.....।।२।।
कहते हैं तेरे दर पर, तकदीर संवरती है।
जो डूबने वाली है, वह नाव उभरती है।।
दर दर पे भटकते हैं, तकदीर के मारे हैं।
संसार के सागर में.....।।३।।

गुरू हमारे जीवन में, दिव्य प्रकाश जो लाते है
गुरू हमारे जीवन में, ज्ञान का दीप जलाते है
गुरू हमारे जीवन में, सत् का शंखनाद करते है
भूला भटका कठिन रास्ता, गुरू ही हमें बताते है

सब पाप करम कट जाते हैं

सब पाप करम कट जाते हैं, मुनिराज के दर्शन करने से।टेक।।
सब संशय भ्रम मिट जाते हैं, मुनिराज वचन चित धरने से।
सब पाप करम कट जाते हैं....।।१।।
यह मूरत सबसे न्यारी है, छवि परम दिगम्बर प्यारी है।
सब पाप करम कट जाते हैं....।।२।।
ये पंच महाव्रत धारी हैं, शिव नार से नेहा जोड़ा है।
सब पाप करम कट जाते हैं....।।३।।
आरम्भ परिग्रह छोड़ा है, वाणी इनकी उपकारी है।।
सब पाप करम कट जाते हैं....।।४।।
इस जग से नाता तोड़ा है, संसार से मुख को मोड़ा है।
सब पाप करम कट जाते हैं....।।५।।
सब राग–द्वेष निखारी हैं, सब जीवन के हितकारी हैं।
सब पाप करम कट जाते हैं....।।६।।

कर्म कर्म चिल्लाने वाले बहुत मिलेगे
कर्म की टक्कर सहने वालो का नामों निशान नही हैं
धर्म धर्म चिल्लाने वाले बहुत मिलेगे
धर्म का मर्म समझाने वालो का नामो निशान नही है

अरूण गुरू की वन्दना

अरूण गुरू की वन्दना हम गा रहे।
अर्चना का सर्व सुख हम पा रहे।।
अरूण गुरू की वन्दना .....।टेक।।
प्रेम के प्रतिरूप हो गुरू तुम सदा...
प्रेम मूरत तुम हृदय को भा रहे।
अर्चना का सर्व सुख.....।१।।
हम सजा कर थाल भक्ति भाव से...
भावना के पुष्प ये मुस्का रहे।
अर्चना का सर्व सुख.....।।२।।
हृदय वीणा आज झंकृत हो उठी...
सांस के तारों से स्वर हिन हिना रहे।
अर्चना का सर्व सुख.....।।३।।
चन्द्र सूरज कोटि तारे गगन के...
रेशमी माला ले तम्हें पहना रहे।
अर्चना का सर्व सुख.....।।४।।

ऐ मुक्ति चाहने वालों

ऐ मुक्ति चाहने वालों, जरा सुन लो प्रभु की वाणी।
वे मुक्त हुए हैं कैसे, जरा पढ़ लो तुम जिनवाणी।।टेक।।
राज वैभव उन्होंने छोड़ा फूलों की सेज को तोड़ा।
सूने वन में ही जाकर, उन्होंने मुनिदीक्षा ही ले धारी हैं।।
भूख प्यास की वेदना मिटाई, गर्मी–सर्दी भी झेली।।
वे मुक्त हुए कैसे.....।।१।।
क्रोध रूपी अग्नि मिटाई, पर से भी नजरें हटाई।
मधुर वाणी मुख से ही बोली, चाहे राजा हो या भिखारी।।
ऐभव्य जीवों! उन्होंने, दुर्जन को भी अपना बनाया।
वे मुक्त हुए कैसे.....।।२।।
एक आसन क्रिया करके, सामायिक में जीवन लगाया।
पंच इन्द्रिय वश में करके, मोह को भी दूर भगाया।।
संयम से नाता जोड़ा, परमातम से ध्यान लगाया।
वे मुक्त हुए कैसे.....।।३।।
रागादिक भाव मिटाये, सुख शान्ति का सागर पाये।
निर्मल परिणामों को करके, उर में ही समता लाये।।
आतम से नाता जोड़ा, बन गये अब शिववासी।
वे मुक्त हुए हैं कैसे....।।४।।

यदि प्राणी मुक्ति पानी, अपने में ही निजता लानी।
आतम कल्याण को करके, मैं पाऊँगा मुक्ति धामी।।
वो पुण्य अवसर आये, अब चलूँ मैं उनके पथ पर।
मैं भी शिववासी बनूँगा, जरा निज में भर लूँ वाणी।।
वे मुक्त हुए कैसे.....।१।।

तुझे नैया कहूं खिवैया

तुझे नैया कहूं खिवैया, या कह दूँ खेवनहारा।
हमें पार करेगा जग से, ये सच्चा गुरू हमारा।।
अरूण सागर गुरू हमारा ।।१।।
मैं कब से भटक रहा हूँ, न पार अभी तक पाया।
भवदधि से तिरने को ही, पतवार आज ये पाया।।
हमें पार करेगा.....
तुम बालयती ब्रह्मचारी, हो पूर्ण महाव्रत धारी।
तप करके कर्म खिपावे, अनुक्रम कर मुक्ति पावे।।
हमें पार करेगा.....
मुनिराज धैर्य बल शाली, समता रस के स्वादी।
निदां स्तुति सम जाने, परिषह में खेद न मानें।।
हमें पार करेगा.....

ठिकाना पूछते हो क्या

हमारा क्या ठिकाना है?

ठिकाना पूछते हो क्या, हमारा क्या ठिकाना है?
मिले जो झौंपड़ी आगे, निशा उसमें बिताना है।टेक।।
अमीरी में न था हंसना, गरीबी में न है रोना।
जगत चलता चलेगा यह, हमें क्या घर बसाना है।।
मिले जो झौपड़ी आगे....।।१।।
पड़ा कर्त्तव्य का पथ है, भला विश्राम क्या होगा?
न सोना है, न रोना है, हमें चलना ही चलना है।।
मिले जो झौपड़ी आगे....।।२।।
विदाई स्वार्थ को दो फिर, हमारा क्या तुम्हारा क्या?
जमीं और आसमां सारा, सदन अपना बनाना है।
मिले जो झौपड़ी आगे....।।३।।
करेंगे दीन की सेवा, बनेंगे विश्व सेवक हम।
दु:खी जन के कटे दिल पर, हमें मरहम लगाना है।।
मिले जो झौपड़ी आगे....।।४।।
न दुश्मन अब रहा कोई, हमारे दोस्त हैं सब ही।
सभी के प्रेमयुक्त मन पर, हमें कुटिया छपाना है।।
मिले जो झौपड़ी आगे....।।५।।

एक भूपाल है, एक कंकाल है

एक भूपाल है, एक कंगाल है, क्या बतायें।
अपनी करनी के फल सब ही पाये।टेक।।
एक फूलों की सेज पे सोता,
एक खाट बिछा के सोता।
एक मौज करे, एक हाथ करे, क्या बतायें।
अपनी करनी के फल....।१।।
एक करता है मोटर सवारी
एक द्वारे पे आया भिखारी।
जैसी करनी करे, वैसा भोग करे, क्या बतायें।
अपनी करनी के फल....।।२।।
एक महलों की रानी बनी है,
एक बन के भिखारिन खड़ी है।
टुकड़ा दे दो जरा, आँखों नीर भरा, क्या बतायें।
अपनी करनी के फल....।।३।।
एक सेठानी बन के बोली,
एक माँगती दर दर डोली।
झाड़ू देती फिरे, गलियाँ साफ करे, क्या बतायें।
अपनी करनी के फल....।।४।।

छू लेने दो पावन चरणों को

छू लेने दो पावन चरणों को, त्रिलोक के तीरथ धाम हैं ये।
भक्तों के लिये पावन गंगा, दुष्टो के लिये पैगाम हैं ये।।टेक।।

कैसी है रीति भई जग में,
कैसी उल्टी है ये माया।
प्यासे प्राणी के पास प्रभु,
कुआ ही खुद चल कर आया।।

भक्ति का नशा जिस पर छाये, उस मय के छलकते जाम हैं ये।
छू लेने दो इन चरणों को .....।।१।।

मेरी सदियों से थी अभिलाषा,
इन चरणों के दर्शन पाऊँ।
इन की रज अपने शीश चढ़ा,
फिर चिर निद्रा में सो जाऊँ।।

छोटी सी तपस्या के बदले, प्रभु कितना बड़ा ईनाम है ये।
छू लेने दो इन चरणों को .....।।२।।

जिस जगह चरण ये पड़ जायें,
कण कण पावन हो जाते है।
जो इनके दर्शन करते है
नर नारी वे तर जाती है।।

इन चरणों पर मैं बलिहारी हूँ, इन चरणों में चारो धाम है।
छू लेने दो इन चरणों को .....।।३।।

मेरे रोम रोम में बसने वाले वीर

मेरे रोम रोम में बसने वाले वीर !
जगत के स्वामी, तू अर्न्तयामी, मैं तुझसे क्या माँगूं..२
मेरे रोम रोम में बसने वाले ...टेक।
मोह माया में जकड़ चुका हूँ, पापों का सर बोझ लिये हूँ..२
विनती यही है भगवन् तुझसे..२ इनसे छुड़ा दे वीर।
जगत के स्वामी.....।१।।
नर तन पा के जगत में आया, तेरी महिमा जान न पाया..२
बिछुड गया जो हाथ न आये...२ बुद्धि दो अब वीर।
जगत के स्वामी.....।।२।।
आई हूँ मैं शरण तुम्हारी, मैं भी दुखिया दुःख की मारी..२
सबके तूने संकट टारे..२—काटी करम जंजीर।
जगत के स्वामी.....।।३।।

मुनिपंथ पर ही चलकर के, तीर्थकर निर्माण हुआ
निज आगम की बाते उपजी, धर्म जैन निर्माण हुआ
इस मारग पर ही चलकर के, आतम का कल्याण हुआ
और न कोई पथ है दूजा, चल जिस पर भगवान हुआ

एक मुनिवर के दर्शन से ऐसा लगा

एक मुनिवर के दर्शन से ऐसा लगा..२
एक मुनिवर के दर्शन से ....।।टेक।।
जैसे करूणा की खान, जैसे आगम प्रमाण।
जैसे सरगम की तान, जैसे भजनों की शान।।
जैसे गायन के गीत, जैसे आतम–संगीत।
जैसे निर्विकार चेतन का दर्शन किया..हो
एक मुनिवर के दर्शन से...।१।।
जैसे अहिंसा का रूप, जैसे सन्त का स्वरूप।
जैसे धर्म की आन, जैसे समता की खान।।
जैसे समय की गुहार, जैसे रत्नत्रय का हार।
जैसे मानस पटल पर गुरू मूर्ति हो...हो
एक मुनिवर के दर्शन से...।।२।।
जैसे समय की पुकार, जैसे मन्त्रनवकार।
जैसे हंस का विवेक, जैसे मस्तकाभिषेक।।
जैसे सागर गम्भीर, जैसे सजग प्रहरी धीर।।
जैसे महामन्त्र गुरूकाया में जाग्रत हुआ हो..
एक मुनिवर के दर्शन से...।।३।।

कृपा की एक नजर गुरूवर

कृपा की एक नजर गुरूवर, हमारी ओर कर देना।
मिटा कर मोहतम, उर दीप में तुम ज्योति भर देना।टेक।।
बिना तेरी कृपा के नाव, धारा में फंसी मेरी..२
पकड़ पतवार, मंजिल दूर, बेडा पार कर देना।।
कृपा की एक नजर गुरूवर..।।१।।
बहाओ प्रेम की गंगा, दिलों, में प्यार का सागर..२
हमें आपस में मिल जुल कर, प्रभु रहना सिखा देना।।
कृपा की एक नजर गुरूवर..।।२।।
हमारे ध्यान में आओ, प्रभु आँखों में बस जाओ..२
हृदय में भक्तिरस भरकर, मन–संशय मिटा देना।।
कृपा की एक नजर गुरूवर..।।३।।
ये मन चंचल नहीं माने, फंसा भ्रम–जाल में तड़फे..२
लगा कर निजचरण में, दास तुम अपना बना लेना।।
कृपा की एक नजर गुरूवर....।।४।।

मेरे प्रभु! तू मुझको बता

मेरे प्रभु! तू मुझको बता, तेरे सिवा मे क्या करूँ?
तेरी शरण को छोड़कर, जग की शरण का क्या करूँ?
मेरे प्रभु! तू मुझको बता....।।टेक।।

कलियों में बस रहे हो तुम, फूलों में खिल रहे हो तुम।
मेरे भी मन में आ बसो, मन्दिर में जाके क्या करूँ?
मेरे प्रभु! तू मुझको बता....।।१।।

चन्द्रमा बन के आप ही, तारों में जग मगा रहे।
तेरी चमक के सामने, दीपक जला के क्या करूँ?
मेरे प्रभु! तू मुझको बता....।।२।।

सारी उमर खत्म हुई, तेरी निगाह ना फिरी।
कर्मो के फल को भोगता, कैसे बसर किया करूँ?
मेरे प्रभु! तू मुझको बता....।।३।।

बेचैन हूँ नाथ रात–दिन, चैन नहीं है आप बिन।
हर दम चलायमान मन, इसका उपाय क्या करूँ?
मेरे प्रभु! तू मुझको बता....।।४।।

शिक्षा ये मुझको दीजिये, अपनी शरण में लीजिए।
ऐसा प्रबन्ध कीजिए, सेवा में ही रहा करूँ।।
मेरे प्रभु! तू मुझको बता....।।५।।

यदि भला किसी का कर न सको

यदि भला किसी का कर न सको, तो बुरा किसी का मत करना
अमृत न पिलाने को घर में, तो जहर पिलाते भी डरना।टेक।।
यदि सत्य मधुर न बोल सको, तो झूठ कटुक भी मत बोलो।
यदि मौन रहो सबसे अच्छा, कम से कम विष तो न घोलो
बोलो तो पहले तुम तोलो, बचन सुहित बोला करना।
अमृत न पिलाने को.....।१।।
यदि घर न किसी का बना सको, तो झोपडियाँ न जला देना।
यदि मरहम पट्टी कर न सको, तो खार नमक न लगा देना।।
यदि दीपक बन कर जल न सको, तो अन्धकार भी मत करना।
अमृत न पिलाने को.....।।२।।
यदि फूल नहीं बन सकते तो, काँटे बन कर न बिखर जाना।
यदि मानव बन कर सहला न सको, तो दिल न किसी का दुखा देना।।
यदि देव नहीं बन सकते तो, दानव बन कर भी मत मरना।
अमृत न पिलाने को.....।।३।।
मुनि पुष्प अगर भगवान् नहीं, तो कम से कम इन्सान बनो।
किन्तु न कभी शैतान बनो, और कभी न तुम हैवान बनो।।
यदि सदाचार अपना न सको, तो पापों में पग मत धरना।
अमृत न पिलाने को....।।४।।

वो पुण्य कहाँ से लाऊँ

वो पुण्य कहाँ से लाऊँ, जो पाप को मिटा दे।
ओ मुक्ति जाने वाले कोई रास्ता बता दे।।टेक।।
मैंने मोह राग करके, तन को सदा सजाया।
फिर देखो इसने मुझको, कितना सदा रूलाया।।
माना खता है मेरी, ऐसी तो ना सजा दे।
ओ मुक्ति जाने वाले.....।।१।।
रहने दो मुझको अपने, चरणों की धूल बन कर।
आयेगा वक्त वो भी, महकूगाँ फूल बनकर।।
जो नहीं तुझे गँवारा, तो द्वार से हटा दे।
ओ मुक्ति जाने वाले.....।।२।।
मैंने मन से तुमको पूजा, दिल में सदा बसाया।
अपना समझ के तुझको, दिल से सदा लगाया।।
माना कि पापी मैं हूँ, ऐसी तो ना सजा दे।
ओ मुक्ति जाने वाले.....।।३।।

बदला लेने का आनन्द तो एक ही दिन होता
किन्तु क्षमा करने वालों का गौरव
चिर स्थायी, मृत्युजंयी होता है

गाये जा गुण गुरूवर के

गाये जा गुण गुरूवर के, चरण चित्त धरके,
अगर सुख पाना हैं।टेक।।
नाम जिन्हों का अरूण सागर हैं जैन धर्म का राज...होऽऽऽऽ
जगमग जगमग दीप जल रहे, देखो जगत में आज।।
दुर्लभ दर्शन जिनके, शरण में आ इनके,
अगर सुख पाना है। गाये जा गुण गुरूवर के...।१।।
धन्य दिवस है आज हमारा, धन्य घड़ी धन्य भाग्य।...होऽऽऽऽ
घर बैठे आये हैं मुनिवर, जाग अरे मन जाग।।
स्वागत करो हिल मिल के, चरण में आ इनके,
अगर सुख पाना है। गाये जा गुण गुरूवर के...।।२।।
तेरा मेरा छोड़ दे बन्दे, तज दे राग द्वेष।...होऽऽऽऽ
शुद्ध हृदय से आकर सुनले, सतगुरू का सन्देश।।
मेहमान ये हैं चार दिन के, वचन सुन इनके,
अगर सुख पाना है। गाये जा गुण गुरूवर के...।।३।।

आयु का आधा क्रम सोने में बीत गया।
बचपन संग बीता, कुछ यौवन संग रीत गया।
अंग अंग शिथिल हुए, प्रभुतक न दृष्टि गई।
भव भव के भ्रमण हेतु फिर से मै जीव गया।।

मिलती है मुनि संघ की

मिलती है मुनि संघ की संगत कभी कभी।
होती है इनकी हम पे, इनायत कभी कभी।टेक।।
करते हैं तप कठोर, तपस्वी हैं ये महान्।...ऽऽऽ
पेड पशु नर सबका, मुनिवर करते कल्याण।।
होती हैं इनके दर्शन की, नियामत कभी कभी।
मिलती है मुनि संघ की....।।१।।
छवि इनकी है ऐसी, शशि भी आते शर्माये...ऽऽऽ
पर्वतों से ऊँचे हैं, सागर से भी गहराये।।
ऐसी ज्ञान गंगा, बहती हैं कभी कभी।
मिलती है मुनि संघ की....।।२।।
जन जन की अभिलाषा, गुरूवर का चार्तुमास।...ऽऽऽ
मोहर लगेगी खत पर, ऐसी है सबको आशा।।
इस छोटी नगरी में, भक्तों की कमी नहीं।
मिलती हैं मुनि संघ की...।।३।।

चलते फिरते तीरथ मुनिवर

चलते फिरते तीरथ मुनिवर, इस नगरी में आये है।
महापुण्य के उदय हमारे, इनके दर्शन पाये हैं।टेक।।
इन जैसे सन्तों के दर्शन, बड़े भाग्य से पाते हैं।
जिन्हें भटकना है भव भव में, नहीं यहाँ पर आते हैं।।
दया गुरू को आई हम पर, हमें जगाने आये हैं।
महापुण्य के उदय हमारे...।१।।
ले लो आशीर्वाद गुरू से, बिगड़ी सब बन जायेगी।
सन्तों की सेवा करने से, घर में खुशियाँ आयेंगी।।
कर लो इनकी भक्ति सब मिल, अवसर नहीं गंवाने हैं।
महापुण्य के उदय हमारे...।।२।।
अमृतमयी वाणी है तुम्हारी, तुमरे गुण हम गाते हैं।
पाने शुभ आशीष तुम्हारे, दौड़े–दौड़े आते हैं।।
प्रवचन और भजन–संध्या सुन, फूले नहीं समाये हैं।
महापुण्य के उदय हमारे...।।३।।

ज्ञान के दीप जलते चले जायेंगे

हम अगर वीर–वाणी पे श्रद्धा करें,
ज्ञान के दीप जलते चले जायेंगे।
गर जले ज्ञान के दीप हृदय में तो,
मार्ग संयम के खुलते चले जायेंगे।।टेक।।
हमने पाया है मुश्किल से यह नर का तन,
गुरू मिले हैं दिगम्बर और अमृत वचन।
गर इसे हमने विषयों में ही खो दिया,
भूल पर अपनी खुद ही तो पछतायेंगे।।
हम अगर वीर–वाणी पे...।।१।।
अब मिला है यह जिन धर्म जिनवर–शरण,
देव तरसें जिसे ऐसा पाया रतन।
मोह–ममता से थोड़ा भी गर हम हटें,
मार्ग कल्याण के खुद ही खुल जायेंगे।।
हम अगर वीर–वाणी पे...।।२।।

मेरी विपदा मिटा दो, ओ भगवन्!

मेरी विपदा मिटा दो, ओ भगवन्..तेरे दर्शन को आये हुए हैं।
भव सागर में...हम तो फँसे हैं, कर्मो के सताये हुए हैं।टेक।।
तुमने लाखों जनो को है तारा, मुझको भी इस भव से तारो।
तुम ही तारोगे...हमको ओ भगवन्! यही आस लगाये हुए हैं
मेरी विपदा मिटा दो.....।।१।।
तेरा पाने को आशीष भगवन् लाखों श्रावक तेरे दर पर आये।
तेरे दर्शन से...मिट जाये संकट, यही सोच के आये हुए है।।
मेरी विपदा मिटा दो.....।।२।।
घोर छाये हैं संकट के बादल, प्रभु तुम ही इन्हे दूर करोगें।
तुम बनोगे..."हमारा" सहारा, यही विश्वास जगाये हुए है।।
मेरी विपदा मिटा दो.....।।३।।

हर वृक्ष कल्पवृक्ष नही होता
हर पर्वत सुमेरू पर्वत नही होता
यू तो जमाने में सैकड़ो संत होते है
हर संत आचार्य पुष्पदन्त नही होता

मैं भी पूजूँ, तुम भी पूजो

नाम तुम्हारा तारणहारा, सारे जग से है न्यारा।
मैं भी पूजूँ, सब मिल पूजो, ये तो प्राणों से प्यारा ।टेक।।
इनके दर्शन करके मानव, जीवन सफल बनाते हैं।
इनकी वाणी सुन कर भईया, सारे अमृत पाते हैं।।
मुनिवर हमको ऐसा मिला, जो सबकी आँखों का तारा।
मैं भी पूजूँ, तुम सब मिल पूजो...।।१।।
अपने सब भक्तों के कष्टों, को तो तुमने मिटा दिया।
अपने वचनों से तुमने तो, मुक्ति का पथ दिखा दिया।।
इनके चरणों की रज पाकर, चमका है ये जग सारा।
मैं भी पूजूँ, तुम सब मिल पूजो...।।२।।

इस दिल का क्या करे, जो गुरू को पुकारता है
हर पल गुरू की तस्वीर को निहारता है
शायद गुरूवर कभी दर्शन देने आयेगे
इसी उम्मीद पर हम सब का हर दिन गुजरता है

नी मैं खुशी मनाना नी

नी मै खुशी मनाना नी, दर्शन अरूण सागर के पाये
नी मै रझ रझ गाना नी, दर्शन अरूण सागर के पाये
अरूण सागर है ज्ञान के सागर, ज्ञानी और महाज्ञानी
अरूण सागर के ज्ञान के आगे, दुनिया भरती पानी
नी मै यही बताना नी, दर्शन अरूण सागर के पाये
नी मै खुशी.....

अरूण सागर के दर्शन कर, अज्ञान तिमिर मिट जाये
मन का सारा मैल धुले और ज्ञान कली खिल जाये
झोली भर भर जाना नी, दर्शन अरूण सागर के पाये
बच्चों का भी यहाँ पे आकर, मन मयूर खिल जाता
खेल–खेल में धर्म सीखकर, मजा बहुत ही आता
सागर से ध्यान लगाना नी, दर्शन अरूण सागर के पाये
नी मै खुशी.....

धर्म ही रक्षा करें जीव की, धर्म ही पार लगाता है
श्रृद्धा रखना सदा धर्म में, धर्म सुखो का दाता है
धर्म ही मुक्ति देता भइया, बिगड़े काम बनाता है
श्रृद्धा जिसकी अटल धर्म पर, श्रद्धालु वह कहलाता है

महावीर ले लो फिर से जन्म

बहुत हो रहा है जुल्मों सितम महावीर
अपनी शरण में हमें ले लो स्वामी
जन्म मरण से मुक्ति दे दो स्वामी
पापों में यू ही जकडे है हम
महावीर.....
हमारी लगन है आँचल तुम्हारा
तुम्हारे बिना ना कोई सहारा
दर्शन को तेरे तरसे नयन
महावीर.....

करनी का फल तो जो मिलता है मिलना ही है
जैसा बोओगे वैसा काटोगे यह यथार्थ होना ही है
औरों के घर अंधेरे फैलाकर चिराग ढूँढने चले हो
तन्द्रा से जागकर सपनो को साकार करने चले हो

मेरे गुरूवर आये है

सभी मिल आज गुण गाओ, मेरे गुरूदेव आये है।
गुंजादो गीत मंगलमय, मेरे गुरूदेव आये है।
बिछाओ चादनीं चंदा, सितारों नाचने आओ
सुनहरा थाल भर उषा प्रभाकर आरती लाओ
सुस्वागत साज बजवाओ, मेरे गुरूदेव आये है–२
लताओ तुम झुकाओ शीश, गुरूवर जी के चरणों में
तितलियाँ रंग बरसाओ, बहारों की फिजाओं से
गुरू भक्ति सभी गाओं, मेरे.....
दौड़ कर गंगा, जमुना तुम, चरण प्रक्षाल कर जाओ
ऐ धरती तू उगल सोना, ये सम्यक् ज्ञान उर लाओ
इन्द्र आनन्द बरसाओ, मेरे.....
सफल हो आगमन इनका, करे स्वागत हम मिलजुल कर
सुखद गुरूवर के दर्शन से, विघ्नों का नाश हो जाये
यह मंगल गान सुन जाओ, मेरे.....

बच्चों के जन्म पर गीत गाये जाते है
साथ ही द्वार पर बाजे बजाये जाते है
पूजा भक्ति करो गुरूओ की मेरे बंधुओ
पूजा भक्ति से ही सुख शांति के फल पाये जाते है

मैने छोड दिया पापों का संग

गुरू का संग प्यारा लगे
बदला जवन का आज मेरा ढंग, गुरू का.....
मैने छोड .....
आज मैने देखा गुरू का नजारा
आखों में बस गया वीतराग प्यारा, ओ.....
मेरे मन में उठी है उमंग, गुरू का.....
तन मन व धन गुरू चरणो में वार दूँ
पूजा मैं अपना मैं जीवन गुजार दूँ
ओ.....दिल में छाया है, भक्ति का रंग
अरूण सागर गुरू ममता की मूरत
त्याग तपस्या की मनहारी सूरत
ओ.....जिनधर्म के ये हो सरताज
मुनियों को संघ प्यारा.....
मैने छोड .....

दबे पांव मौत आती है आने दो
आहट मिल जाये तो मन मत घबराने दो
निश्चित ही मृत्यु से जीवन का अन्त नही
प्राण मुखर होते है, देह बदल जाने दो

जिनवाणी को रखना

तर्ज :— हम लाये है तूफां से....

हम लाये है विदेह से तत्वो के ज्ञान को
जिनवाणी को रखना, मेरे भक्तो संभाल के
देखो यह ग्रन्थराज है चिन्तामणी जैसा
आचार्य कुन्दकुन्द में निज हाथ से लिखा
भगवान आत्मा है बताया जहान को
जिनवाणी.....

दुनिया में जैनधर्म का न्यारा है रास्ता
पुदगल का जीव से नहीं है कोई वास्ता
भूलो नहीं समझो जरा इस भेद ज्ञान को
जिनवाणी.....

कर्त्तव्य बुद्धि से दुखी होती है ये दुनिया
रागों में धर्म मान के बैठी है ये दुनिया
आओ मेरे समझो जरा ज्ञायक स्वभाव को
जिनवाणी.....

गुरूवर हम आये है

गुरूवर हम आये है हमें अपनी शरण में ले लो
भटके है राहों से हमें ज्ञान किरण दे दो
सुख की अभिलाषा में संसार संवारा है।
सबको माना अपना ये ही दोष हमारा है
शुद्धातम हो अपना, अज्ञान तिमिर हर लो
गुरूवर.....

कर्मो के सताये है, भव–भव में रूलाये है
चौरासी के चककर में, कई जन्म गँवाये है
भव बंधन काट सके, वह शक्ति हमें दे दो
गुरूवर.....

तोड़ा जग से नाता, तुम्हें सब कुछ माना है।
तुम्ही तो हितैषी हो, दिल से पहचाना है
हम दास है चरणो के, हमें अपनी शरण ले लो
गुरूवर.....

बस एक ही इच्छा है, गुरू नित्य रहे उर में
गुरू नित्य रहे उर में, मम आतम ज्योति जले
यही एक तमन्ना है हमें अजर अमर कर दो
गुरूवर.....

संयम के झरोखों से

(तर्ज–अँखियों के झरोखों.....)

संयम के झरोखों से मैने देखा जो सामने
मेरे गुरू नजर आये पुष्पदन्त सागर नजर आये
गुरू भक्ति में गुरू ध्यान में मन खोने लगा है
संसार के दु:ख जाल में हंस रोने लगा है।
गुरूवर के भरोसे पर सब बैठी हूँ भूल के।
यूँ ही उम्र गुजर जाये लेके नाम गुजर जाये
मेरे गुरू नजर आये.....
मैं जब से गुरू चरण के रंगो में रगी हूँ।
सोई हुई आशा मेरी कहती है जगी हूँ।
मेरी भक्ति का ये सपना कहीं कोई न तोड़ दे।
मन सोच के घबराये यही सोच के घबराये
मेरे गुरू नजर आये.....
माना मेरी पर्याय में मुक्ती तो नही है।
पर हार के चुप बैठना युक्ति भी नही है।
मेरी मुक्ति का ये बिरवा मैं जाऊँगी रोप के।
संभव है किसी भव में मेरी मुक्ति भी हो जाये।
मेरे गुरू नजर आये.....

गुरूवर तुम हो मालामाल

(तर्ज—चांदी जैसा रंग है तेरा....)

चाँदी सोना छोड़ के गुरूवर हो गये आप निहाल।
धनवाले कंगाल हैं गुरूवर आप हो मालामाल।ध्रु।।
जिस रास्ते से तुम गुजरो, वह मार्ग धन्य कहलाये
जो भी देखे एक बार, वो सोते भाग्य जगाये—२
छोड़ परिग्रह बने दिगम्बर, छोड़े सब जंजाल
धनवाले कंगाल हैं गुरूवर.....।।१ चाँदी सोना।।
तप का ताला त्याग तिजोरी, भरे है रत्न अपार
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण का भरा हुआ भंडार
जिसने खोया उसने पाया ये बेशकीमती हार।।
एक बार आहार विधि से अंतराय को टाल
जीव नहीं मर जाय पाँव से चलते ऐसी चाल
धनवाले कंगाल हैं गुरूवर .....।।२ चाँदी सोना।।
जब से दर्शन पाये मैंने नयन पवित्र बनाये
गुरू चरणों में शीश झुकाकर, अपना भाग्य सराहे—२
फिरते रहे भटकते जग में, बीते कितने साल
धनवाले कंगाल हैं गुरूवर .....।।३ चाँदी सोना।।

मैं क्या करू नाथ

(तर्ज– मैं क्या करू नाथ राम...)

मैं क्या करूँ नाथ मोहे, कर्मो ने घेरा २ ।।ध्रु।।

शास्त्र अगर पढ़ूँ तो मैं पढ़ नहीं पाऊँ
सिर तो खपाऊँ तो, फिर भूल जाऊँ
मेरो ये अज्ञान, मोहे कर्मो ने घेरा ।।१ मै क्या।।

सामायिक करूँ तो मुझ से बैठा नही जाये
पैर कमर दुखे और मन घबराये
मैं चाहूँ आराम, मोहे कर्मो ने घेरा ।।२ मै क्या।।

माला मै फेरू तो मन घूमने को जाये
उसे समझाऊँ तो नींद आ जाये
कैसे जपूँ जाप, मोहे कर्मो ने घेरा ।।३ मै क्या।।

पूजा करने को मुझे समय नही मिले
एकासन करूँ तो शाम भूख लग जाये
छूटे नही स्वाद, मोहे कर्मो ने घेरा ।।४ मै क्या।।

प्रभु सुमरन

(तर्ज–झिलमिल सितारो...)

निशादिन प्रभु का ही सुमरन होगा
दिन–दिन संवरता जीवन होगा
प्रभु का पाकर शरणा मन ये पावन होगा ।ध्रु।।
पाप की गली में अब तो भूले से न जायेंगे
क्रोध और कषाय को मन से ही हटायेंगे
धर्म से अनुरत तन मन होगा ।।१ मै निशदिन।।
श्रद्धा से प्रभु की हम तो नाम धुन लगायेंगे
भावना के फूलों से ही पूजा हम रचायेंगे
नयना कलश प्रक्षालन होगा ।।२ मै निशदिन।।
ज्योत तो धरम की हम सभी मन जगायेंगे
कर साधना रत्नत्रय भावना भायेंगे
तब ही ना आना भव वन होगा ।।३ मै निशदिन।।
फेरी की लाखों भव की, पर तुमको ना ध्याया
खोई निधि पाई है जाना प्रभु शरण जब पाया
सर्वस्व तुम्हें अब अर्पण होगा ।।४ मै निशदिन।।
निशिदिन प्रभु का ही सुमरन होगा....

मुनिराज हमारे

(तर्ज—सारे जहाँ से अच्छा...)

सारे जहाँ से न्यारे मुनिराज ये हमारे २ ।।ध्रु।।
झाको तो इनके अंदर तन मन से ये दिगम्बर
वैभव के हर नजारे इनको लुभा के हारे
सारे जहाँ से न्यारे....।।१।।
धन की न चाह रखते हिंसा से दूर रहते
लख लख कर पग को रखते जंगल के वासी रहके
नैया है बीच सागर कर दो इसे किनारे
सारे जहाँ से न्यारे....।।२।।
जिनवर की है सूरत फैली है जग में कीरत
तप योग की ये मूरत चलते है जैसे तीरथ
जग में न कोई मेरा, हम है तेरे सहारे
सारे जहाँ से न्यारे....।।३।।
टीका तिलक से हटकर इनके स्वरूप न्यारे
निज आतम ध्यान करते ये महा मुनि हमारे
हर क्षण क्षमा का दरिया बहता है इनके द्वारे
सारे जहाँ से न्यारे....।।४।।

शत-शत नमन

(तर्ज—बहुत प्यार करते हो...)

अरूण सागर को है शत शत नमन
चरणों में आये है ले लो शरण
जीवन हवाले अब ये तेरे गुरूजी
कर दो कृपा अब तो थोड़ी सी गुरूजी
चरणों में आयेंगे चरणों में पायेंगे मुक्ति किरण
अरूण सागर ऽ ऽ ऽ

धन्य हुआ है जीवन दर्शन पाकर
तन मन हुआ है पावन चरणों में आकर
तुमको रिझायेंगे, तुमको चढ़ायेंगे, श्रद्धा के सुमन
अरूण सागर ऽ ऽ ऽ

गुरूवर तेरी भक्ति में तन मन मगन हो
श्वास रहे ये जब तक सच्ची लगन हो
कर्म को नशायेंगे मोक्ष पद पायेंगे, ऐसी हो लगन
अरूण सागर ऽ ऽ ऽ

तुझको तपना होगा

(तर्ज—नदिया चले रे तारा...)

हो सूरज तपे तपे रे माटी—२ दीपक जले रे बाती
तुझको तपना होगा, मोह तजना होगा।।टेक।।
तप ही तो माटी को गागर बनाये—२
गागर में सागर सहज ही समाये—२
माटी का अर्पण समर्पण जब होगा ऽऽ—२
मुक्ति रमा का मिलन तब ही होगा
तुझको तपना होगा ।।१।।
तप अग्नि में तप के हो जा तू कुंदन
तप से ही कटते हैं कर्मों के बंधन
तप के बिना तेरा निश्चित पतन है
तप ही तो मुक्ति का अन्तिम यतन है
तुझको तपना होगा ।।२।।
तप याने इच्छाओं को शान्त करना
तप याने विषय से मन को हटाना
तप याने खुद में ही खुद को है पाना ऽऽ
तप याने आत्मा को निर्मल बनाना
तुझको तपना होगा ।।३।।
पार हुआ वो, रहा जो सफर में
डूब गया वो, रूका जो भंवर में
तू न चलेगा तो चल देगी राहें ऽऽ—२
मंजिल को तरसेंगी तेरी निगाहें
तुझको तपना होगा ।।४।।

प्रभु नाम जपने से

तर्ज–(क्या खूब लगती हो...)

प्रभु नाम जपने से, नव जीवन मिलता है।
तन मन का मुरझाया, उपवन खिलता है
अंतर के कोने में एक दीपक जलता है।टेक।।
श्रीपाल प्रभु गुण गाकर, हाँ हाँ गाकर
तूफां में भी पार हुए थे सागर
चन्दनबाला दर्शन से, हाँ दर्शन से
देखो पल में मुक्त हुई कर्म बन्धन से
तन मन का मुरझाया।१।।
हो सर्प अगर विष वाला, हाँ हाँ विषवाला
कर लो मन में ध्यान, बने जयमाला
भव पाप सभी टल जाए, हाँ टल जाये
सुमिरन से संताप, सभी टल जायें
तन मन का मुरझाया।।२।।
संसार समुद्र है गहरा, हाँ है गहरा
कर्मों का हर ओर लगा है पहरा
सब छोड़ जगत की माया हाँ हाँ माया
ले लो तुम मन वीर शरण की छाया
मन मन का मुरझाया।।३।।

मैं फूल बनकर

मैं फूल बनकर तेरे चरणों में चढ़ जाऊँ।टेक।।
मैं बाती बनकर, तेरे दीपक में जल जाऊँ।।
गुरूवर के चरणों में कोटि वंदन
आपकी शरण है सुरभित चंदन
मैं चंदन बनकर तेरे चरणों में लग जाऊँ।।१।।
मैं बाती बनकर...।।
हम दुखियाँ हैं तुम सुखियाँ हो
हम अंधे हैं, तुम अखियाँ हो
मैं काजल बनकर तेरी आँखों में लग जाऊ।।२।।
मैं बाती बनकर...।।
हम तारे हैं, तुम इन्दु हो
हम बिन्दु हैं तुम सिन्धु हो
मैं लहर बनकर, तुझमें विलीन हो जाऊँ।
मैं बाती बनकर...।।

गुरूवर आये

तर्ज–(झिलमिल सितारों का...)

अमृत पिलाने गुरूवर आये, दर्शन दिखाने गुरूवर आये
ज्ञान ध्यान से मेघ बरसाने गुरूवर आये।।टेक।।
बहुत दिनों से मन में लगी इन्तजार थी
जल्दी पधारें प्रार्थना ये बार–बार थी
प्यास बुझाने गुरूवर आये ।।१।।
पैर जहाँ धरते, धरती वहीं भाग्यशाली है
लहलहाता बाग आता, बाग का जब माली है
कलियाँ खिलाने गुरूवर आये ।।२।।
वाणी से फूल झड़ते, जीवन से ज्योति है
प्रवचनों में मिलते इनके हीरे पन्ने मोती हैं
दौलत लुटाने गुरूवर आये ।।३।।
छोटी सी पतंग मेरी मेरे दीनानाथ है
जीवन की डोरी अब तो आपके ही हाथ है।
ऊँचा उठाने गुरूवर आये ।।४।।

अरिहंत देव स्वामी

अरिहंत देव स्वामी शरण तेरी आये–२
दुख से हैं व्याकुल कर्मो के सताये।।टेक।।
निज कर्म काट करके आप सिद्ध हो गये हो
तारण तरण तुम्हीं हो जिनवाणी बताये
अरिंहत देव स्वामी ।।१।।
शक्ति है तुझमें ऐसी, कर्म काटने की
छोड़कर तुम्हें हम, किसकी शरण जायें
अरिंहत देव स्वामी ।।२।।
मझधार में पड़ी है प्रभुजी नाव मेरी
भव पार तुम लगा दो, आस लेके आये
अरिंहत देव स्वामी ।।३।।
तारा है तुमने उनको जिसने भी पुकारा
हम भी पुकारते हैं, तुझसे लौ लगाये
अरिंहत देव स्वामी।।४।।

पालना १

महावीरा झूले पलना, नेक होले झोटा दीजो ।टेक।।
कौन से घर तेरी जन्म भयो है, कौन ने जायो ललना।।१।।
सिद्धारथ घर जन्म भयो है, त्रिशला ने जायो ललना।।२।।
काहे को तेरो बनो पालना, काहे के लागे फुंदना।।३।।
अगर चन्दन को बनो रे पालनना, रेशम के लागे फुंदना।।४।।
पैरों में घुँघरू हाथ में झुंझना, आँगन में चाले ललना।।५।।
अन्दर से बाहर लै आवे, बाहर से अन्दर लै जावे।
नजर न लग जाये ललना।नेक होले.....

पालना २

मेरो अभी अभी सोयो है, जगइयो मती ना,
ऐ जगइयो मती ना, ऐ रूलइयो मती ना।टेक।।
त्रिशला माता अरज करत हैं,
ऐजी कोई महलों में, शोर मचइयो मती ना।१।।
माता जी पलना में सुलाये
एजी कोई जोर से, डोर हिलइयो मती ना।।२।।
लेके बलइयाँ अपने लाल की, हाथी घोड़ा और पालकी
एजी कोई जोर से, बतरैये मती ना।।३।।
नर–नारी देखन को आवें, मेर मन में डर यों लागे।
एजी कोई अपनी नजर को, लगइयो मती ना।।४।।
महिला मण्डल अरज करत है, वीर प्रभु का दर्शन करत है
एजी कोई वीरा से, नेह हटइयो मती ना।।५।।

पालना ३

झुला रहे सब पालना, और देखूँ तेरो ललना।
बोल मइया बोल दर्शन होगा कि नहीं।।टेक।
देश–देश के नगर–नगर के, नर नारी बहु आय रहे हैं।
तरह–तरह के वस्त्राभूषण, भेंट प्रभु जी को लाय रहे हैं।
मुझको है अब चलना, जरा झुला लूँ पलना।।१।।
एक बार तेरे ललना को, पलना जो भी झुलाते हैं।
भव–भव के बंधन सब उनके, पल भर में कट जाते हैं।
मुझको है अब चलना, जरा झुला लूँ पलना।।२।।
सफल भई तेरी आज नगरिया, जायो ऋषभ जिनन्दा को।
जिनके दर्शन से अघभागत, काटन कर्मन फंदा को।
''पंकज'' गायो पलना, जरा झुला लूँ ललना।।३।।

पालना ४

मैने तेरे ही भरोसे भगवान, सागर में नैया डार दई।टेक।।
काहे की तेरी नाव नबरिया, काहे की पतवार।
धर्म की मेरी नाव नबरिया, समकित की पतवार।।१।।
को है जामें बैठन हारो, को है खेवनहार।।२।।
अरे! आतम जामें बैठन हारो, प्रभु जी खेवनहार।।२।।
जनम–जनम का मैं दुखियारा, भव–भव में दुख पाया।
सारी दुनिया से निराश हो, शरण तुम्हारी आया।।३।।
बड़े भाग्य से तुमको पाया, अब न कहीं जाऊँगा।
मुझे मोक्ष पहुँचा दो स्वामी, फिर न कभी आऊँगा।।४।।

दयालु प्रभु से हम

दयालु प्रभु से हम दया माँगते है,
अपने दु:खो की दवा माँगते हैं।
नहीं हम सा कोई अधम चोर पापी,
सत्कर्म हमने किए न कदापि।
किये नाथ हमने हैं अपराध भारी,
उनकी हृदय से क्षमा माँगते हैं।।१।।
प्रभु तेरी भक्ति में मन यह मगन हो, निजातम
चिंतन की हरदम लगन हो।
मिले मुझको सत्संग करे आत्मचिन्तन, वरदान
भगवान से सदा माँगते हैं।।२।।
दुनिया में भोगों की नही कुछ कामना स्वर्ग के
सुखों की भी नही कुछ चाहना
यही एक आशा है बन जाए तुमसे,
''भक्त'' पैसा न टका कुछ माँगते हैं।।३।।

मानव तुम सांसो को इतना मत प्यार करो।
देह को न मानव, तुम इतना दुलार करो।
सांसे छल जायेगी, किस क्षण विश्वास नहीं।
आत्मा अनश्वर है, इसका श्रंगार करो।।

पार्श्व प्रभु जी पार लगा दो

तर्ज:— नगरी—नगरी द्वारे—द्वारे

पार्श्व प्रभु जी पार लगादो, मेरी ये नावरिया
बीच भँवर में आन फँसी है, काढ़ो जी साँवरिया।टेक।।
धर्मी तारे बहुत ही तुमने, एक अधर्मी तार दो
वीतराग है नाम तिहारा, तीन जगत हितकार हो।
अपना विरद निहारो स्वामी, काहे को विसरिया।।१।।
चोर भील चांडाल हैं तारे, ढील क्यों मेरी बार है
नाग—नागनी जरत उबारे, मन्त्र दिया नवकार है
दास तुम्हारा संकट में है, लीजो जी खबरिया।।२।।
लोहे को जो कंचन करदे, पारस नाम प्रमाण है
मैं हूँ लोहा तुम प्रभु पारस, क्यों न फिर कल्याण हो
नाथ मिटा दो अब तो मेरी, भव—भव की घुमरिया।।३।।
भटक रहा हूँ मैं भव सागर, आपका मुक्ति निवास है
अपने पास बुलालो मुझको, एक ये ही अरदास है
भूल रहा हूँ नाथ बताओ, शिवपुर की डगरिया।।४।।

सोते सोते में निकल गई

सोते सोते में निकल गई, सारी जिन्दगी।
सारी जिन्दगी, हो तेरी प्यारी जिन्दगी।।
बोझा ढोते में निकल गई।।टेक।।
जनम लेत ही इस धरती पर, तूने रूदन मचाया।
आँखें भी न खुलने पाई, भूख–भूख चिल्लाया।।
रोते–रोते में निकल.....।।१।।
खेलकूद में बचपन बीता, यौवन पा बौराया।
धर्म कर्म का मर्म न जाना, विषय भोग मस्ताया।।
भोगों–भोगों में निकल गई.....।।२।।
धीरे–धीरे बढ़ा बुढ़ापा, डगमग डोले काया।
सबके सब रोगों ने देखो, डेरा खूब जमाया
रोगों–रोगों में निकल गई....।।३।।
जिसको तू अपना समझे था, वह दे बैठा धोखा।
प्राण गये फिर जल जायेगा, ये माटी का खोका।।
खोका ढोने में निकल गई।।४।।

प्रभु रथ में हुए सवार

प्रभु रथ में हुए सवार, नकारा बाज रहा।टेक।।
क्या ठुमक–२ रथ चलता है, ये छत्र शीश पे हिलता है।
क्या छाई अजब बहार।१।। नगाड़ा बाज रहा....प्रभु.....
किस छवि से नाथ विराज रहे, नाशा दृष्टि से साज रहे।
अद्भुत बाजे सब बाज रहे, सब बोलो जय–जयकार।।२।।
नगाड़ा बाज रहा....प्रभु.....
ढोलक और बजे नकारा है, बाजे का स्वर अति प्यारा है।
तबले का ठुमका न्यारा है, झांझर की हो झनकार।।३।।
नगाड़ा बाज रहा....प्रभु.....
कहे किशन जारचे वाला है, तेरे नाम पै वो मतवाला है।
सब पियो धर्म का प्याला है, हो भवसागर से पार।।४।।
नगाड़ा बाज रहा....प्रभु.....

गुरू ही संस्कृति की नीव है, जिस पर आस्था का महल है
विश्वास की ज्योत जगाकर चमकते जीवन कमल है
आस्था विश्वास अनुग्रह से महकाते जीवन सुमन है
जो तर्क विर्तक में उलझा, वो करता मृत्यु गमन है

गहरी-गहरी नदियाँ

गहरी–गहरी नदियाँ, नाव बीच धारा है।
तेरा ही सहारा प्रभु, तेरा ही सहारा है।टेक।।
डगमग करती है, कर्मों के भार से।
मार्ग भूल रहे, घोर अंधकार से।।
डूबती इस नाव का, तू ही खेवनहारा है।।
तेरा ही सहारा––१।।
अग्नि का नीर हुआ, तेरे ही प्रताप से।
कुष्ट रोग दूर हुआ, तेरे नाम जाप से।।
भव–भव दु:ख का तू ही, मेटनहारा है।।
तेरा ही सहारा––२।।
वीतराग छवि तेरी, लागे अति प्यारी है।
चरणों में नाथ जाऊँ, बलि–बलिहारी है।।
रूप तेरा देखकर, शान्त चित धारा है।।
तेरा ही सहारा––३।।

जो बार–बार आए, उसे मौत कहते हैं
जो एक बार आए, उसे मोक्ष कहते है।

करूणा सागर भगवान

तर्ज :— होठो से छू लो तुम

करूणा सागर भगवान, भव पार लगा देना
तूफां है बहुत भारी, मेरी नाव बचा लेना।।टेक।।
मोही बनकर मैंने, अब तक जीवन खोया।
अपने ही हाथों से, कांटों का बीज बोया।
अब तेरी शरण आया, दुख जाल हटा देना।।१।।
भगवन तेरी शक्ति से, संकट टल जाते हैं।
अज्ञान तिमिर मिटता, सुख का फल पाते हैं।
चरणों में पड़ा हूँ मै, मुझे राह बता देना।।२।।
लख चौरासी फिरके, बहु कष्ट उठाया है।
किया जनम—मरण फेरा, सुख चैन न पाया है।।
तेरे चरणों में मस्तक है, मुझे अपना बना लेना।।३।।

कितना आसान है आत्म घात कर लेना
कितना मुश्किल है आत्म ज्ञान कर लेना
कितना आसान है धर्म की बाते कर लेना
कितना मुश्किल है धर्म को धारण कर लेना

नर जन्म मिल गया था

तर्ज–यूँ ही कोई मिल....

नर जन्म मिल गया था, शुभ कर्म करते–करते।
हर बार रह गयी है, मेरी नाव तरते–तरते।।टेक।।
जीवन के इस शहर की, यूँ होगी शाम इक दिन।
कहता है रोज सूरज, हर बार ढ़लते–ढ़लते।।१।।
स्वारथ के इस नगर में, मेला है चार दिन का।
कहती हैं ये चितायें, हर बार जलते–जलते।।२।।
किसकी यहाँ रही है, किसकी यहाँ रहेगी।
रोयेगा वक्त आखिर, तू हाथ मलते–मलते।।३।।
कश्ती में तेरे ''प्राणी'', आश्रव का छिद्र है इक
डूबी है यूँ भंवर में, हर बार गलते–गलते।।४।।

दया अंहिसा के रवि, दिव्य तेरा प्रकाश
तेरे दर्शन मात्र से दुखों का होवे नाश
तेरे आश्रित को मिले, शुद्ध आलौकिक प्यास
प्रेम का दीपक जलते ही, मिट जाता अन्धकार

बैठ अकेला दो घड़ी

बैठ अकेला दो घड़ी, भगवत् के गुण गाया कर।
मन मन्दिर में ये जिया, झाड़ू रोज लगाया कर।।टेक।।
सोने में तो रैन गुजारी, दिन भर करता पाप रहा।
इसी तरह बर्वाद जिन्दगी, करता अपने आप रहा।
छोड कुसंगति को तू सत्संगति में आया कर।।१।।
पास तेरे है दुखिया कोई, तूने मौज उड़ाई क्या।
भूखा–प्यासा पड़ा पड़ौसी, तूने रोटी खाई क्या।
पहले सबसे पूछकर, फिर तू भोजन खायाकर।।२।।
नर तन के चोले का पाना, बच्चों का कोई खेल नहीं।
जनम–जनम के शुभ कर्मों का, होता जब तक मेल नहीं।
नर पाने के लिए, अच्छे कर्म कमाया कर।।३।।

करूणा सागर तुम गुरूवर, भरा दिगम्बर वेष
झटके हुये जनमानस को, दिया ज्ञान सन्देश
महासागर तू सत्य का, करे असत्य का अंत
अमृतमयी वाणी गुरूवर ही, अपरम्पार अनन्त

चाह जगी मुझे दरशन की

चाह जगी मुझे दरशन की, वीर चरण स्पर्शन की।
वीतराग छवि प्यारी है, जग–जन कीं मनहारी है।
मूरत मेरे भगवन की, चाह जगी मुझे दर्शन की।।१।।
कुछ भी नहीं, श्रृंगार किये, हाथ नहीं हथियार लिये।
फौज भगाई करमन की, चाह जगी मुझे दरशन की।।२।।
समता पाठ पढ़ाते हो, निज की याद दिलाते की।
नासा दृष्टि लखो इनकी, चाह जगी मुझे दरशन की।।३।।
हाथ पे हाथ धरा ऐसे, करना कुछ न रहा जैसे।
देख दशा पद्मासन की, चाह जगी मुझे दरशन की।।४।।
जो शिव आनन्द चाहो तुम, इन सा ध्यान लगाओ तुम।
विपत रहे भव भटकन की, चाह जगी मुझे दरशन की।।५।।

जिनका दर्शन पाने से, पतित भी पावन हो जाता है
मूक वचन माटी भी बोले, अतिशय ऐसा हो जाता है
दुखिया रोना बंद करे जब, शरण आपकी आ जाये
हमको दो आशीष गुरूवर, कर्मो का बन्धन कट जाये

केशरिया, केशरिया आज

केशरिया, केशरिया आज हमारो रंग केशरिया।।टेक।।
तन केशरिया, मन केशरिया, आज हमारो मन केशरिया।।
हम केशरिया तुम केशरिया, आज हमारो मन केशरिया।।
शांतिनाथ प्रतिमा केशरिया, महावीर भगवान केशरिया।।
कुंद–कुंद आचार्य केशरिया, धर्म के सागर हैं केशरिया।।
कुण्डल पुर नगरी केशरिया, सम्मेदाचल पर्वत केशरिया।।
सोनागिरि जी है केशरिया, पावापुर नगरी केशरिया।।
चौबीसों तीर्थंकर केशरिया, भक्ति के हैं भाव केशरिया।।
पुष्पदंत सागर केसरिया, पुष्पगिरि तीरथ केसरिया।।
सिद्धचक्र मण्डल केशरिया, प्रभु जी की प्रतिमा केशरिया।।
भक्त सभी हो रहे केशरिया, भक्ति उनकी है केशरिया।।
पूजा के सब थाल केशरिया, भाव बने सबके केशरिया।।

कौन सिखायेगा कलयुग में, धर्म ज्ञान दुष्कर बाते
कौन बनेगा पथ का पथिक, रस्ता जो भूले जाते
बिना गुरू के कभी न मिलता, थोड़ा अक्षर ज्ञान अरे
रूप मुनि में गुरू खड़े है, ये तीरथ भगवान बड़े

जैन धरम के हीरे मोती

जैन धरम के हीरे मोती, मैं बिखराऊँ गली–गली।
ले लो रे कोई प्रभु का प्यारा, शोर मचाऊँ गली–गली।टेक।।
दौलत के दीवानों सुन लो, इक दिन ऐसा आयेगा।
धन–दौलत और माल खजाना, पड़ा यहीं रह जायेगा।
सुन्दर काया मिट्टी होगी, चर्चा होगी गली–गली।।१।।
क्यों करता तू मेरी–मेरी, तज दे इस अभिमान को।
झूठे झगड़े छोड़ के प्यारे, भज ले तू भगवान को।
जगत का मेला दो दिन का है, अंत में होगी चला चली।।२।।
जिन–जिन ने ये मोती लूटे, वो ही माला माल हुए।
दौलत के जो बने पुजारी, आखिर में कंगाल हुए।
सोने चाँदी वाले सुन लो, बात कहूँ में खरी खरी।।३।।
जीवन में दुख है तब तक ही, जब तक सम्यक् ज्ञान नहीं।
ईश्वर को जो भूल गया, वो सच्चा इंसान नहीं।
दो दिन का यह चमन खिला है, फिर मुरझाये कली–कली।।४।।

संत साधु बन के विचरूँ

संत साधु बन के विचरूँ, वह घड़ी कब आयेगी।
चल पड़ूँ मैं मोक्ष पथ में, वह घड़ी कब आयेगी।।टेक।।
हाथ में पीछी कमण्डल, ध्यान आतम राम का।
छोड़कर घरबार दीक्षा, की घड़ी कब आयेगी।।१।।
आयेगा वैराग्य मुझको, इस दु:खी संसार से।
त्याग दूँगा मोह ममता, वह घड़ी कब आयेगी।।२।।
पाँच समिति तीन गुप्ति, बाइस परिषह भी सहूँ।
भावना बारह जु भाऊँ, वह घड़ी कब आयेगी।।३।।
बाह्य उपाधि त्याग कर, निज तत्व का चिंतन करूँ।
निर्विकल्प होवे समाधि, वह घड़ी कब आयेगी।।४।।
भव भ्रमण का नाश होवे, इस दुखी संसार से।
विचरूँ मैं निज आत्मा में, वह घड़ी कब आयेगी।।५।।

कंकर को मत मारो ठोकर, हो सकता हो शंकर हो
मुनि का मत अपमान करो, हो सकता वो तीर्थंकर हो
मुनि परम्परा के कारण ही, धर्म जैन यह जिन्दा है
पाप नही हो सकता बढकर, करना मुनि की निन्दा है।

सांवलिया पारसनाथ शिखर

सांवलिया पारसनाथ शिखर पर भले विराजे जी।
भले विराजे, भले विराजे, भले विराजे जी।।टेक।।
टोंक–टोंक पर ध्वजा विराजे, झालर घंटा बाजे जी।
घन्टे के घनवाद घनाघन, अनहत बजा बाजे जी हो सांवलिया।।१।।
दूर–दूर से यात्री आवें, मन में लेकर चाव।
अष्ट द्रव्य से पूजा कीनी, पुष्प दिये चढ़ाय।।२।।
पैंड–पैंड पर सिंह दहाड़े, तहाँ भीलों का वासा।
जहाँ प्रभु तुम मोक्ष गये थे, वहाँ लियो निरवासा।।३।।
दूर–दूर से भील भी आये, जिनकी मोटी चोटी।
जिनके पास दया धर्म नहीं मन में उनकी किस्मत खोटी।।४।।

तेरी मूरत इतनी सुन्दर

रूप तुम्हारा जग से न्यारा, कब तेरा दर्शन होगा।
तेरी मूरत इतनी सुन्दर, तू कितना सुन्दर होगा।।
सुर नर मुनिजन तुम चरणों में, निशदिन ध्यान लगाते हैं।
जो भी आते चरण कमल में, मन वांछित फल पाते हैं।।
भव पार उतरने को, बस तेरा ही शरणा होगा।।१।।
दीन दयाल दया के सागर, जग में नाम तिहारा है।
दीन दु:खी जीवों को स्वामी, तेरा एक सहारा है।
जाऊँगा मैं स्वर्ग मोक्ष, संगीतों का सरगम होगा।।२।।

गुरूदेव तेरे दर पर

गुरूदेव तेरे दर पर, आये हैं सर झुकाने।
गुरू हम पे दया करना विनती हजार करते।।
महावीर....

रूठे अगर जमाना, गुरू तुम न रूठ जाना।
चरणों में तेरे आयी, हमको गले लगाना।।
मुझे दास अपना रखना, विनती हजार करते।
गुरूदेव....

निकले ये जान मेरी, चरणों में आपही के।
निशदिन करूं मैं पूजा, चरणों में आपही के।
नैया पड़ी है मेरी, भव सिन्धु के भँवर में।
अब तेरा ही सहारा, जीवन की इस डगर में।
संसार पार करना, भव से निकाल करके।
गुरूदेव....

मानव को क्रोध से नही, प्रेम से जीतो
क्रोध को क्रोध से नही क्षमा से जीतो
यदि किसी का दिल जीतना चाहते हो
तो अधिकार से नही समर्पण से जीतो

रंग लाग्यो महावीर

रंग लाग्यो महावीर, थारो रंग लाग्यो।।टेक।।
थारी भक्ति करवानों, म्हारे भाव जाग्यो । रंग।
थारी पूजा करवानों, म्हारो भाव जाग्यो । रंग।
थारा कीर्तन करवानों, म्हारो भाव जाग्यो । रंग।
थारा दर्शन करवानों, म्हारो भाव जाग्यो । रंग।
थारा रथ निकलवानों, म्हारो भाव जाग्यो । रंग।
थारे चरणों में वीर, प्रभु मैं जाग्यो । रंग।
थारा कलश करवानों, म्हारो भाव जाग्यो । रंग।
थारी प्रभावना करवानों, म्हारो भाव जाग्यो । रंग।
थारो मंदिर बनवानों, म्हारो भाव जाग्यो । रंग।
थारी वाणी सुनवानों, म्हारो भाव जाग्यो । रंग।
थारी भक्ति मैं मुक्ति का द्वार पायो । रंग।
स्वयं सिद्ध बन जाऊँ, म्हारो भाव जाग्यो । रंग।

गुरूवर आज मेरी कुटिया में आये हैं

गुरूवर आज मेरी कुटिया में आये हैं।
चलते फिरते तीर्थ पाये है आ–आ–आ

गुरूवर आज.....

हाथ कमण्डल बगल में पीछी है,
गुरूवर पर सारी दुनिया रीझी है।
आहार करके नर नारी हरषाये हैं।

गुरूवर आज.....

नग्न दिगम्बर साधु बड़े प्यारे हैं
जैन धरम के ये ही तो सहारे हैं
ज्ञान के सागर ज्ञान बरसाये हैं।

गुरूवर आज.....

अरूण सागर जी साधु बड़े प्यारे हैं
जैन भक्तों के ये ही सहारे हैं
ज्ञान के सागर ज्ञान बरसाये हैं

गुरूवर आज.....

जहाँ भक्त नहीं होंगे

जहाँ भक्त नहीं होंगे, भगवान कहाँ होगा।
हर एक समस्या का समाधान कहाँ होगा।।टेक।।
मेहमान भी आते है, मेहमानी भी होती है।
पर भक्त सुदामा सा, मेहमान कहाँ होगा।।१।।
विद्वान भी होते हैं, विद्वानी भी होती है।
पर रावण जैसा तो, विद्वान कहाँ होगा।।२।।
दानी भी होते हैं, और दान भी करते हैं।
पर कर्ण जैसा, कोई दानी कहाँ होगा।।३।।
धर्म भी होते हैं, और धर्मी भी होते हैं।
पर जैन धर्म धरम जैसा, कोई धर्म कहाँ होगा।।४।।

दिखता है ज्ञान चक्षु में

दिखता है ज्ञान चक्षु में, आगम कभी–कभी।
मिलता है गुरूजनों का, समागम कभी–कभी।।टेक।।
मिलती है जिसके दौर से, मुक्ति की मंजिलें।
होता है ऐसा भावों का, आलम कभी–कभी।।१।।
जिनवाणी और सुकुल मिले, किस्मत की बात है।
होता है उनका पुण्य से, संगम कभी–कभी।।२।।
मुक्ति वधू को वरते हैं, जाकर जो मोक्ष में।
जाते हैं शिवपुरी को वो, बालक कभी–कभी।।३।।

चाला चाला रे प्रभु का रथ

चाला चाला रे प्रभु का रथ होले–होले।
गुरूवर की भक्ति में मेरा मन डोल।।
वीरा की भक्ति में म्हारो मन डोल।।
तेरी महिमा सुनकर गुरूवर, बड़ी दूर से आया।
तेरे दर्शन के कारण मैं, दौड़ा–दौड़ा आया।
करो करो रे प्रभु के दर्शन, होले–होले।।१।।
तेरी पूजा करने प्रभुवर, बड़ी दूर से आया।
तेरी पूजा के कारण मैं, अष्ट द्रव्य ले आया।
करो करो रे प्रभु की पूजा, होले–होले।।२।।
तेरी आरती के कारण मैं, घर से मन्दिर आया।
रत्न आरती लेकर मैं तो, दौड़ा–दौड़ा आया।।
करो–करो रे प्रभु की आरती, होल–होले।।३।।

जिन आगम में सब कुछ लिखा, कलयुग की है मर्यादा
मुनि नही कर सकते युग में, तप इससे कोई ज्यादा
चतुर्थ काल से मुनि न होगे, ना होगे वैसे श्रावक
मुनियों के दर्शन होना भी, होगा इक अचरज भारी

चल दिया छोड़ घर बार

चल दिया छोड़ घर बार, कुटुम्ब परिवार धरा,
मुनिवाना समझाया वीरा न माना।।टेक।।
माता अति रूदन मचाती है, यों बार–बार समझाती है।
बेटा कुछ दिन पीछे ही वन को जाना।।१।।
बोले माता क्यों रोती है, जो होनहार सो होती है।
उठ गया मेरा इस घर से पानी दाना।।२।।
सिद्धारथ नृप समझाते यों, बेटा तुम वन जाते क्यों,
क्या घर में कुछ कमी, हमें बतलाना।।३।।
मेरी यह वृद्ध अवस्था है, घर की को करे व्यवस्था है।
ले राज पाठ तू सब पर हुकुम चलाना।।४।।
मेरा घर से कुछ काम नहीं, पल भर लूँगा आराम नहीं।
इस सोते हुए जगत को मुझे जगाना।।५।।
यहाँ खून की होली खिलती है, हिंसा की ज्वाला जलती है।
यह दृश्य देखकर हृदय मेरा अकुलाना।।६।।
पशुओं पर खंजर चलते हैं, लाखों यज्ञ में जलते है।
कहते इनको मिल जायेगा, स्वर्ग विमाना।।७।।
हिंसा में धर्म बताते हैं, वेदों को खोल दिखाते हैं।
उन वे अक्लों की अक्ल ठिकाने लाना।।८।।

तुम्हारे दर्श बिन गुरूवर

तुम्हारे दर्श बिन गुरूवर, हमें न चैन पड़ती है।
छवि वैराग्य की तेरी, मेंरी आँखो में फिरती है।।
निराभूषण विगत दूसण, पद्म आसन मधुर भाषण।
नजर नयनों की नाशा से, अनीपर से गुजरती है।।
तुम्हारे.....

हजारों मूर्तें हमने, बहुत ही गौर कर देखीं।
शान्ति मुद्रा तुम्हारी सी, नहीं आँखों में चढ़ती है।।
तुम्हारे.....

नहीं कर्मो का डर हमको, कि जब तक ध्यान चरणों में।
तेरे दर्शन से है भगवन् कर्म रेखा बदलती है।।
तुम्हारे.....

मिले अगर स्वर्ग की सम्पदा अचम्भा कौन है इसमें।
तुम्हें जो नैन भर देखे, गति दुर्गति की टलती है।।
तुम्हारे.....

जगत सरताज हो जिनराज सेवक को दर्श दीजे।
तुम्हारा क्या बिगड़ता है मेरी बिगड़ी सुधरती है।।
तुम्हारे.....

जैनी होके पानी न छाना

तर्ज:– दीदी तेरा देवर....

जैनी होके पानी न छाना,
हाय राम रातों में खाये खाना।
पापों में ना खुद को उलझाना,
नादान नरकों में होगा जाना।टेक।।
जब बिजली जलेगी, पतंगे उड़ेंगे,
उड़–उड़ के थाली में, तेरे गिरेंगे।
फिर भी लागे तुमको सुहाना,
हाय राम रातों में खाये खाना।१।।
सोचा था भोगों से प्यास बुझेगी,
मगर ये ना जाना कि और बढ़ेगी।
भोगों में खुद को न फंसाना,
नादान नरकों में होगा जाना।।२।।
प्रभु की शरण ही दुखों से बचाये,
प्रभु की शरण ही, करम को नशावे।
नरकों से गर खुद को बचाना,
नादान प्रभु की शरण में आना।।३।।

चरणों में आया हूँ

तर्ज :— होठों से छूलो तुम...

चरणों में आया हूँ, हमें अपनी शरण ले लो।
भटकता हूँ राहों में, मुझे ज्ञान किरण दे दो।टेक।।
सुख की अभिलाषा है, संसार सकरा है।
सबको माना अपना, यह दोष हमारा है
शुद्धातम हो अपना, अज्ञान तिमिर हर लो।।१।।
कर्मों के सताये हैं, भव वन में रूलाये हैं।
चौरासी के चक्कर, कई बार यूँ खाये हैं।
सब बंधन काट सके, वह शक्ति मुझे दे दो।।२।।
तोड़ा जग से नाता, तुम्हें सब कुछ माना है।
सर्वज्ञ हितैषी हो, जग ने पहिचाना है।
हम दास हैं चरणों के, पहिचान अमर कर दो।।३।।

जो हाथ तेरा सर पर फिर क्या है मुझको डर
इतनी सी दया तू कर छूटे न तुम्हारा दर
तुम मीत मेरे बनकर मेरी प्रीत अमर कर दो
छू लेने दो चरणों को मेरा जीवन सफल कर दो
इस जनम में न सही पर भव में मिलता है

अरे हाय हाय ये मजबूरी

अरे हाय हाय ये मजबूरी, तेरी हो गई उमरिया पूरी,
तुझे पल–पल ये तड़पाये, तेरी साठ बरष की जिन्दगी
भोगों में बीती जाये।टेक
कितने जीवन बीत गये, बैठी हूँ आस लगाये।
जिस जीवन में मोक्ष मिले, वह जीवन भी कब आये।।
समयसार का यह समय, हाथों से निकला जाये।१।।
कोन सा ऐसा जीवन है, जो मिलके फिर ना छूटे।
इन विषयों का क्या भरोसा, आये फिर कब छूटे।।
सदगुरू का मिला समागम, फिर पीछे पछताये।।२।।

जरा फुर्सत में बैठकर सोचना,
हमने तुम्हारे लिए क्या नहीं किया
कौन सा ऐसा फर्ज था इन्सानियत का,
जो हमने अदा नहीं किया
एक पल में तोड़ देती है,
सभी रिश्ते ये स्वार्थी दुनियाँ
सच्चाई के लिए कुछ भी सजा मिले,
पर मैंने कोई गुनाह नहीं किया।

जिनवाणी माता, दर्शन की

जिनवाणी माता, दर्शन की बलिहारियाँ।।टेक।।
प्रथम देव अरहंत मनाऊँ, गणधर जी को ध्याऊँ।
कुन्दकुन्द आचार्य हमारे, तिनको शीश नवाऊँ।।१।।
लख चौरासी योनि माँहिं, घोर महादु:ख पायो।
ऐसी महिमा सुनकर माता, शरण तुम्हारी आयो।।२।।
जाने ताकौ शरणो लीनो, अष्टकर्म क्षयकीनो।
जामन–मरण मेट के माता, मोक्ष महापद दीनो।।३।।
ठाड़े श्रावक अरज करत हैं, हे जिनवाणी माता।
द्वादशांग चौदह पूरब कौ, कर दो हमको ज्ञाता।।४।।
बार–बार में विनवो माता, महर जु मोपे कीजे।
पार्श्वदास की अरजी सुनकर, चरण शरण में लीजे।।५।।

सत्य को पहचानते तो, जिन्दगी संवर गई होती
इतना धर्म किया तो, सच्ची राह मिल गई होती
धर्म को स्वार्थानुसार न किया होता उम्र भर तुमने
अब तक जीवन की खाली झोली, खुशियों से भर गई होती।।

वाणी सरस्वती तू

वाणी सरस्वती तू, जिनदेव की दुलारी।
स्याद्वाद नाम तेरा, ऋषियों की प्राण प्यारी।।टेक।।
सुर नर मुनींद सब ही, तेरी सुकीर्ति गावें।।
तुम भक्ति में मगन हो, तो भी पार न पावें।।१।।
इस गाढ़ मोह मद में, हमको नहीं सुहाता।
अपना स्वरूप भी तो, नहिं मातु याद आता।।२।।
ये कर्म शत्रु जननी, हमको सदा सताते।
गति चार माहीं हमको, नित दुःख दे रूलाते।।३।।
तेरी कृपा से माँ कुछ, हम शान्ति लाभ करलें।
तुम दर्श ज्ञान बल से, निज–पर पिछान करलें।।४।।
हे मात तुम चरण में, हम शीश को झुकावें।
दे ज्ञान दान हमको, जबलों न मोक्ष पावें।।५।।

मानव तुम सांसो को इतना मत प्यार करो
देह को न मानव, तुम इतना दुलार करो
सांसे छल जायेगी, किस क्षण विश्वास नहीं,
आत्मा अनश्वर है, उसका श्रृंगार करो

चूनरिया शिवधाम की

चूनरिया शिवधाम की, मँगाय दे सावरिया–२
मैं तो पूजा पाठ रचाऊँगी।।टेक।।
चूनरिया के ऊपर, मैना सुन्दरी की तस्वीर हो।
किनारे–किनारे बहता, रत्नत्रय का नीर हो।
भव सागर से नैया तारे, देखे सब नगरिया।।१।।
सीता और राजुल ने ओढ़ी, मैं भी इक बनावाऊँगी।
चंदन वाला साया बनकर, शील का नीर बहाऊँगी।
भव सागर से नैया द्वारे, देखे सब नगरिया।।२।।
लाल नहीं ओढूँगी मैं, नीली नहीं ओढँगी।
हो ज्ञान रंग चुनरिया, मगाय दे सावरिया।।३।।
ओढ़ के चुनरिया, अपनी सखियों को दिखाऊँगी।
समता के साबुन से धोकर, शील का नील बहाऊँगी।
भव सागर से नैया, हो देखे सब नगरिया।।४।।

धर्म की राह पर चलने वाले पहले बदनाम होते हैं
फिर सोमासती व चन्दना की तरह उनके नाम होते हैं
वो सदियों तक याद बनकर सदा दिल में रहते हैं
जिनको मिटाने के लिए, समाज के ही इन्सान होते हैं।

जन्माभिषेक आरती

सुरपति ले अपने शीश जगत के ईश गये गिर राजा
जा पाण्डुक शिला विराजा।टेक।।
शिल्पी कुबेर वहाँ आ करके क्षीरोदधि मेरू लगा करके
रूचि पैढि ले आये सागर का जल ताजा
फिर न्हवन कियो जिनराजा।सुरपति।।
नीलम पन्ना वैडूर्यमणि कलशा लेकर के देवगणी
एक सहस आठ कलशा लेकर नभराजा
फिर न्हवन कियो जिनराजा।सुरपति.।।
वसु योजन गहराई वाले चऊ योजन चौड़ाई वाले
इक योजन मुख के कलश ढरे जिनमाथा
नहि जरा डिगे शिशुनाथा।सुरपति.।।
सौधर्म इन्द्र अरू ईशान, प्रभु कलश करें धर युग पाना
अरू सनत्कुमार महेन्द्र दोऊ जिनराजा
शिर चमर ढुरावें साजा।सुरपति.।।
ऐरावत पुनि प्रभु ला करके, माता की गोद बिठा करके
अति अचरज ताण्डव नृत्य कियो दिविराजा
स्तुति करके जिनराजा।सुरपति.।।

झीनी-झीनी उड़े रे गुलाल

झीनी–झीनी उड़े रे गुलाल,
चालो रे मंदरिया में
चालो रे मंदरिया में,
चालो रे मंदरिया में।।टेक।।
म्हारा तो गुरूजी आत्मज्ञानी,
ज्ञान की जिसने ज्योत जगा दी
ज्ञान का भरा रे भंडार,
चालो रे मंदरिया में।।१।।
वीरप्रभु जी दया के सागर,
महावीर प्रभुजी दया के सागर
शीश झुकाऊँ बारम्बार,
चालो रे मंदरिया में।।२।।
वीर प्रभु के चरणों में आए,
आकर चरणों में शीश नवाए
हो रही जय–जयकार,
चालो रे मंदरिया में।।३।।

तूने खूब रचा भगवान

तूने खूब रचा भगवान, खिलौना माटी का
तू भी पहचाना न इन्सान, खिलौना माटी का।टेक।।
तेरी माया को तू ही पहचान खिलौना
नैन दिए प्रभु दर्शन कर लें, कान दिए सुन ज्ञान
खिलौना माटी का।। तूने खूब...
जीभ दी है वीर गुण गाले, हाथ दिये कर दान
खिलौना माटी का।। तूने खूब...
पैर दिये है यात्रा करन को, चढ़ जा शिखर गिरनार
खिलौना माटी का।। तूने खूब...
निश दिन प्रीत भगवान चरणों में, कटे हैं कर्म जंजाल
खिलौना माटी का।। तूने खूब...

अति शुभ कर्मों के आने से,
संतों का समागम मिलता है।
सन्तो की वाणी सुनने से
दुख जन्म मरण का मिटता है।।

ढ़ोल बजा के बोल

ढ़ोल बजा के बोल, गुरूवर मेरे हैं,
ताली बजा के बोल, गुरूवर मेरे हैं।
झूम–झूम के बोल, गुरूवर मेरे हैं,
नाच–नाच के बोल, गुरूवर मेरे हैं।
कोई कहे काला, कोई कहे गोरा,
गुरूवर चाँद चकोर गुरूवर मेरे है। मेरे हैं, बस मेरे हैं,
झूम–झूमकर...।१।।

कोई कहे सोना, कोई कहे चाँदी,
कोई कहे हीरा, कोई कहे मोती
गुरूवर हैं अनमोल, गुरूवर मेरे हैं,
नाच–२.....।।२।।

कोई कहे उत्तर, कोई कहे दक्षिण,
कोई कहे पूरब, कोई कहे पश्चिम
गुरूवर हैं चहुँओर, गुरूवर मेरे हैं,
झूम–झूमकर....।।३।।

कोई कहे पतला, कोई कहे मोटा,
कोई कहे लम्बा, कोई कहे छोटा
गुरूवर हैं समतोल, गुरूवर मेरे हैं,
ढ़ोल बजाकर....।।४।।

दुनिया में ऐसा

दुनिया में ऐसा कहाँ सबका नसीब है।
कोई–कोई अपने, गुरू के करीब है।।टेक।।
कोई बुझा दे चाहे, दीपक सारे।
गुरू ही दिखाए, आके राह के तारे।।
पास हो माँझी, तो किनारा भी करीब है।।१।।
आँखा भारी है मेरी, पथ अँधियारा।
राह न सूझे गुरूवर, दे दो सहारा।।
गुरू चरणों में जो है, वो खुश नसीब है।।२।।
गुरू छोड़कर के आये, दुनिया के रिश्ते।
हमको निकालो दल दल के बीच से
मन में हमारे गुरू भक्ति का संगीत है।।३।।

हसों तो ऐसा हसों, कि हसना बाकी न रहे
रोओं तो ऐसा रोओ, कि रोना बाकि न रहे
आओ तो ऐसा आओ, कि आना बाकी न रहे
जाओ तो ऐसा जाओ, कि जाना बाकी न रहे।

वीरा तेरी वाणी अमृत

तर्ज :— गगां तेरा पानी अमृत

वीरा तेरी वाणी अमृत जग में फैली जाय
भाव शुद्ध कर जो भी सुनता मुक्ति को पा जाय
नरको से आया है जग में कुछ नही पहचाने
यह भी मेरा वो भी मेरा पर को अपना माने
वीर वाणी सुनले भैया संयम को पा जाय
वीणा तेरी.....

तेरी वाणी इतनी सुन्दर अमृत है बरसाये
द्रव्यों और तत्वों का वर्णन ये हमको समझाये
जिओ और जीने दो सबको ये सन्देश बतायें
वीणा तेरी.....

पुण्य कर्म का उदय मिला नर गति तून पाई
पर में आसक्ति करके यू ही उम्र बिताई
अन्त समय में फिर भटकता फिर पीछे पछताये
वीणा तेरी.....

जीवन ये अनमोल है तेरा इसे नायू ही गवाँना
सम्यक दर्शन ज्ञान चारित्र से आत्म शुद्धि पाना
'मानव' कहता हाथ जोड़ कर वीर शरण में जाय
वीणा तेरी.....

चौबीसी स्तवन

बैल चिन्ह आदीश का, हाथी अजित जिनेश।
घोड़ा सम्भव नाथ का, बंदर अभिनन्देह।।
चकवा सुमतिनाथ का, कमल पदम का जान।
स्वस्तिक श्री सुपार्श्व का, चन्द्र–चन्द्र प्रभु नाम।।
पुष्पदंत का मगर है, शीतल कल्प वृक्षासं।
गेड़ा श्री श्रेयांस का, वासुपूज्य में भैंसा।।
सूकर विमल जिनेश का, सेही अन्नत सूजान।
धर्मनाथ का वज्र है, शांति नाथ मृग जान।।
बकरा पग में कुंथु के, अरहनाथ के मच्छ।
कलशा सोहे मल्लि के मुनिसुव्रत के कच्छ।।
नील कमल नमि चिन्ह है, शंख नेमी का जान।
पार्श्वनाथ का सर्प है, वर्धमान सिंह भान।।

भावना से बड़ा भगवान नही होता
कल्पना से बड़ा पाषाण नही होता
देवताओं की तरह पूजते तो देखा बहुतो को
मगर हर इंसान इन्सान नही होता

सिद्ध पुरी को करने गमन

सहजपुर में जन्म लिया, सिद्ध पुरी को करने गमन,
बाबू लाल के पुत्र कहाये, शांति बाई के सुनन्दन्।
बचपन में राजेश कहाये, मुनि बनके तुम हुये अरूण,
ऐसे मुनिवर अरूण सागर को मेरा शत् शत् बार नमन।।
आ० पुष्पदन्त की वाणी सुन, खुल गये तव अन्तर के नयन,
गुरू पुष्पदन्त को गुरू बनाया, वरने को मुक्ति दुल्हन।
गुरू आशीष से होता सुरभित और प्रफुल्लित तव अन्तरमन,
ऐसे मुनिवर अरूण सागर को मेरा शत् शत् बार नमन।।
चौबीस वर्ष तो पूर्ण किये, अब चाहू तेरा मुक्ति गमन,
सूरज की प्रत्येक किरण, करे तुम्हारा आत्म न्हवन।
मेरी है बस यही कामना, होवे तुम्हारा उर्ध्व गमन,
ऐसे मुनिवर अरूण सागर को मेरा शत् शत् बार नमन।।

दबें पांव मौत आती है आने दो
आहट मिल जाए तो मन मत घबराने दो
निश्चित ही मृत्यु से जीवन का अन्त नहीं
प्राण मुखर होते हैं, देह बदल जाने दों।

गुरूवर तुम में

गुरूवर तुम में है कुछ बात,
जो हम दर्शन को नित आयें–२
तुमको शत् शत् शीश नवायें,
हम दर्शन को नित आयें।
गुरूवर.....

बाबूलाल के प्यारे,
तुम शान्ति के दुलारे
जग में हो रही जय–जयकार,
हम दर्शन को नित आयें।
गुरूवर....

तेरा सरल सहज स्वभाव,
हम सबको लगता प्यारा,
तेरी मीठी बाते भायें,
हम दर्शन को नित आयें।
गुरूवर....

तू ज्ञानी है तू ध्यानी,
ये बात है हमने मानी,
तेरी रज को शीश लगायें,
हम दर्शन को नित आयें।
गुरूवर....

आशीष अपना गुरूवर
जरा हमको भी दे देना,
पावन ये जीवन बन जाये,
हम दर्शन को नित आयें।
गुरूवर....

छू लेने दो चरणों को

तर्ज :– होठो से छूलो तुम

छू लेने दो चरणों को मेरा जनम सफल कर दो
जीने की राह दिखा मेरा जीवन सफल कर दो
देखा करती हूँ मैं, दिन रात तेरा सपना
मुझे चाहे कोई न यहाँ, तू है मेरा अपना
अपनाकर मुझे गुरूवर, मेरा सपना सफल कर दो
जीने की.....

दुख दर्द अनेको है चहुँ ओर से आफत है
लड़ने की थपेड़ों से मुझमें नहीं ताकत है
शक्ति देकर मुझको, मेरी भक्ति अमर कर दो
जीने की.....

जो हाथ तेरा सर पर फिर क्या है मुझको डर
इतनी सी दया तू कर छूटे न तुम्हारा दर
तुम मीत मेरे बनकर मेरी प्रीत अमर कर दो
छू लेने दो चरणों को मेरा जनम सफल कर दो
जीने की.....

गुरूवर हमें सन्मार्ग

गुरूवर हमें सन्मार्ग दिखाना
तेरे आगे झूकता है,
तुझको ही जपता है,
ये सारा जमाना
गुरूवर.....

घर को है छोडा, रिश्तो को तोडा
जिन धर्म से तुमने, नाता है जोड़ा
दे दो सहारा, एक दिन है जाना।
गुरूवर.....

गुनाहों की दुनिया से, गुरूवर बचाना
नेकी का हमको, रास्ता दिखाना
हटाकर अंधेरे को ज्योति जलाना
गुरूवर.....

किसी का भी गुरूवर दिल ना दुखायें
झूठको तजकर सत्य को चाहें,
ये आशीष गुरूवर यही है चाहना।
गुरूवर.....

तेरे चरणों में समर्पित हैं हम सब,
तेरी भक्ति में हर्षित हैं हम सब,
फूल हैं हम सब हमें महकाना।
गुरूवर.....

तुम में तेज ऐसा जैसे हो सूरज,
वंदन करते हैं ऐ गुरूवर झुककर,
रिझायेगें भक्ति से सबने है ठाना
गुरूवर.....

गुरूवर मेरे मन मन्दिर में

गुरूवर मेरे मन मन्दिर में ज्ञान की ज्योति जलाओ।
तरस रही हैं अखियाँ प्यासी, उनकी प्यास बुझाओ।।
परम दिगम्बर रूप तुम्हारा, लगते सबको प्यारे।
रहकर के संसार में गुरूवर, तुम हो जग से न्यारे।।
भटक रहे हम भव वन में, तुम सच्ची राह बताओ।
गुरूवर....

जादू जैसे बोले तिहारे, हृदय त्याग उपजाते।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण से, ज्ञान सूर्य चमकाते।।
हे जिन शासन के अनुरागी आतम ज्ञान कराओ।
गुरूवर....

सहज सरल शुद्ध है चर्या, आगम के अनुसारी।
भेदा भेद जिन भक्ति धारक, पंच महाव्रत धारी।।
भव दधि में हम डूब रहे हैं, हमको आन बचाओ।
गुरूवर....

आशा पास को काटा तुमने, संतोषमृत पीते।
मन को बाँधा ज्ञान फाँस से, अपने में ही जीते।।
मन मर्कट से हम पीड़ित है, बस कैसे करे बताओ।
गुरूवर....

श्री अरूण सागर

श्री अरूण सागर, ज्ञान प्रकाशक, दे दो सहारा–२
तेरी खुशबू से, तेरी खुशबू से, महके जग ये सारा–२
श्री.....

हर साँस में गुरूवर तेरा ही नाम हों,
आँखों को मूँदे जब जब तेरा ही ध्यान हो,
आकर चरणों में ऐसा लगा है, मिला है नदी को जैसे किनारा।
श्री अरूण सागर.....

गुरूवर हम तो आये खाली हाथ हैं,
भेंट चढाने को कुछ भी न साथ है,
भावों के पुष्पों को, पुलकित कुसुमो को चरणों में चढाया।
श्री अरूण सागर.....

क्रोध प्रीति को नष्ट करता है
मान विनय को नष्ट करता है
माया मंत्री को नष्ट करती है
और लौभ सर्वस्व को नष्ट करता है

आँखो में है करूणा

आँखो में है करूणा और मीठे तेरे बोल,
तू है दयामयी, तू है दयामयी,
तू है दयामयी, हम खडे हाथ जोड।
आँखो.....

तू है मालिक, हम तेरे दास,
हम सब प्यासे, आये तेरे पास,
अमृत वचन पिला दो नाथ,
जल्दी से बस बुझा दो प्यास
दिख रहा है तेरा जलवा अब तो चारो ओर।
आँखो.....

हम पल तुझको ध्याये नाथ,
पल–पल तेरा गायें गान,
तेरी महिमा अपरम्पार,
शीश नवा ये बारम्बार
लुटाओं ज्ञान खजाना भर–भर हाथो को खोल
आँखो.....

हम पर किया बडा उपकार
फरीदाबाद में जो आयें आप,
भूल न जाना हमको गुरूवर,
जहाँ भी जाना करना याद,
गुरूवर की महिमा रात दिन गायें बार–बार
आँखो.....

करते है तुमको वंदन

करते है तुमको वंदन, हम सबके आप हो दर्पण,
करते हो मन पर सबके राज, आप हो हमारे महाराज।
करते हैं.....

जब जब हम तुझको देखें, श्रद्धा के भाव जागें
चरणों में आकर तेरे, बस थोडा आशीष माँगे
करना ना देरी गुरूवर, तुमसा न कोई गुरूवर
तेरी है महिमा अपरम्पार, आये है तेरे दरबार
करते हैं.....

चमकों तुम जग में ऐसे, जैसे अम्बर में सूरज
दे दो आशीष गुरूवर, विनती है जोड के कर
तेरा क्या कहना गुरूवर, हम प्यासे तू है सरवर
रहमत की कर दो बरसात, सबकी यहही है एक आस
करते हैं.....

भूल अगर गुरू हमसे, कोई हो भी जाये
हमको तुम माफ करना, हम है तेरे ही साये
तुमसा ना दानी गुरूवर, हम है अज्ञानी गुरूवर
रत्नों की तू है एक खान, हम हैं बालक नादान
करते हैं.....

पुष्पदन्त ससागर से शिक्षा, गुरूवर जी तुमने पाई
मन मन्दिर में गुरूवर के, ज्ञान की ज्योति जलाई

प्रशम और पलक माता जी, संघ में है तेरे वाह–वाह
ये दोनो भी है महान, हमने लिया है ये जान।
करते हैं.....

महावीर प्रभु के नाम की जय

महावीर प्रभु के नाम की जय–बोलो जय बोलो
जय बोल–बोलकर ज्ञान के बन्द द्वार तुम खोलो
जो आए तेरे द्वार देते उसके कष्ट निवार
अब मैं इससे ज्यादा क्या कहूँ
कानों में जिनवर नाम की ज्ञान सुधा तुम घोलो
महावीर प्रभु के नाम.....

त्रिशला के राज दुलारे हो सिद्धार्थ के प्यारे
कुण्डलपुर धाम तुम्हारा, चान्दनपुर हुआ नजारा
तुम चान्दनपुर स्थान की जय बोलो जय बोलो
महावीर प्रभु के नाम.....

तुम भारत में जब आए सबको उपदेश सुनाए
जीवों के प्राण बचाए, भक्तों के कष्ट मिटाए
ये वचन सुनो श्री वीर के सारे पाप तुम धोलो
महावीर प्रभु के नाम.....

तेरा दर्शन मैं भी पाऊँ जी चाहे छत्र चढाऊँ
तेरे द्वार पे शीश झुकाऊ और मन से तुझे मनाऊँ
सन ताप हरो इस दीन के दया दृष्टि तुम घोलो
महावीर प्रभु के नाम.....

अरूणमुनि निशदिन हम

अरूणमुनि निशदिन हम पर ज्ञान की गंगा बहाते हैं
अपने उपदेशों से हमको मार्ग नया दिखलाते हैं
हमकों अमृत वाणी पिलाते, परम सौभाग्य हमारा है।
अबके.....

गुरूवर की ये प्यारी मूरत हमको खींचकर लाती है
गुरूवर की ये मीठी वाणी हमको बहुत लुभाती है
ऐसा लगा हमको रे भैया धरती पर आया सितारा है।
अबके.....

गुरू भक्ति में सारे ही भक्ति करने आते हैं
भक्ति के रस में सारे भई भीग–२ ही जाते हैं
पग–पग पर जहाँ भी देखो, छाया अजब नजारा है
अबके.....

अब तो हर दिन ऐसा लगता जैसे एक त्योहार है
श्रद्धा का देखो जी बन्धु ये तो एक कमाल है
झूम झूम सब ऐसे नाचे जैसे सब दिवाने है
अबके.....

जप तप पूजा आरती वंदन में सारे ही डूबे है
गुरूवर जी के ध्यान में देखो सारे भक्त जन खोये है
गली–गली में गूँजा रे देखो गुरूवर का जयकारा है।
अबके.....

तेरी तस्वीर दिल में गुरूवर

तेरी तस्वीर दिल में गुरूवर, जाने कब से सजाये हुये है,
तुझसे मिलने की लेकर तमन्ना, हम तेरे दर पे आये हुये है।

ऐ गुरूवर जरा मुख से कह दो।
कब तलक यू तरसते रहेगे।
जाने कितनो को दर्शन दिया है।
आशा हम भी लगाये हुये है।
तेरी.....

प्रीत ऐसी हमारी हो तुमसे।
मरते दम तक तुम्हारे रहे हम।
हमको अपना बनाकर ही रखना।
दोष दिल का लगाये हुये है
तेरी.....

हम तुम्हारे है तुम हो हमारे।
इतना विश्वास कर ही लिया है।
तेरे दर्शन कभी तो मिलेंगे।
दिल में अरमां सजाए हुए है।
तेरी.....

पिच्छी कमण्डल धारी

पिच्छी कमण्डल धारी, तेरी महिमा सबसे न्यारी।
तुम बिन खाली हो जाती, इस जैन धर्म की क्यारी।
कि चरणों में ये जीवन अर्पण है, वैसे तो ये टूटा दर्पण है।
पिच्छी.....

आना और जाना है, दुनिया की रीत पुरानी,
एक पल मै उड़ जाता हंस, जब मौत बने दीवानी,
ये जीवन एक दुखड़ा है आवा और गमन का
यहाँ पल में मिलती खुशियाँ और मिलता चैन अमन का
कि.....

सतगुरू तो होते है, संसार की सच्ची मूरत
भगवान नजर आता है जब देखे इनकी सूरत,
तीर्थकर के लघुनन्दन, गुरूवर मेरे कहलाये
जो भी चरणों में आया, सब पाप तुरन्त कट जाये।
कि.....

रहना ना दूर हमसे

मेरी एक ही तमन्ना, महावीर स्वामी भगवन।
रहना ना दूर हमसे, लेना खबर हमारी।।
तू पास जिनके रहता, रहता वहाँ सवेरा।
तू दूर जिनसे होता, होता वहाँ अंधेरा।
तेरे बगैर वीरा, दिन भी है रात कारी।
रहना ना दूर.....

उलफत का रंग तेरा, कुछ ऐसा मुझपे छाया।
बनकर तेरा दीवाना मै, तुझको रिझाने आया।
अब आस–पास तेरे, बीते समय हमारा।
रहना ना दूर.....

बनकर के वीर मांझी, अब पार तो उतारो
वीरा मैं हूँ तुम्हारा, इक बार तो पुकारो।
समझूँ न रीत तेरी, ऐसा हूँ मैं अनाड़ी।
रहना ना दूर.....

मेरे भगवान मेरी

मेरे भगवान मेरी यही आस है,
पार कर दो ये बेड़ा यही विश्वास है
मेरे भगवन, मेरे भगवन, मेरे भगवन
मन के मन्दिर में आखों के रस्ते तुझे
मेरे भगवन लाना पड़ा है मुझे
मेरे दिल से, न जाना यह अरदास है
मेरे भगवन.....
तेरे रहने को मन्दिर बनाया है मन
तेरे चरणों में अर्पण किया तन व धन,
मेरे दिल से, न जाओगे विश्वास है
मेरे भगवन.....
प्रेम की डोर से बाँध करके प्रभो,
मन के मन्दिर में रखूँगा तुमको विभो
तुमको जाने न दूँगा न अवकाश है
मेरे भगवन.....
तेरे दर्शन को अखियाँ तरसती रही
तेरे दर्शन बिना ये बरसती रही
तेरे दर्शन की चाहत में हर स्वाँस है
मेरे भगवन.....

तुमको देखे बिना, मेरा लगता न मन
उजड़ा–२ सा लगता है ये गुल चमन
आपका हमसे, रिश्ता कोई खास है
मेरे भगवन.....

हमें गुरूदेव तेरा सहारा

हमें गुरूदेव तेरा सहारा न मिलता।
ये जीवन हमारा, दुबारा न मिलता।।
श्वासों की सरगम भी, मध्यम हुई थी।
जीने की आशा भी, कम हुई थी।।
तेरे नाम का जो, सहारा न मिलता।
ये जीवन....
रिश्तों की चौखट पे, ठोकर जो खाई।
अपने परायों की, समझ ही न आई।।
सच्चा जो तेरा, रिश्ता न मिलता।
ये जीवन....
किस्मत की मौजों ने, कश्ती डुबोई।
जब सब लुटा तो, तेरी याद आई।।
अगर तेरी कस्ती का, सहारा न मिलता।
ये जीवन....

नवप्रभात की नई किरण से

नवप्रभात की नई किरण से, स्वर्णिम हुआ उजाला है,
गुरूवर के चरण पड़े,, अब चमका भाग्य हमारा है
मंगलमय प्रभाती गाओ, मंगल दीप सजाय के,
शत् शत् वंदन करो गुरू को, अंतर भाव जगाये के।
अंत समय ने ली अंगड़ाई, फिर से तुम्हें पुकारा है।
गुरूवर के.....

शाश्वत सुख के दर्शन जिनके, रग–रग का श्रृंगार है।
समता के भावो का सागर, अजर अमर निजगार है।।
पूज्य गुरू जी, निज जीवन, उसको मिला किनारा है।
गुरूवर के.....

चंदन की सौरभ जिनके, पावन चरणों से झरती है,
दशों दिशायें जिस गुरू का, नित अभिनंदन करती हैं।
चरण भूमि बेमाल पड़ी, यह परम सौभाग्य हमारा है,
गुरूवर के.....

वन्दन गुरूवर, अमृत सरवर

तर्ज : चंदन सा.....

वन्दन गुरूवर, अमृत सरवर, तुम ज्ञान ज्योति जला देना।
हम आये तुम्हारे चरणों में, मेरी नैया पार लगा देना।

वंदन.....

तन को जीता, मन को जीता, तुमने भव वैभव को छोड़ा
करके कल्याण, मनुजता का, मन ध्यान तपस्या में जोड़ा।
वाणी अमृत झरती इनकी, तुम ज्ञान का दीप जला देना।

हम.....

मुख मंडल शोभित है शशि सा, ज्योर्तिमय जीवन है सारा,
प्रभु प्रेम सुधारस बरसाते, जीवन में बहा दो रसधारा,
हम धन्य हुए दर्शन पाकर, तुम भाग्य हमारे जगा देना।

हम.....

मन की पीड़ा, किससे कहना, हम रोते हैं जग हंसता है,
तुम करूणा सागर दीन सखे, आशीष सरस हो फलता है।
आशीष हमें देकर के तुम, बैकुंठ धरा पर ला देना।

हम.....

घट-घट जीवन ज्योति जगादो

मंगलमय मुनिराज, करू मैं वंदना। करू मैं वंदना।।
मन वीणा के मधुर स्वरों में,
हर पल गांऊ गान, करू मैं पंदना। करू मैं वंदना।।
ओ मेरे गुरूजी पूजा करू मैं भक्ति भाव से,
पलकों के आसन पै, तुम को बिठाऊ बड़े चाव से,
शांत भाव छवि मन को भाये, हृदय कमल मुस्काये।
करू मैं वन्दना।।
ऐ मेरे गुरूवर नैया पड़ी है, मझधार जी
आप बिना गुरू कौन लगावे इसे पार जी
छोड़ आप को कित मैं जाऊ, चरण
शरण मिल जाये।। करू मैं वन्दना।
ओ मेरे गुरूवर जी सुन लेना अब तो पुकार तुम
अपना बना के गुरूजी, कर देना बेड़ा पार तुम
"जैन मण्डल" के भक्त ये सारे, भक्ति सुधा बरसायें,
करू मैं वन्दना।।
घट–घट.....। मन वीणा के मधुर.....।।

इक झोली में फूल भरे हैं

इक झोली में फूल भरे हैं, एक झोली में कांटे अरे।
अरे कोई कारण होगा
तेरे बस में कुछ भी नहीं, ये तो बाटने वाला बांटे अरे
अरे कोई कारण होगा
पहले बनती है तकदीरें, फिर बनते हैं शरीर
ये तो प्रभु की कारीगरी है तू क्यो है गम्भीर
अरे कोई कारण होगा
धन का बिस्तर मिल जाए, पर नींद को तरसे नैन
किसी को कांटो पर सोकर भी, आ जाता है चैन
अरे कोई कारण होगा
नाग भी डस ले तो मिल जाए, किसी को जीवन दाान
चींटी से भी मिट सकता है किसी का नामोनिशान
अरे कोई कारण होगा
मंदिर मस्जिद में जाकर भी कभी न पावे ज्ञान
कभी मिले मिट्टी से मोती पत्थर में भगवान
अरे कोई कारण होगा

आगे-२ अपनी अर्थी के

आगे–२ अपनी ही अर्थी के आगे मैं गाता चलु
सिद्ध नाम सत्य हैं, अरिहंत नाम सत्य है
पीछे–२ दूर तक, दिखा रही जो भीड़ है
पंछी साखा से उड़ा खाली पड़ा नीड है
सृष्टि सारी देख लो पर्याय ही अनित्य है
सिद्ध नाम सत्य है.....

जिनको मेरे सुख दु:खों से ना था कोई वास्ता
आज उनके कंधो पर ही कट रहा है रास्ता
आँख जब मुंदी तो कोई शत्रु है ना कोई मित्र है
सिद्ध नाम सत्य है.....

डोरियों से मैं नहीं बँधा मेरा संस्कार था
एक कफन पर ही मेरा रह गया अधिकार था
तुम उसे उतारने जा रहे ये सत्य है
सिद्ध नाम सत्य है.....

आपके अनुराग को आज ये क्या हो गया
जिस क्षण चिता में चढ़ा महान कैसे हो गया
वो अनित्य वो ही नित्य रहे अनित्य है
सिद्ध नाम सत्य है.....

मैं अरूपी गंध दूर उड़ गयी थी फूल से
लहर थी चली गई थी दूर मृत्यु फूल से
कि सत्य देख हँस रहा कि जल रहा असत्य है
सिद्ध नाम सत्य है.....
मैं तुम्हारे वंश का बिछड़ा हुआ हूँ देवता
आत्म तत्व छोड़ कर मैं जगत को देखता
जो अनादि काल की भूल का ही कृत्य है
सिद्ध नाम सत्य है.....

हमारे नहीं करने योग्य कार्य
हमारे द्वारा दूसरों की निन्दा, आलोचना।
हमारे द्वारा किसी की चोरी।
हमारे द्वरा देव, शास्त्र, गुरू की अविनय।
हमारे द्वारा धर्म का अवर्णवाद।
हमारे द्वारा किसी के साथ माया चारी।
हमारे द्वारा अपने ऊपर मद।
हमारे द्वारा अपने स्वार्थो के लिए किसी को हानि।
हमारे द्वारा किसी की बहन–बेटी पर बुरी नजर।

तर्ज :- मिलती है जिन्दगी में

मिलती है मुनिवरों की संगत कभी–२
चढ़ती है मन पे ज्ञान की रंगत कभी–२
आये उदय से पुण्य मिलते हैं मुनिवर–२
जी भर के कर ले ऐ मना सत्संग अभी–२
मिलती है.....

मुनिवर की संगति से कर लो सफल जन्म
मिलती है आत्मा को संगत कभी–२
मिलती है.....

आए है द्वार पे दर्शन की आस में
स्वीकार कर लो ऐ गुरू वन्दन अभी–२
मिलती है.....

मरण को निर्वाण नही कहा जा सकता है।
मरण के बाद तो पुनः जन्म पाता है।
इस निर्वाण की महानता तो देखो।
यह जन्म और मरण दोनो को मिटाता है।।

तेरे चरणों की धूल

तेरे चरणों की धूल बाबा चन्दन गुलाल बने
जिसने भी लगाई मस्तक उसकी तकदीर बने
तेरे चरणो की.....

गुरू चरणों से बढ़कर जग में कोई चीज अनमोल नहीं
हर वस्तु का मोल यहाँ पर इसका कोई मोल नहीं
देवता तरसे इस धूली को यह धूली कितनी पावन
जन्म जन्म के रोग मिटाये सुख से भर दे यह दामन
तेरे चरणो की.....

पार हुई सती चन्दन बाला महावीर पड़ गाने से
अन्जन भी हो गया निरन्जन णमोकार को ध्याने से
इन चरणों की महिमा गाये युग युग ये वेद पुराण
काले कौअे हंस बन गये चरण धूल में कर स्नान
तेरे चरणो की.....

गुरू चरणों में गंगा बहती गुरू चरणों में मोती मिले
पड़ा रहा जो इन चरणों में न डोले न कभी हिले
लाखों पत्थर हीरे बन गये प्यारे इन चरणों को थाम
मेरे गुरूवर के चरणों में बसते सारे तीर्थ धाम
तेरे चरणो की.....

जीवन की रूलाती घड़ियों में

तर्ज :— बाबुल की दुआएं

जीवन की रूलाती घड़ियों में, मिलता है तुम्हारा प्यार मुझे।
कुछ चाह न बाकी रहती है, प्रभु आके तेरे दरबार मुझे।।
मेरे दिल के गगन पे आके कभी, जब गम की छटा छा जाती है।
इक पल में कहीं पे दया तेरी, तब बन के हवा आ जाती है
तुझे रक्षक सबका कहने में फिर, क्या होगा इन्कार मुझे।
कुछ चाह न.....।

प्रभु दर पे तेरे आने वाला, झोली अपनी भर लेता है।
तेरे दर से प्रभु मैं क्या मांगू, बिन मांगे तू सब कुछ देता है।।
जो तेरी आज्ञा हो दाता, वह हरदम है स्वीकार मुझे।
कुछ चाह न.....।

जब तक मैं पथिक दुनिया में रहूं, बस एक यही मेरा काम रहे।
मेरे दिल में तुम्हारी याद रहे, होठों पे तुम्हारा नाम रह।।
रहे प्यार तुम्हारें चरणों से, चाहे जन्म मिले सौ बार मुझे।
कुछ चाह न.....।

गुरूवर के दर्श पाना

गुरूवर के दर्श पाना, उपदेश सुनने आना,
आई है धर्म गंगा, सब पाप धो के जाना।
प्रथमानुयोग पढ़ना, करणानुयोग गुनना,
चरणानुयोग पढ़कर, शुभ आचरण को करना।
पुण्य उदय है सबका, गुरूदेव हैं पधारे,
संग में चतुर्विध संघ, गुरू लगते कितने प्यारे,
हम विनती करते गुरू से, सु आचरण सिखा दें
सत् धर्म की कृपा से, जीवन का सार पा लें,
गुरू आज्ञा शीश धरना, कर्त्तव्य एक अपना,
श्रद्धा से सिर झुकाना, चौमासा एक पाना।
गुरूवर.....।

जिनवर सी इनकी मूरत, लगती है खूबसूरत,
मेरे गुरू का देखो, फैली है जग में कीरत,
त्रय रत्नों की है गंगा, धारण किया है चरित,
गुरूवर की भक्ति ने तो, हर ली सभी की आरत,
पूजन में मन लगाना, निज पुण्य को बढ़ाना,
सम्यक दिशा को पाकर, संसार पार जाना।
गुरूवर.....।

रंगमा रंगमा रंगमा रे

रंगमा रंगमा रंगमा रे
प्रभु थारा ऐ रंगमा रंग रहयो रे....
आय परव दिन मंगल अवसर
भक्तिमा तारी हुं नाची रहयो रे.....रंगमा
गावो रे गाणा आज वीतराग देवना
आतमदेव बतावी रहयो रे
प्रभु थारा ऐ रंगमा रंग रहयो रे.....रंगमा
आ तमदेव ने अंतरमा देखो
सुख सरोवर उछाली रहयो रे
प्रभु थारा ऐ रगमा रंग रहयो रे.....रंगमा
भाव भरीने एमें भावना भावीजे
आप समान बनावी दीयो रे
प्रभु थारा ऐ रंगमा रंग रहयो रे.....रंगमा
समवशरण मा सीमंधर देवा
समयसार मा कुंदकुंद देवा
भगवान कहीने बोलावी रहयो रे
प्रभु थारा ऐ संगमा रंग रहयो रे.....रंगमा

जीवन के किसी भी पल

जीवन के किसी भी पल में वैराग्य उपज सकता है।
संसार में रहकर प्राणी संसार को तज सकता है।।
कहीं दर्पण देख विरक्ति, कहीं मृतक देख वैरागी।
बिन कारण दीक्षा लेता, वो पूर्व जन्म का त्यागी।।
निर्ग्रन्थ साधु ही इतने, सद्गुण से सज सकता है।
संसार में रहकर प्राणी.....।।१।।
आत्मा तो अजर अमर है, हम आयु गिने इस तन की।
वैसा ही जीवन बनता, जैसी धारा चिन्तन की।
वहीं सबको समझा पाता, जो स्वयं समझ सकता है।।
संसार में रहकर प्राणी.....।।२।।
शास्त्रों में सुने थे जैसे, वैसे ही देखे गुरूवर।
तेजस्वी परम तपस्वी, उपकारी पुष्पदंत सागर।
जिनकी मृदु वाणी सुनकर, हर प्रश्न सुलझ सकता है।।
संसार में रहकर प्राणी.....।।३।।

जीवन की पहेली सुलझाने

जीवन की पहेली सुलझाने आये हैं।
अपने बड़े बाबा को मनाने आये हैं।।
संकटों के डेरे चारों और प्रभु मेरे हैं।
मेरी जिन्दगानी में अंधेरे ही अंधेरे हैं।।
आशाओं को दीप जलाने आये हैं।।
अपने बड़े बाबा.....।।१।।
तेरे दरबार में दया की बरसात है।
मेरी लाज बाबाजी तुम्हारे हाथ है।।
आशाओं का सूरज उगाने आया हूँ।
अपने बड़े बाबा.....।।२।।
सारे प्रश्नों के यहाँ उत्तर मिल जाते हैं।
रोते–रोते आने वाले हँसते–हँसते जाते हैं।।
भक्ति की आशा लगाये आया हूँ।
अपने बड़े बाबा.....।।३।।
दुनियाँ की रीत कोई दु:ख नहीं बांटे।
मेरी तो डगर में है काँटे ही काँटे।।
अपने नाव पार लगाने आया हूँ।
अपने बड़े बाबा.....।।४।।
जीवन की पहेली सुलझाने आये हैं।
अपने बड़े बाबा को मनाने आये हैं।।

समता को धारने वाले

तर्ज :– कब चन्दा दूर गगन से...

समता को तारने वाले भव पार लगाने वाले।
आतम को ध्याने वाले, भक्तों को तिराने वाले।
इन गुरू को शत् शत् वंदन है, चरणों में अर्चन है।
तुम्हीं मेरे भगवन हो, मैं तुमपे वारी जाऊँ।
तेरे आशीष हेतु, चाहे जो भी कर जाऊँ।
तेरे पावन चरणों में, मस्तक को झुका देंगे हम।
तेरी महिमा गाकर के, दुनियां को बता देंगे हम।
इन गुरू को.....

नित पुण्य किरण बरसाती तेरी प्यारी प्यारी मूरत।
भगवान नजर आते हैं जब देखे तेरी सूरत।
जब जब हम तुमको ध्याये, तेरी ही शरणा पाये।
तेरा नाम जपे जो गुरूवर, मन वांछित फल पा जाये।
इन गुरू को.....

मैं दास चरण नित ध्याऊँ, फिर तुम सम ही बन जाऊँ।
हे ज्ञान दिवाकर गुरूवर, में मोक्ष महल को पाऊँ।
मुक्ति को दिलादो गुरूवर, सुज्ञान पिलादो गुरूवर।
भव सागर तिर जाऊँ, वरदान दिला दो गुरूवर।
इन गुरू को शत् शत् वंदन है। चरणों में अर्चन है।
समता को तारने.....

तुम अगर साथ देने का वादा करो

तुम अगर दर्श देने का वादा करो।
मैं यू ही तेरे दर्शन को आती रहूँ।।
तुम मुझे अपना आशीष देते रहो।
मैं यू ही शीश अपना झुकाती रहूँ।।टेक।।
जबसे देखा तुम्हें मन ये कहने लगा।
प्रेम और त्याग के तुम तो अवतार हो।।
सुनके उपदेश हमको तो ऐसा लगा।
प्रेम और ज्ञान के तुम तो भण्डार हो।।
हो कृपा गर इधर भी कर दो नजर।
मैं यू ही शीश अपना झुकाती रहूँ।।तुम..।।
मैं अनादि से भव में भटकती रहा।
मुझको यहाँ पर ना अब तक किनारा मिला।।
तुमको देखा तो दिल को तसल्ली हुई।
मानो मंझधार में एक सहारा मिला।।
अब नैया को मेरी तिरा दो अगर।
मैं यू ही गीत तेरे गाती रहूँ।।तुम..।।
जितना वैभव मिला मुझको संसार में।
दूर उतना ही मैं खुद से होती गयी।।
मोह और माया के वश में ऐसा फंसी।

व्यर्थ ही जीवन अपना मैं खोती गयी।।
अब मुझको भी मुझमें रमा दो अगर।
मैं यू ही शीश अपना झुकाती रहूँ।।तुम..।।

साधु नहीं ये चलते फिरते

साधु नही ये चलते फिरते तीरथ समान है।
मुनि पुष्पदन्त सागर जी को मेरा शत् शत् प्रणाम है।
मुनि अरूण सागर जी को मेरा शत् शत् प्रणाम है।
साधु नहीं.....

बाहर से तो नग्न है, अंतर से भी नग्न हैं।
अपनी ही आत्मा में रहते सदा मग्न है
मुक्ति के पथ में बढ़ रहा जीवन महान् है
साधु नहीं.....

ना राग है न द्वेष ये तो है वीतरागी
दर्शन मिले हैं हमको हम तो है अनुरागी
निन्दा व प्रार्थना से इनको न काम है
साधु नहीं.....

अंतर की प्यारी बगियाँ में चारित्र खिल रहा है
भोगों में उलझे जीवों को सत् ज्ञान मिल रहा है
उपयोग गर हटते जग का कल्याण है
साधु नहीं.....

जिस गुरू ने मुझको होश दिया

तर्ज :– है प्रीत जहाँ की रीत सदा

जिस गुरू ने मुझको होश दिया, उस गुरू का गौरव गाता हूँ।
पुष्पदंत का चेला हूँ मैं, आचरण की बात सुनाता हूँ।
वो चले तो संग ब्रह्माण्ड चले, जहां रूके इन्द्र सभा लग जाए।
सरिता का पानी थम जाये, धरा स्वर्ग लोक सी हो जाए।।
हे महा श्रमण, हे धर्म सूर्य, तुम्हें नित–नित शीश नवाता हूँ...
देखे बहुत साधक हमने, गुरू तुमसा साधक कोई नहीं।
कई साधक पर है प्रश्न चिन्ह, तुम पर कभी उंगली उठी नहीं।
हो दिगम्बरत्व की लाज तुम्हीं, ये सोच के मैं इतराता हूँ....
तुम महावीर के नंदन हो, तुम कुंद कुंद के कुंदन हो।
श्री मानतुंग के समर्पण तुम, अकलंक उमा के दर्पण हो।
तुम जिनवाणी के गायक हो, मैं शान से कहता जाता हूँ....

दीप अपरिग्रह के जले, सबको मिले प्रकाश।
दुखिया की भी बुझ सके, मन की कोई प्यास।
ऐसी हो शुभ अपनी दीवाली इस बार।
सदाचरण की रोशनी, पहुँचे सबके द्वार।।

होली खेलें मुनिराज

होली खेलें मुनिराज, अकेले वन में, हो अकेले
काहे का रंग काहे की पिचकारी
काहे गुलाल उड़ावै वन में...होली
समता रंग क्षमा पिचकारी
ज्ञान गुलाल उड़ावे वन में...होली
काहे की कीच काहे का गारा
काहे की धूल उड़ावे वन में...होली
धर्म की कीच, ज्ञान का गारा
कर्मों की धूल उड़ावे वन में...होली
ऐसी होली जो कोई खेले
पाप कटें उस क्षण में...होली

कोई पनघट का उथला नीर होता है
कोई मरघट का जलता तीर होता है
कहानी जग सुनाता है बहादो की मजारो पे
इन्हीं काँटों के पथ पर चल रहा महावीर होता है।

छोटा सा मन्दिर बनायेंगे

छोटा सा मन्दिर बनायेंगे, वीर गुण गायेंगे
वीर गुण गायेंगे, महावीर गुण गायेंगे...छोटा सा
हाथों में लेकर चांदी के कलशे
प्रभु जी का न्हवन करायेंगे..वीर गुण
हाथों में लेकर अष्ट द्रव्य की थाली
प्रभु जी की पूजा करायेंगे..वीर गुण
हाथों में लेकर चांदी के दीपक
प्रभु जी की आरती करायेंगे..वीर गुण
हाथो में लेकर झांझर और मजीरे
प्रभु जी का कीर्तन करायेंगे..वीर गुण

कहा खो गया पुरखों का संचित विस्तृत ज्ञान।
कहाँ छोड़ गए अपनी विरासत बड़े बड़े विद्वान।
खंड खंड होता दिखता है भारत देश महान।
आज देश को फिर से चाहिये महावीर भगवान।।

मोक्ष के प्रेमी हमने

मोक्ष के प्रेमी हमने, कर्मों से लड़ते देखे
मखमल पर सोने वाले, भूमि पर पड़ते देखे
सरसों का दाना जिनके, बिस्तर पर चुभता था
काया की सुध नहीं, गिदड़ी तन भखते देखे...मोक्ष.
अर्जुन व भीम जिनके, बल का ना पार था पर
आतम उन्नति के कारण, अग्नि में जलते देखे...मोक्ष.
पारस नाथ स्वामी, उस भव मोक्ष गामी
कर्मों ने नाहीं बख्शा, पत्थर तक पड़ते देखे...मोक्ष.
बौद्धो का जोर था जब, निकंलक देव देख
धर्म का नहीं छोड़ा, मस्तक तक कटते देखे...मोक्ष.
भोगो को त्याग ''सीता'', जीवन ये जाऐ बीता
तृष्णा न पूरी हुई, डोली पर चढ़ते देखे...मोक्ष.

सच्चे देव गुरू के मुख से निकलने।
वाली बात कहलाती है अमृत वाणी।
इसी वाणी का किया गया संकलन और।
विवरण कहलाती है जिनवाणी।।

श्री वीर प्रभु की जय बोलो

जय बोलो जय बोलो, श्री वीर प्रभु की जय बोलो—टेक
जब दुनियां में जुल्म बढ़ा था, हिंसा का यहां जोर बढ़ा था
आप लिया अवतार, प्रभु की जय बोलो.....
पुण्य उदय भारत का आया, कुण्डलपुर में आनंद छाया
हो रही जय, जयकार, प्रभु की जय बोलो...
राय सिद्धारथ राज दुलारे, त्रिशला की आंखों के तारे
तीन लोक मनहार, प्रभु की जय बोलो....
भर यौवन में दीक्षा धारी, राज पाट को ठोकर मारी
करी तपस्या सार, प्रभु की जय बोलो...
तपकर केवल ज्ञान उपाया, जग का सब अंधेर मिटाया
किया धर्म प्रचार, प्रभु की जय बोलो....

गुरू की महिमा है भारी निर्मल जल सम अविकारी
ऊपर तो ढोल बजाते अंतर में मृदुता भारी
दंड स्वरूप प्रायश्चित दे, दोष मुक्त कर देते
मिथ्यात्व तिमिर को हटाकर, भानु सम पथ दर्शाते

मिलता है सच्चा सुख केवल

तर्ज :– आ जाओ तड़पते हैं अरमां अब रात गुजरने वाली है।
मिलता है सच्चा सुख केवल भगवान तुम्हारे चरणों में
मेरी विनती है पल–पल छिन–छिन रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।
चाहे बैरी कुल संसार रहे मेरा जीवन मुझ पर भार रहे
चाहे मौत गले का हार बने रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में
चाहे संकट ने मुझे घेरा हो चाहे चारो और अंधेरा हो
पर चित्त न मेरा डगमग हो रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में
चाहे अग्नि में भी जलना हो चाहे काटों पर भी चलना हो
चाहे छोड़ के देश निकलना हो रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में
जिव्हा पर तेरा नाम रहे तेरी याद सुबह और शाम रहे
बस काम ये आठो धाम रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में

क्या करेगा प्यार वो इंसान से
क्या करेगा प्यार वो ईमान से
इंसान की ही गोद में पैदा होकर
कर न सका प्यार जो इंसान से

आज के इन्सान को क्या

आज के इस इन्सान को ये क्या हो गया
इसका पुराना प्यारा कहाँ खो गया
कैसी ये मनहूस घड़ी है भाईयों में जंग छिड़ी है
कही पे खून कही पे ज्वाला जाने क्या है होने वाला
सबका माथा आज झुका है चारो और दंगा ही दंगा है
हर छुरे पर खून लगा है माया का ये जाल बिछा है
आज दुखी है जनता सारी रोते लाखों नर और नारी
रोते हैं आंगन गलियारे रोते आज मौहल्ले सारे
रोती सलमा रोती सीता रोती है कुरान और गीता
आज हिमालय चिल्लाता है कहाँ पुराना वो नाता है
डस लिया सारे देश को जहरीले नागों ने
घर को आग लगा दी घर के चिरागो ने
अपना देश वो देश था लाखो बार मुसीबत आई
इन्सानों ने जान गवाई पर बहनो की लाज बचाई
लेकिन अब वो बात कहाँ है अब तो केवल घात यहाँ है
चल रही है उल्टी हवाए कांप रही थर–२ अबलाए
आज हर एक आंचल को है खातरा
आज हर एक घूंघट को है खातरा
खतरे में है लाज बहन की खतरे में चूडियाँ दुल्हन की

डरती है हर पांव की पायल आज कही हो जाऊ ना घायल
आज सलामत कोई ना घर है सबको लुट जाने का डर है
हमने अपने वतन को देख आदमी के पतन को देखा
आज तो बहनो पर भी हमला होता है
दूर किसी कोने में मजहब रोता है

अच्छा सिला दिया तूने

मेरे श्री अरूण सागर दे दो आसरा..२
आप ही सिखा दो मुझे भूला रास्ता
दीन दुखियों के सपनो की तकदीर हो
इस नये दौर के आप महावीर हो
आपसे पड़ा है मुझे फिर वास्ता
आप ही.....
पूज्यनीय वन्दनीय आप सन्तों में
आन पडे़ है हम तेरे चरणों में
पापियों ने देखो कैसा किया माजरा
आप ही.....
भावनाओं के तुम इक आकाश हो
जिसका कोई नहीं उसके विश्वास हो
भक्तों की जुड़ी देखो कसी आस्था
आप ही दिखादो मुझे भूला रास्ता

वीरा जिनको याद करे

तर्ज :– चलो बुलावा आया है माता ने बुलाया है

वीरा जिनको याद करे, वो लोग निराले होते है
वीरा जिनका नाम पुकारे किस्मत वाले होते है
चलो बुलावा आया है वीरा ने बुलाया है
ऊँचे मन्दिर देख के तेरे सबका मन हर्षाया है
सारे जग में एक ठिकाना सारे गम के मारों का
रस्ता देख रहा है वीरा अपनी आँख के तारों का
मस्त हवाओं का एक झोका ये सन्देशा लाया है
सारे बोलो जय वीरा की.....
जय वीरा की कहते जाओ आने जाने वालों को
चलते जाओ तुम मत देखों अपने पांव के छालों को–२
जिसने जितना दर्द सहा है उतना ही चैन भी पाया है
चान्दनपुर के मन्दिर में जो लो मुरादें लाते हैं
वो रोते रोते आते है हँसते हँसते जाते है
मैं भी माँगू के देखूं जिसने जो मांगा वो पाया है

कैसे हो कल्याण करनी

रेशमी सलवार (नया दौर)

कैसे हो कल्याण करनी काली है
नही होगा भुगतान हुण्डी जाली है
तू तन का काला धब्बा धोता ले फौरन पानी
तेरे मन पर कितने काले धब्बों की पड़ी निशानी
क्यों न निहाली है...
तेरा बिगड़ रहा है ईजन, गाड़ी किस तरह चलेगी
दीपक में तेल खत्म है, बाती किस तरह जलेगी
बुझने वाली है.....
तेरे अन्दर जान नहीं है कैसे फिर देह चलेगी
तेरी नैया टूट रही है कैसे फिर पार लगेगी
डूबने वाली है.....
जाली हुण्डी को जला दे, इस दिल को शुद्ध बना ले
ले ज्ञानामृत है हाजिर, क्या मरना प्यास बुझा ले
गुरू गुणशाली है.....

शुद्ध हृदय हो पल में

तर्ज :– सावन का महीना

शुद्ध हृदय हो पल में, हो जाता है कल्याण,
बगुला भक्तों को न मिल सकते हैं भगवान
हाथ में माला से, क्या है मिलने वाला?
दिल में पाप भरा है और मुँह से कहते राम,
मन्दिर में जाते हो, प्रभु–गीत गाते हों,
पर मौका पाकर जूते चुराते हो
ऐसी भक्ति हरगिज न बन सकती वरदान,
पीने में धोखा है खाने में धोखा है,
दुनिया की हर शै है धोखा ही धोखा
जब जीवन है इक धोखा, फिर कैसे हो उत्थान
छल और कपट के, विष को जला दो,
सच्चे हृदय से, भक्ति–धन कमा लो
हेरा–फेरी छोड़ो, यह कहते हैं ''मुनि ज्ञान'।

झूठी दुनिया से मन

झूठी दुनिया से मन को हटा ले
ध्यान गुरू जी के चरणों में लगा ले
नसीबा तेरा जाग जाएगा–२।
झूठे संसार का तो चलन अनोखा है
पग–पग मिले यहाँ धोखा ही धोखा है
हाथ इनका तू सर पे धरा ले
काम फिर चाहे जो भी हो बना ले
नसीबा तेरा जाग.....।
माल तेरे पास है तो माल तेरा खाऐंगे
हुआ जो खात्म तो नजर नहीं आयेंगे
अरूण सागर को तू अपना बना ले
आशीष तू गुरू जी का पाल ले
नसीबा तेरा जाग.....।

उड़ा जा रहा है पंछी

तर्ज :– चला गया कोई रे दूर से पुकार के

उड़ा जा रहा है पंछी हरी भरी डाल से
रोको रे रोको कोई मुनि को विहार से
सोचा कभी न हमने, आ के जाओगे
और जगा के हमें यूँ ही छोड़ जाओगे
दान देना जीवन का फिर से पधार के।।रोको।।१।।
पास तुम्हारे रहके जो, भजन हमने गाये।
जीवन में उतने, हमने पुण्य कमाये।।
पुण्य की वर्षा करना नगर में पधार के।।रोको।।२।।
सरगम के ताने टूटी, रूठ गई सांसे।
आके मनाओ गुरूवर को रो रही राते।।
दीप जला दो सम्यक दीवाली मनाय के।।रोको।।३।।
गुरू भक्ति कैसे गाऊँ, मन तो उदास है।
जीवन की सोई वीणा, टूटी मेरी आश है।।
वीणा के तारे बोलें गुरू के आगमन से।।रोको।।४।।
दूसरा चर्तुमास किया फरीदबाद में।
अमृत की वर्षा करके करदी पूरी आशा।।
बस गये हृदय में सब के महावीर पंचम काल के।।रोको।।५।।
कम्पित है मन की बगियाँ हरियाली आज है।
पतझर आना जाये सूखा वृक्ष आज है।
पुण्य हुआ क्षय हम सबका जाये गुरू आज रे।

प्यारा लगे वीरा मुझे

तर्ज :– तोहफा कबूल है मुझे सरकार आपका

प्यारा लगे वीरा मुझे, दरबार आपका।
वर्षों से कह रहा हूँ मैं, जन्मों से कर रहा हूँ मैं।
गुणगान आपका.....।टेक।।

जी चाहता है आपका, गुणगान मैं करूँ।
जी चाहता है आपकी, भक्ति में रत रहूँ–२।
छोड़ूँगा ना कभी ना कभी भी दरबार आपका।
वर्षों से कह रहा हूँ मैं गुणगान आपका.....।१।।

कोई नहीं है भक्तों का, तेरे सिवा यहाँ।
मिल न सका सुकून तो, आया हूँ मैं यहाँ।
भूलूँगा ना कभी ना मैं उपकार आपका।
वर्षों से कह रहा हूँ मैं गुणगान आपका.....।।२।।

मैं आया तेरे द्वार पर सुनकर के तेरा नाम।
भक्तों की झोली भर जाती जो लेता तेरा नाम–२।
भक्त खड़ा है द्वार पर सुन लेना ये पुकार
जन्मों से कर रहा हूँ मैं गुणगान आपका.....।।३।।

प्रभु नाम जपने से

तर्ज—क्या खूब लगती हो

प्रभु नाम जपने से जनजीवन मिलता है।
तन—मन का मुरझाया उपवन खिलता है।
अन्तर के कोने में एक दीपक जलता है।
प्रभु नाम.....।।१।।

श्रीपाल प्रभु गुण गाकर हाँ हाँ गाकर।
तूफां में भी, पार हुए थे सागर।
चन्दन बाला दर्शन से हाँ दर्शन से।
देखो पल में मुक्त हुई बंधन से।
तन मन.....।।२।।

हो सर्प अगर विष वाला, हाँ हाँ वाला।
करलो मन में, ध्यान, बने जयमाला।
भव पाप सभी टल जाये, हाँ हँ जाये।
सुमिरन से संताप सभी टल जाये।
तन मन.....।।३।।

संसार समुन्दर गहरा, हाँ हाँ गहरा।
कर्मो का हर ओर लगा है पहरा।
सब छोड़ जगत की माया, हाँ हाँ माया।
ले लो तुम महावीर शरण की छाया।
तन मन.....।।४।।

जहाँ सत्य अहिंसा और धर्म का

तर्ज :– जहाँ डाल–डाल पर सोने की चिड़िया

जहाँ सत्य अहिंसा और धर्म का पग–२ लगता डेरा,
वो भारत देश है मेरा।
ये धरती वो जहाँ ऋषि मुनि जपते, प्रभु नाम की माला।
जहाँ हर बालक महावीर है और, चंदना इक–इक बाला।
और चंदना इक–इक बाला, जहाँ सूरज सबसे पहले
आकर डाले अपना डेरा।।
वो भारत देश.....।।१।।
जहाँ गंगा, जमुना, कृष्णा और कावेरी बहती जाये।
जहाँ उत्तर दक्षिण पूर्व पश्चिम को अमृत लिलवाये, ये अमृत पिलवाये।
कहीं फूल और फल फूल उगाये केसर कहीं बिखेरा।
वो भारत देश.....।।२।।
अलबेलों की इस धरती के त्यौहार भी हैं अलबेले।
कहीं दीवाली की जगमग है होली के कहीं मेले, होली के कहीं मेले।
जहाँ राग रंग और हँसी खुशी का चारों ओर है डेरा।
वो भारत देश.....।।३।।
जहाँ आसमान से बाते करते मन्दिर और शिवाले।
किसी नगर में किसी द्वार पर कोई न ताला डाले, कोई न ताला डाले।
और प्रेम की वंशी जहाँ बजाता आये सांझ सवेरा।
वो भारत देश.....।।४।।
जहाँ सत्य अहिंसा और धर्म का पग–२ लगता डेरा।
वो भारत देश.....।।५।।

जैन धर्म की जय बोलो

जय बोलो, जय बोलो, जैन धर्म की जय बोलो
दुनिया के हर कोने से, सब मिल कर के बोलो।
जय बोलो ऽऽऽ जय बोलो ऽऽऽ ।।टेक।।
ये वो शीतल छाया है यहाँ नहीं छल माया है–२।
सत्य अहिंसा यही धर्म है–२ यहाँ सभी को भाया है।
जय बोलो.....।।१।।
महावीर की ये वाणी, सारी दुनिया ने मानी–२।
जियो सभी को जीने दो–२, मत करना तुम मनमानी।
जय बोलो.....।।२।।
धर्म का झण्डा लहराये, कभी ना ये झुकने पाये–२।
मुनि अरूण सागर जी–२, हम सबको वरदान दो।
जय बोलो.....।।३।।

युग की हो पहचान तुम्ही, जैनागम की शान तुम्हीं
अध्यात्म आगम की समता, जिन शासन की आन तुम्ही
ससंघ विराजे जहाँ जहाँ पर, समवशरण का दर्शन हो
तमहर पाप विनाशक गुरूवर, पाप कर्म का नित क्षय हो

नेमि प्रभु दुल्हा

तर्ज :– पल्लो लटके

नेमि प्रभु दुल्हा बनके–२।
शौरीपुर से चले–२ बराती सजधज के ऽऽऽ
नेमि प्रभु.....।टेक।।

छप्पन कोटि जुड़े यदुवंशी राजे और महाराजे–२।
दोऊँ भैया कृष्ण दाऊ–२, रथ पर चढ़कर आये।
नेमि प्रभु.....।१।।

आगे–२ बाजे बजते मधुर–२ झनकार–२।
जूनागए में छाई खुशियां–२, घर–२ मंगलाचार।
नेमि प्रभु.....।।२।।

दम–दम–दम–दम, पी–पी–पी–पी तुरई देखो बाजे–२।
नाचत गावत आये बाराती–२ जूनागढ़ में आये।
नेमि प्रभु.....।।३।।

तीन छत्र सिर ऊपर सोहे, माथे मुकुट विशाल–२।
कमर में फैटा हाथ कटारी–२, गल मोतियन की माल।
नेमि प्रभु.....।।४।।

चारों ओर है धूम मची थी, सुन पशुवन ललकार–२।
जूनागढ़ में आये बराती–२, हुआ नेमि वैराग।
नेमि प्रभु.....।।५।।

कुण्डलपुर का श्री महावीरा

तर्ज :— वृंदावन का कृष्ण कन्हैया

कुण्डलपुर का श्री महावीरा जग की आखों का तारा—२।
त्रिशला नन्दन हरिकृत वंदन, सिद्धार्थ का राजदुलारा
धर्म नाम पर हवन यज्ञ में, पशु बलियां दी जाती थी।
बेजुबान पशुओं के खून से, होली खेली जाती थी।
दीन दुःखी जीवों को भगवन, आकर तुमने कष्ट निवारा..।१।।
जब—जब तेरे भक्तों पर भी संकट कोई आया था.
बने तुम्हीं हो संकट मोचन तुमने कष्ट मिटाया था।
सीता चन्दना का दृष्टान्त दे रहा है ग्रन्थ हमारा....।।२।।
तेरे इस उपदेश को भगवन हम फिर भूले जाते हैं।
विचलित हुए हैं धर्म से अपने इस कारण दुख पाते हैं।
सत्य मार्ग पर लाये हमें जो, तुम बिन भगवन कौन हमारा..।।३।।
अंधकार के बीते युग में तूने शमां जलाई थी।
भक्तजनों की नैया भगवन तुमने पार लगाई थी।
मेरी नाव भी पार लगा दो, भगवान मैंने आज पुकारा..।।४।।

गुरूवर एक बात माने खटकी

गुरूवर एक बात माने खटकी,
मेरी नैया भंवर में अटकी।
तेरी महिमा सुनकर हम सब दूर दूर से आये।
तेरे दर्शन करने से बस पाप सभी कट जाये।
थारे नाम की लगे म्हारे हिचकी।।१।।
तुम चाहो तो धरती पिघले अम्बर हो जाये नीचे।
तुम चाहो तो मौत भी करे न जीवन का पीछा।।
मेरे भर दो ज्ञान की मटकी।।२।।
तेरी मुरतिया मन में बसी है और न कोई दूजा।
सांझा सवेरे मन मन्दिर करूँ तुम्हारी पूजा।
मिटे आवागमन की खुटकी।।३।।

आम वृक्ष पर कोयल काली ज्यूँ बसन्त में आती है
कूक कूक कर सबको यह आगमन बसन्त बताती है
अब पतझड को देख सयाने आया है सो जायेगा
हरा भरा उपवन एक दिन यह बीहड़ सा बन जायेगा

तीरथ करने चली सती

तीरथ करने चली सती, निज पति का कुष्ठ मिटाने को।
अशुभ कर्म का उदय हुआ है कर्मनबन्ध छुड़ाने को।।टेक।।
कर्मों की गति न्यारी देखो, राजा के घर जन्म लिया।
पूर्व जन्म के कई भोगों से, कोढ़ी रूप में मिले पिया।
तरह–२ के संकट झेले पत्नी धर्म निभाने को।
अशुभ.....।१।।

पैरों में छाले पड़ जाते तन की सुधबुध नहीं रही।
दुखों की चिन्ता ना करती मन में समता भाव धरी।
हस्तिनापुर के दर्शन करती मन की व्यथा मिटाने को।
अशुभ.....।।२।।

पावापुर पुण्य भूमि यहाँ महावीर निर्वाण किया।
चम्पापुर से वासुपूज्य ने अष्ट कर्म का नाश किया।
निर्वाण भूमि पर लेकर पहुँची प्रभु का दर्शन करने को।
अशुभ.....।।३।।

सम्मेद शिखर पर्वतदेखो बोध पाप कर्म खोवे।
एक बार वन्दन करने से नरक पशुगति न होवे।
बीस जिनेश्वर की तपस्या मुक्ति पद के पाने को।
अशुभ.....।।४।।

जप ले बन्दे नाम

तर्ज :– कसमें वादे प्यार वफा

जप ले बन्दे नाम गुरू का, आयेगा ये तेरे काम।
क्या लेकर तू आया जग में, क्या लेकर तू जायेगा,
मुट्ठी बांधे आया जग में हाथ पसारे जायेगा।
जप ले बन्दे.....।टेक।।

भाई बहन और कुटुम्ब कबीला, काम न तेरे आयेगा–२।
वीर प्रभु की शरण ले अन्त समय पछतायेगा।
जप ले बन्दे.....।१।।

तू जब बन्दे जग से छूटे, मिल जाये ओढ़ बिछौना रे–२।
माटी तकिया माटी सिरहाना, माटी ओढ़ बिछौना रे।
जप ले बन्दे.....।।२।।

दो गज फिर कफन मँगाकर, काठ की घोड़ी चढ़ाया रे–२।
चारों पल्ले आग लगा दी, जीवन दीप बुझाया रे।
जप ले बन्दे.....।।३।।

नमन तुम्हें भेजा है

तर्ज :– फूल तुम्हें भेजा है

नमन तुम्हें भेजा है गुरूवर चाहे तो स्वीकार करो।
दर्शन देना इन भक्तों को, इतनी विनय स्वीकार करो।
फूल तुम्हें.....।टेक।।

भक्त खड़े हैं दर्शन करने, दर्शन की मत देर करो।
पाप हमारे पुण्य बनेंगे, तुम्हारे ही दर्शन से गुरूवर।
पाप हमारे पुण्य होय तो, सफल हुए दर्शन से।
फूल तुम्हें.....।१।।

लख चौरासी के फंदे में, जीवन उकता जाता है।
मुश्किल भारी कर्मो की है, मन मेरा घबराता है।
चढ़ सकता हूँ उस मंजिल तक, तेरा सहारा मिल जाये।
फूल तुम्हें.....।।२।।

ओ जगत के शांति दाता

तर्ज :— ओ बसन्ती पवन पागल

ओ जगत के शांति दाता, शांति जिनेश्वर।
जय हो तेरी।टेक।।

मोह माया में फंसा, तुझको भी पहिचाना नही।
ज्ञान है ना ध्यान दिल में, धर्म को जाना नहीं।
दो सहारा, मुक्ति दाता, शांति जिनेश्वर।
जय हो तेरी.....।।

बनके सेवक हम खड़े हैं, आज तेरे द्वार पे।
हो कृपा जिनवर तो बेड़ा, पार हो संसार से।
तेरे गुण स्वामी मैं, गाता, शांति जिनेश्वर।
जय हो तेरी.....।।

किसको मैं अपना कहूँ, कोई नजर आता नहीं।
इस जहाँ में आप बिन कोई भी मन भाता नही।
तुम ही हो त्रिभुवन विधाता, शांति जिनेश्वर।
जय हो तेरी.....।।

भक्ति करता छूटे म्हारा प्राण

भक्ति करता छूटे म्हारा प्राण, प्रभु जी एवु माँगू छूं।
रहे चरण कमल माँ ध्यान, प्रभु एवु माँगू छूं।
थारो मुखड़ा प्रभुजी मैं जोया करूँ।
रात्रि दिवस भजन थारा बोल्या करूँ।
श्वासें श्वासें रहे थारो ध्यान, प्रभु एवु माँगू छूं।
भक्ति.....।।

म्हारी आशा निराशा करजे नहीं।
म्हारा अवगुण हिया माँ धरजे नहीं।
रहे अन्त समय थारो ध्यान, प्रभु एवु माँगू छूं।
भक्ति.....।।

म्हारा पाप निरताप समादि दीजे।
थारा, भक्त चरण माँ राखा लीजे।
निर्विकल्प दशा में छूटे प्राण, प्रभु एवु माँगू छूं।
भक्ति.....।।

जंगल जंगल पर्वत पर्वत

तर्ज :– नगरी–नगरी द्वारे द्वारे

जंगल जंगल पर्वत पर्वत ढूँढू रे साँवरिया।
नेमि प्रभु जी कोई बता दे, मझको तो डगरिया।
जंगल.....।।

मैंने तो बस यही सुना था, वो जूनागढ़ आयेंगे–२।
लें बारात आयेंगे नेमि जी, मुझे ब्याह ले जायेंगे–२।
मगर न आये द्वारे तक मैं देखती रही डगरिया।
जंगल.....।।

पशुओं का तो क्रन्दन सुनकर, उन्हें बँधाई धीर रे–२।
मुझको खता हुई क्या ऐसी, बने आप वे वीर रे–२।
अब तो नाथ तुम्हारे बिन, मैं हो गई रे बावरिया।
जंगल.....।।

खड़ी–खड़ी मैं बाँट निहारूँ, लिये हाथ में माला रे–२।
जाने कब दर्शन देंगे वो, मात शिवा के लाला रे–२।
भनक पड़ी यह कान में मेरे चले गये मेरे साँवरिया।
जंगल.....।।

आती हूँ मैं भी प्रभु जी सब कुछ, ठाठ हवेली छोड़कर–२
मोह कर्म का नाश करूँगी, आपके दर्शन पायकर–२।
चलूँ तुम्हारे पथ पर अब ये छोड़ चली नगरिया।
जंगल.....।।

बाजे कुण्डलपुर में बधाई

बाजे कुण्डलपुर में बधाई, कि नगरी में वीर जन्में।
कि नगरी में वीर जन्में, महावीर जी।टेक।।
जागे भाग है त्रिशला माँ के–२।
कि त्रिभुवन नाथ जन्मे–२, महावीर जी। बाजे.
शुभ घड़ी जनम की आई–२।
कि स्वर्ग से देव आए–२, महावीर जी। बाजे.
तेरा न्वहन करे मेरू पर–२
कि इन्द्र जल भर लाए–२, महावीर जी। बाजे.
तुझे देवियाँ झुलावे पलना–२।
कि मन में मग्न होके–२, महावीर जी। बाजे.
तेरे पलने में हीरे मोती–२,
कि डोरियों में लाल लटके–२, महावीर जी। बाजे.
अब ज्योति है तेरी जागी–२।
कि सूरज चांद छिप जाए–२, महावीर जी। बाजे.
तेरे पिता लुटायें मोहरें–२।
खजाने सारे खुल जाएँगे–२, महावीर जी। बाजे.
हम दर्शन को तेरे आए–२
कि पाप सारे कट जाएंगे–२, महावीर जी। बाजे.

मेरी एक ही तमन्ना

तर्ज :– मुझे इश्क है तुझी से

मेरी एक ही तमन्ना, गुरूवर अरूण सागर।
रहना न दूर हमसे, लेना खबर हमारी।।टेक।।
तू पास जिनके रहता, रहता वहाँ सवेरा।
तू दूर जिनके रहता, रहता वहाँ अन्धेरा।
तेर बगैर गुरूवर, दिन भी है रात कारी।
रहना न दूर हमसे.....।।
उल्फत के रंग तेरा, कुछ ऐसा मुझपे छाया।
बनकर तेरा दीवाना, तुझको रिझाने आया।
अब आस–पास तेरे, बीते समय हमारा।
रहना न दूर हमसे.....।।
बनकर के वीर मांझी, अब पार तो उतारो।
गुरूवर मैं हूँ तुम्हारा, एक बार तो पुकारो।
समझूँ न रीत तेरी, ऐसा हूँ मैं अनाड़ी।
रहना न दूर हमसे.....।।

मोक्ष पद मिलता है

मोक्ष पद मिलता है, धीरे धीरे। मन्दिर जाऊँ दर्शन पाऊँ।
प्रभु चरणों में ध्यान लगाऊँ, लगन बढ़ती है धीरे–धीरे।
मोक्ष पद.....।।१।।
ईर्ष्या छोडू, समता धारूँ, प्रभु चरणों में सब कुछ वारूँ।
कषाय नशती, धीरे–धीरे। मोक्ष पद.....।।२।।
ममता छोडू, सत्संग पाऊँ, मूल गुणों को मैं अपनाऊँ।
ज्ञान बढ़ता है धीरे–धीरे। मोक्ष पद.....।।३।।
इच्छाएं रोकूँ, संयम धारूँ, बारह भावना मन में विचारूँ।
तपस्या बढ़ती, धीरे–धीरे। मोक्ष पद.....।।४।।
परिग्रह छोडू, दीक्षा धारूँ, सोहं–सोहं, मन में विचारूँ।
तपस्या झरते है, धीरे–धीरें। मोक्ष पद.....।।५।।
सब जीवों से क्षमा कराऊँ, केवल ज्ञान की ज्योति जगाऊँ।
मैं शिवपुर जाऊँ, धीरे–धीरे। मोक्ष पद.....।।६।।

मुझे ऐसा वर दे दो

तर्ज :– संसार है एक नदिया....

मुझे ऐसा वर दे दे, गुणगान करूँ तेरा
इस बालक के सिर पे, गुरू हाथ रहे तेरा
मुझे ऐसा वर दे दे, गुणगान करूँ तेरा....।टेक।।
सेवा नित तेरी करूँ, तेरे द्वार पे आऊँ मैं–२।
चरणों की धूलि को, नित शीश लगाऊँ मैं–२।
चरणामृत पाकर के, नित्य कर्म करूँ मेरा।
इस बालक के सिर पे, गुरू हाथ रहे तेरा।
मुझे ऐसा...।१।।
भक्ति और शक्ति दो, अज्ञान को दूर करो–२।
अरदास करूँ गुरूवर, अभिमान को चूर करो–२।
नहीं द्वेष रहे मन में, रहे वास गुरू तेरा।
इस बालक के सिर पे, गुरू हाथ रहे तेरा।।
मुझे ऐसा...।।२।।
विश्वास हो ये मन में, तुम साथ ही हों मेरे–२।
तेरे ध्यान में सोऊँ मैं, सपनों में रहो मेरे–२।
चरणों से लिपट जाऊँ, तुम ख्याल करो मेरा।
इस बालक के सिर पे, गुरू हाथ रहे तेरा।।
मुझे ऐसा...।।३।।

मेरे यश कीर्ति को गुरू मुझसे दूर रखो।
इस मन मन्दिर में तुम भक्ति भरपूर भरो।
तेरी ज्योति जगे मन में, नित ध्यान धरूँ तेरा।
इस बालक के सिर पे, गुरू हाथ रहे तेरा।।
मुझे ऐसा...।।४।।

मनवा मगन भमो

मनवा मगन भमो साधु गुण गाय के
साधु गुण गाय के गुरू के गुण गाय के
हम खानें पेड़ा जलेबी मंगाय के
साधु लेवे शुद्ध आहार अन्तराय टाल के
मनवा.....
हम सोवें गद्दा पे तकिया लगया के
साधु सोवें शुद्ध भूमि तरवत विछाय के
मनवा.....
हम देखे खेल नाटक सिनेमा में जायके
साधु देखे समयसार मन को लगाय के
मनवा.....
हम चले रेल मोटर चाले इतराम के
साधु चले धीरे धीरे जीवों के बचाय के
मनवा.....

आ दर्श दिखा दे गुरूदेव

तर्ज :– आ लौट के आजा मेरे मीत

आ दर्श दिखा दे गुरूदेव, तुझे तेरे लाल बुलाते हैं।
तुझे रो रो पुकारे मेरे नैन तुझे तेरे लाल बुलाते हैं।
आ दर्श दिखा दे गुरूदेव, तुझे तेरे लाल बुलाते हैं।।टेक।।
आँखों के आँसू सूख चुके हैं, अब तो दरश दिखा दे।
कब से खड़े हैं दर पर तेरे, मन की प्यास बुझा दे।
तेरी लीला निराली गुरूदेव, तुझे तेरे लाल बुलाते हैं।
तुझे रो–रो पुकारे मेरे नैन, तुझे तेरे लाल बुलाते हैं।।१।।
बीच भंवर में नैया पड़ी है, आकर तू पार लगा दे।
तेरे सिवा मेरा कोई नहीं है, आकर गले से लगा ले।
क्यों देर लगा दी गुरूदेव, तुझे तेरे लाल बुलाते हैं।
तुझे रो–रो पुकारे मेरे नैन, तुझे तेरे लाल बुलाते हैं।।२।।
डूब रहा है सुख का ये सूरज गम की बदरिया है छायी।
उजड़ गयी है बगिया जीवन की मन की कली मुरझाई।
करें विनती ये बालक आज, तुझे तेरे लाल बुलाते हैं।
तुझे रो–रो पुकारे मेरे नैन, तुझे तेरे लाल बुलाते हैं।।३।।
वैसे तो तुम हो मन में हमारे, आँखें नहीं मानती हैं।
एक पल गुरू से अब ये बिछुड़कर, रहना नहीं चाहती है।
बरबस बरसाये नीर, तुझे तेरे लाल बुलाते हैं।
तुझे रो–रो पुकारे मेरे नैन, तुझे तेरे लाल बुलाते हैं।।४।।

गुरूदेव मेरे तुमको

तर्ज :– हम तुमसे जुदा होके

गुरूदेव मेरे तुमको, भक्तों ने पुकारा है।
आओ अब आ जाओ, गुरू तेरा सहारा है।टेक।।
है चारों तरफ छाया, घनघोर अंधेरा है।
अब जायें कहाँ बोलो, तूफानों ने घेरा है।
हे नाथ अनाथों को, तेरा ही सहारा है।।
गुरूदेव...।१।।

मंझधार पड़ी नैया, डगमग डोला खाये।
मिल जाओ हमें आकर, हम भव से तर जायें।
बिन तेरे नहीं जग में, एक पल भी गुजारा है।।
गुरूदेव...।।२।।

तेरे इन चरणों की, धूलि ही जो मिल जाये।
भटके हुए राही को, निज मंजिल मिल जाये।
किस्मत भी चमक जाये, जो चमके सितारा।।
गुरूदेव...।।३।।

सेवा गुरू चरणन की, मुक्ति भव तरणन की।
महिमा गुरू वरणन की, ज्ञाता शुभ कर्मण की।
गुरू ज्ञान संजीवन की, बहती एक धारा है।।
गुरूदेव...।।४।।

भ्रम सम गुरू शक्ति को, कोई पार नहीं पाये।
दो दर्शन अब गुरूवर, चरणों में लिपट जायें।
ये भक्त सदा करता, गुणगान तुम्हारा है।।
गुरूदेव...।।५।।

सज धज कर जिस दिन

सज धज कर जिस दिन मौत की सहजादी आयेगी
न सोना काम आयेगा न चांदी आयेगी
सजधज कर.....
छोटा सा तू कितने बड़े अरमान है तेरे
मिट्टी का तू सोने के सब सामान है तेरे
मिट्टी की काया मिट्टी में जिस दिन समायेगी
न सोना काम.....
कोठी वही बंगला वही बगिया रहे वही
पिंजरा वही पंछी वही है बागवा वही
ये तन का चोला आत्मा जब छोड़ जायेगी
न सोना काम.....
पर खोल के पंछी तू पिंजरा तोड़ के उड़ जा
माया महल के सारे बन्धन छोड़ के उड़जा
धड़कन में जिसदिन मौत तेरी गुन गुनायेगी
न सोना काम.....

सागर से भी गहरा बन्दे

तर्ज :– चांदी की दीवार न तोड़ी

सागर से भी गहरा बन्दे, गुरूदेव का प्यार है।
देख लगा कर गोता इसमें तेरा बेड़ा पार है।
सागर से भी गहरा बन्दे.....।टेक।।

भवसागर में एक दिन तेरी जीवन नैया डूबेगी।
खेते–खेते इक दिन तो पतवार भी तेरी टूटेगी।
जायेगा उस पार तू कैसे चारों ओर अंधकार है।
सागर से भी गहरा बन्दे.....।१।।

सौंप दे नैया गुरूदेव को वो ही पार लगा देंगे।
पैर पकड़ ले जाकर के तू, सोये भाग्य जगा देंगे।
पापी से भी पापी को भी करते ना इंकार है।
सागर से भी गहरा बन्दे.....।।२।।

संत समागम हरि कथा भी गुरू की कृपा से पाओगे।
खुद आयेंगे महावीरा गर गुरू का आशीष पाओगे।
बन्दे बिन गुरू कृपा के तेरी जिंदगी बेकार है।
सागर से भी गहरा बन्दे.....।।३।।

थोड़ा ध्यान लगा गुरूवर

तर्ज :– एक तेरा साथ हमको दो जहाँ से प्यारा है

थोड़ा ध्यान लगा गुरूवर दौड़े–दौड़े आयेंगे।
तुझे गले से लगायेंगे।
अँखियाँ मन की खोल, तुझको दर्शन वो करायेंगे।।टेक।।
तुझे गले से लगायेंगे, थोड़ा ध्यान लगा...।।टेक।।
हैं राम रमैया वो हैं, कृष्ण कन्हैया वों वही मेरा वीर है।
सत्कर्म राह पर चलना, सिखाते जो वही जगदीश है।
प्रेम से पुकार–२, तेरे पाप को जलायेंगे–२।
तुझे गले से लगायेंगे, थोड़ा ध्यान लगा...।।२।।
कृपा की छाया में बैठायेंगे तुझको, कहाँ तुम जाओगे।
उनकी दया दृष्टि जब–जब पड़ेगी तुम ये भव तर जाओगे।
ऐसा है विश्वास–२, मन में ज्योत वो जगायेंगे–२
तुझे गले से लगायेंगे, थोड़ा ध्यान लगा...।।३।।
मुनियों ने ऋषियों ने गुरू शिष्य महिमा का किया गुणगान है।
गुरूवर के चरणों में झुकती सकल दृष्टि झुके इंसान है होऽऽ।
महिमा है अपार–२ सत् की राह वो दिखायेंगे–२।
तुझे गले से लगायेंगे, थोड़ा ध्यान लगा...।।४।।

गुरूवर ओ मेरे गुरूवर

तर्ज :– मैया ओ गंगा मैया

गुरूवर ओ मेरे गुरूवर, गुरूवर ओ मेरे गुरूवर।
मेरे गुरूवर तेरे द्वार आता रहूँ।
तेरे चरणों में मस्तक नवाता रहूँ, नवाता रहूँ।
गुरूवर ओ मेरे गुरूवर....।टेक।।

दे दो वरदान गुरूवर ये मुझको, जिऊँ जबतक भुलाऊँ न तुझको।
नाम जपता रहूँ ध्यान धरता रहूँ।
गीत तेरे ही तुझको सुनाता रहूँ, सुनाता रहूँ।
गुरूवर ओ मेरे गुरूवर....।१।।

हो तुम्हीं मेरे मन में समाये, क्यों गुरूजी मुझे तुम भुलाये।
तू सहारा मेरा, तू किनारा मेरा।
पास तुझको सदा ही मैं पाता रहूँ, मैं पाता रहूँ।
गुरूवर ओ मेरे गुरूवर....।।२।।

क्या अलौकिक छटा है तुम्हारी, सारे भक्तों को लगती है प्यारी।
तेरी महिमा महान क्या अनोखी है शान।
इस छटा पर मैं तन मन लुटाता रहूँ, लुटाता रहूँ।
गुरूवर ओ मेरे गुरूवर....।।३।।

गुरूदेव दया करके

तर्ज :– ए मेरे दिले नादान, तू गम से न घबराना

गुरूदेव दया करके, कर्मों से छुड़ा देना
पा जाऊँ मैं आतम को, वो राह दिखा देना।।टेक।।
करूणा निधि नाम तेरा करूणा को जगाओ तुम।
मैत्री के भावों को हे नाथ जगाओ तुम।
प्रतिपल समता मैं रहूँ संवर वो सिखा देना
गुरूदेव.....।।१।।
मैं अनादि से घायल हूँ, उपचार कराओ तुम।
हो जाऊँ निरोग सदा औषध वो पिलाओ तुम।
पा जाऊँ परमपद को वो राह बता देना।
गुरूदेव.....।।२।।
टूटी हुई वीणा के सब तार मिला दो तुम।
गाऊँ मैं मधुर संगीत ये साज बना दो तुम।
यह गीत जो बिछुड़ा है गायक से मिला देना।
गुरूदेव.....।।३।।
बहती हुई सरिता की आवाज मिटा दो तुम।
मैं हूँ दीपक स्वामी ज्योति प्रगटा दो तुम।
ये बूंद जो बिछुड़ी है सिन्धु से मिला देना।
गुरूदेव.....।।४।।

लाखों को सुधारा है, मुझको भी सुधारो तुम।
पाऊँ मैं चरण तेरे मेरी ओर निहारों तुम।
मेरा जन्म मरण टूटे वो भक्ति सिखा देना।
गुरूदेव.....।।५।।

मेरे गुरूवर मेरी

मेरे गुरूवर मेरी बस यही आस है
पार कर दोगे बेड़ा ये विश्वास है
मन के मन्दिर में आँखो के रस्ते तुझे
मेरे भगवान लाना पड़ा है मुझे
मेर दिल से न जाना ये अरदास है
मेरे.....

तेरे रहने का मन्दिर बनाया है मन
तेरे चरणों में अर्पण किया तन और मन
मेरे दिल से न जाना ये विश्वास है
मेरे.....

प्रेम की डोर से बांधकर गुरूवर
मन के मन्दिर में रखूंगा तुमको विभो
तुमको जाने न दूंगा ये अवकाश है
मेरे.....

नेहा लगाके गुरूवर

तर्ज :—परदेशियों से न अँखिया मिलाना

नेहा लगाके गुरूवर, हमें न भुलाना।
पौधा लगाया तुमने, उसे विकसाना।
हमने सुना तुम हो, करूणा के सागर।
विदा फिर क्यों होते हो, हमको रूलाकर।
कहाके दयालु तुम तो, दया दिल में लाना।
नेहा लगाके.....।१।।

तारों की शोभा जैसे, चन्दा से होती।
बगिया की शोभा वैसे, माली से होती।
बिन माली बगिया के, कैसे सरसाना
नेहा लगाके.....।।२।।

खता जो हुई हो हमसे, हमें माफ करना।
मेहरबानी करके, कृपा फिर से करना।
जीवन है धन्य तुम्हारा सुन लो तराना।
नेहा लगाके.....।।३।।

मेरा आपकी कृपा से

मेरा आपकी कृपा से सब काम हो रहा हैं।
करते हो आप गुरूवर मेरा नाम हो रहा हैं।
मेरा आपकी कृपा.....।।

पतवार के बिना ही मेरी नाव चल रहीं हैं।
हैरान है जमाना, मंजिल भी मिल रही हैं।
करता नहीं मैं कुछ भी, सब काम हो रहा हैं।
मेरा आपकी कृपा.....।।

तुम साथ होतो मेरे किस चीज की कमी है।
किसी ओर चीज की अब दरकार ही नहीं हैं।
तेरे साथ ये गुलशन ये गुलफाम हो रहा है करते हो।
मेरा आपकी कृपा.....।।

मैं तो नहीं हूँ काबिल, तेरा पार कैसे पाऊँ।
टुटी हुई वाणी से गुणगान कैसे गाऊँ
तेरी ही प्रेरणा से ये कमाल हो रहा है।
मेरा आपकी कृपा.....।।

भक्त तुम्हारा याद में रोये

तर्ज :– भला किसी का कर ना सको तों

टेक :– जाने वाले एक सन्देशा, गुरूवर ये तुम कह देना।
भक्त तुम्हारा याद में रोये, उसको दर्शन दे देना।
जिसको गुरूवर दर पे बुलाएं, किस्मत वाले होते हैं।
जो उनसे कभी, मिल ना पाऐं, छुप–२ कर वो रोते है।
जितनी परीक्षा ली है मेरी, और किसी की मत देना।
भक्त तुम्हारा.....।।

तूने कौन सा पुण्य किया है, दर पे तुझे बुलाया है।
मैंने कौन सा पाप किया है, दिल से मुझे भुलाया है।
एक बार मुझे दर पे बुला ले, इतनी कृपा कर कह देना।
भक्त तुम्हारा.....।।

मुझको ये विश्वास है दिल में, मेरा बुलावा आएगा।
गुरूवर मुझको दर्शन दे कर, अपने पास बिठाएगा।
उनसे जाकर इतना कहना, मेरा भरोसा टूटे ना।
भक्त तुम्हारा.....।।

कहना उनसे मन मन्दिर में, मैंने उन्हें बिठाया है।
गुरू रूप में वीर प्रभु को, अब तो मैंने पाया है।
आशा केवल एक यहीं है, मुक्ति मार्ग दिखला देना।
भक्त तुम्हारा.....।।

विनती ना सुनोगे

विनती ना सुनोगे, तो मै शोर मचा दूगी।
सारे भक्तों को मैं, तेरा पता बता दूगी।।टेक।।
चुपके–चुपके से तुम, हर एक को देते हो।
मैं कब से दर पे खड़ी, झोली फैला के बाबा।
विनती.....।।
करती रहती कोशिश, रातो को और दिन में।
पर मुझ पे ना नजरे, क्यों करते नहीं गुरूवर।
विनती.....।।
मागूं ना मैं कुछ भी, बस मागूं एक चीज।
रखना चरणों में ही, है मेरी ये अर्जी।
विनती.....।।
बच्चे सब तेरे है, गलती को करना माफ।
मुक्ति का हमको तो, दे दो गुरूवर जी दान।
विनती.....।।

दिन रात मेरे स्वामी

दिन रात मेरे स्वामी मैं भावना ये भाऊँ।
देहान्त के समय में तुमको न भूल जाऊँ।।टेक।।
शत्रु अगर कोई हो सन्तुष्ट उसको कर दूँ।
समता का भाव धरकर, सब से क्षमा कराऊँ।।१।।
त्यागू आहार पानी औषध विचार अवसर।
टूटे नियम न कोई दृढ़ता हृदय में लाऊँ।।२।।
जागे नहीं कषाय ना वेदना सतावें।
तुमसे ही लौ लगी हो दुर्ध्यान को भगाऊँ।।३।।
आतम स्वरूप अथवा आराधना विचारूँ।
अरिहन्त, सिद्ध, साधु रटना यही लगाऊँ।।४।।
धर्मात्मा निकट हो चरचा धर्म सुनावे।
वे सावधान रखे गाफिल न होने पाऊँ।।५।।
जीने की हो ना वाञ्छा, मरने की हो न इच्छा।
परिवार मित्र जन से मैं मोह को हटाऊँ।।६।।
भोगे जो भोग पहले उनका न होवे सुमरण।
मैं राज्य सम्पदा या पद इन्द्र का न चाहूँ।।७।।
रत्नत्रय का हो पालन, हो अन्त में समाधि।
भक्तो की प्रार्थना यह, जीवन सफल बनाऊँ।।८।।

एक आरजू है जब मिले

तर्ज :– तोहफा कबूल है

टेक :– सारे जहाँ से प्यारा है, दरबार आपका।
एक आरजू है जब मिले दीदार आपका।
माली हो तुम जहान के, गुलशन के फूल हम।
तुम हो बड़े महान और, चरणों की धूल हम।
तुमने मिटाया है यहाँ, अन्धकार पाप का।
एक आरजू.....।।

जब तक ये जिन्दगी रहे, लब पे तेरा नाम हों।
भक्ति में लीन हो ये मन, तेरा गुलाम हों।
हो जाए गर इशारा, ईक बार आपका।
एक आरजू.....।।

कब से खड़ा हूँ दर तेरे, यू ना सताओ तुम।
आ जाओं अब फरीदाबाद में, दर्शन को देने तुम।
सांसो में बस गया है मेरे, बस नाम आपका
एक आरजू.....।।

भगवन समय हो ऐसा

तर्ज :– वो दिल कहाँ से लाऊँ

भगवन समय हो ऐसा, जब प्राण तन से निकलें।
शुद्धात्मा हो मेरी, और मोह मन से निकलें।
मुनिराज मेरे सन्मुख, उपदेश दे रहे हो।
उपदेश सुन कषायें, मेरे बदन से निकलें।।
सातों व्यसन को तजकर, मैं काम क्रोध छोड़ूँ।
माया व लोभ मेरे, अन्तःकरण से निकलें।।
तेरी शांति छवि निहारूँ, अपने हृदय के भीतर।
तुभ्यं नमामि जिनवर, आदीश मुख से निकलें।।
एकाग्र चित्त से मैं, करता हूँ ध्यान तेरा।
अरिहंत नाम हरदम, मेरे वचन से निकलें।।
माता–पिता भी जितने, होवे कुटुम्बी सारे।
उनके ममत्व छूटे, जब प्राण तन से निकलें।।
वैरी मेरे बहुत से, होवें जो इस जगत में।
उनसे क्षमा करा लूँ, जब प्राण तन से निकलें।।
पूर हों भाव दिल के, ये ही कहे ये सेवक।
नवकार पढ़ते–पढ़ते, मेरे प्राण तन से निकलें।।

मीठो-मीठो बोल थारो काई

तर्ज :– धीरे–धीरे बोल कोई.....

मीठो–मीठो बोल थारो काई बिगडे़,
काई बिगडे़ रे थारो काई बिगडे़।
या जीवन में दम नहीं, कब निकले प्राण मालूम नहीं।
मीठो–मीठो.....।।

सोच समझ ले स्वार्थ का संसार।
लाख जतन कर छूटेगा घर बार।
तू जान ले, पहचान ले, संसार किसी का घर नहीं।
कब निकले.....मीठो–मीठो।।१।।

प्रभुवर की महिमा है अपरम्पार।
डोलती नैया की है ये पतवार।
तू जान.....मीठो–मीठो।।२।।

भक्ति की जो ज्योति जलायेगा।
कर्मो से वो मुक्ति पायेगा।
तू जान.....मीठो–मीठो।।३।।

गुरूवर ये कहते है बारम्बार।
तप संयम ही जीवन का आधार।
तू जान.....मीठो–मीठो।।४।।

दीन बन्धु दयालु

तर्ज :— पास बैठो तबियत बहल जायेगी

दीन बन्धु दयालु दया कीजिए।
वरना हमको यहाँ से उठा लीजिए।।टेक।।
मेरे भगवान गरीबी किसी को न दे।
मौत दे दे मगर बदनसीबी न दे।
घटनाओं से सबको बचा लीजिए।
वरना हमको.....।।
मेरी नैया पुरानी भँवर में पड़ी।
बीच सागर में जाकर के लहरा रही।
पार कर न सको तो डुबा दीजिए।
वरना हमको.....।।
मैं गुनहगार हूँ तेरे द्वार खड़ा।
हाथ जोड़े खड़ा सर झुकाये खड़ा
माफ कर न सको तो सजा दीजिए।
वरना हमको.....।।
तुमने मुझको बुलाया चला आया मैं।
तेरी दुनिया में आके पछताया मैं।
ऐसी दुनिया से मुझको रिहा कीजिए।
वरना हमको.....।।

ये धर्म है आतम ज्ञानी का

तर्ज :– ये देश है वीर जवानों का...

ये धर्म है आतम ज्ञानी का, तीर्थंकर महावीर स्वामी का।
इस धर्म का भैया क्या कहना, ये धर्म है वीरों का गहना।
जय हो जय हो.....।टेक।।

यहाँ समयसार का चिंतन है।
यहाँ नियमसार का मंथन है।
यहाँ रहते हैं ज्ञानी मस्ती में।
मस्ती है सबकी अस्ती में।
जय हो जय हो.....।।१।।

अस्ती है मस्ती ज्ञानी की।
ये बात भेद विज्ञानी की।
यहाँ झरते हैं झरने आनन्द के।
आनन्द ही आनन्द आतम में।
जय हो जय हो.....।।२।।

यहाँ बाहुबली से ध्यानी हुए।
यहाँ कुन्द–कुन्द से ज्ञानी हुए।
हाँ देव गुरू ने यह बोला।
जैन धर्म ही अनमोला
जय हो जय हो.....।।३।।

संकल्प एक ही हो इन्सान

संकल्प एक ही हो इन्सान हम बनेंगे।
इन्सान बन गये तो, भगवान हम बनेंगे।।
हो जैन, बौद्ध, मुस्लिम, हिंदू हो या ईसाई–२।
आपस में लगते भाई–२, सबसे गले मिलेंगे..।१।।
मन्दिर तो एक ही है, दीपक है न्यारे–न्यारे–२।
लगते हैं कितने प्यारे–२, जलते रहे जलेंगे...।२।।
हम एक ही गगन के, चमके हुए सितारे–२।
लगते हैं कितने प्यारे–२, हँसते रहे हँसते...।३।।
हम एक ही चमन के, दमके हुए सितारे–२।
लगते हैं कितने प्यारे–२, खिलते रहे खिलेंगे.।४।।
हो गीता, कुराण, आगम, गुरू पंथ हो त्रिपिटक–२।
इंसानियत की गाथा, हम प्रेम से पढ़ेंगे..।५।।

इतनी शक्ति हमें देना

इतनी शक्ति हमें देना दाता। मन का विश्वास कमजोर हो ना।
हम चले नेक रस्ते पे हमसे। भूलकर भी कोई भूल हो ना।
दूर अज्ञान के हो अंधेरे, तू हमें ज्ञान की रोशनी दे।
हर बुराई से बचते रहे हम जितनी भी दे भली जिंदगी दे।
बैर हो ना किसी का किसी से, भावना मन में बदले की होना।
हम चले नेक रस्ते.....।१।।

हम न सोचे हमें क्या मिला है, हम ये सोचे किया क्या है अर्पण।
फूल खुशियों के बाँटें सभी को, सबका जीवन भी बन जा मधुबन।
अपनी करूणा का जल तू बहाके, कर दे पावन हर एक मन का कोना।
हम चले नेक रस्ते.....।।२।।

हर तरफ जुल्म है बेबसी है, सहमा सहमा सा हर आदमी है।
पाप का बोझ बढ़ता ही जाए, जाने कैसे ये धरती थमी है।
बोझ ममता से तू ये उठाले, तेरी रचना का ये अन्त होना।
हम चले नेक रस्ते.....।।३।।

हम अँधेरे में है रोशनी दे, खो न दे खुद की ही दुश्मनी से।
हम सजा पायें अपने किये की, मौत भी हो तो सह ले खुशी से।
कल जो गुजरा है फिर से ना गुजरे, आने वाला वो कल ऐसा होना।
हम चले नेक रस्ते.....।।४।।

मुझे रास आ गया है

मुझे रास आ गया है, तेरे दर पे सर झुकाना
तुझे मिल गया पुजारी, मुझे मिल गया ठिकाना।
मुझे रास.....।टेक।।

मेरा सर वो सर नहीं है, कहीं रख दूँ या झुका दूँ।
अब रख दिया है दर पर, आता नहीं उठाना।
मैली रास.....।१।।

परवाह नहीं है मुझको, बदले चाहे जमाना।
मेरी जिन्दगी के मालिक, कहीं तुम बदल न जाना।
मैली रास.....।।२।।

बस आरजू यही है, दम तेरे दर पे निकले।
मेरी जिन्दगी के आका, ठोकर न तुम लगाना।
मैली रास.....।।३।।

दर्शन वह है जो अंधकार को सितारा बना दें
पोरूष वह है जो मझधार को किनारा बना दे
फूलों से प्यार करने वालो प्यार तो वह है जो
आँखों के काँटे को भी आँखों का तारा बना दे

श्री सिद्धो की स्तुति

आज देखो मन्दिर जी में कैसी जय जयकार है
सिद्धों का दरबार है ये सिद्धो का दरबार है
धन्य धन्य आज घड़ी कैसी सुखाकार है
सिद्धो का दरबार है ये सिद्धो का दरबार है,
जो करते इन सिद्धों की पूजा उनको नहीं मिलता भव दूजा
ऐसी सिद्धो की महिमा अपरम्पार है
सिद्धो का दरबार है ये सिद्धो का दरबार है
खुशियां अपार आज हर दिल में छाई हैं
दर्शन के हेतु देखो जनता अकुलाई है
चारों ओर देख लो भीड़ बेशुमार है
सिद्धो का.....
भक्ति में नृत्यगान कोई हैं कर रहे
आत्म सुबोध पाकर पापो से डर रहे
पल–पल पुण्य का भरे भण्डार है
सिद्धो का.....
जय जय के नाद से गुँजा आकाश है
काटेंगे पाप सब निश्चय से आज है
देखलो सौभाग्य खुला आज मुक्ति हार है
सिद्धो का.....

उमरिया रह गई थोडी थोडी

रे मोहे भव सागर से तार
उमरिया रह गई थोडी
कैलाश गिरि को जाइयो
और आदिनाथ जी से कहियो
रे मोहे भव सागर से तार
उमरिया रह गई.....

चम्पापुरी को जाइयो
और वासुपूज्य जी से कहियो
रे मोहे भव सागर से तार
उमरिया रह गई.....

गिरनार गिरि को जाइयो
और नेमिनाथ जी से कहियो
रे मोहे भव सागर से तार
उमरिया रह गई.....

सम्मेद शिखार को जाइयो
और पारस प्रभु को कहियो
रे मोहे भव सागर से तार
उमरिया रह गई.....

पावापुरी को जाइयो
और वर्द्धमान से कहयो
रे मोहे भव सागर से तार
उमरिया रह गई.....

वीर प्रभु के ये बोल

वीर प्रभु के ये बोल, तेरा प्रभु तुझही में डोले
तुझही में डोले, हां तुझही में डोले,
मन की कुंडी को खोल, वीर प्रभु.....
क्यों जाता गिरनार, क्यों जाता काशी
अंतर में है तेरे, घट–घट का वासी
अंतर का कोना टटोल
तेरा प्रभु.....
चारो कषायों को तूने है पाला
आतम प्रभु को, जो करती है काला
इनकी तू संगति को छोड़
तेरा प्रभु.....
पर में जो ढूंढा, न भगवान पाया
संसार को ही है, तूने बसाया
देखो निजातम की ओर
तेरा प्रभु.....
मस्तो की दुनिया में, तू मस्त हो जा,
आतम के रंग में ऐसा तू रंग जा
आतम को आतम में घोल
तेरा प्रभु.....

ओम है परम पिता का धाम

तर्ज :– रघुपति राघव.....

ओम है परम पिता का धाम, भजले प्यारे ऊँ का नाम।
ऊँ है वेदो का वरदान, ऊँ का नाद है ब्रह्म समान।
ऊँ है जीवन, ऊँ है प्राण, ऊँ में रहते स्वयं भगवान।
ऊँ को सुमरो आठो धाम। भज लो.....
ऊँ की ध्वनि है अति पावन, ऊँ का मेघ है मन भावन।
ऊँ का अक्षर है अनुपम, यह सृष्टि का शब्द प्रथम।
इस पर न्यौछावर शब्द तमाम। भज लो.....
ऊँ कहो ओंकार कहो, शब्द ये बारम्बार कहो,
ऊँ की महिमा अपरम्पार, ऊँ करेगा बेडा पार।
यह तो जीवन है संग्राम। भज लो.....
मनुष्य जन्म पाने वालो, जीवन सफल बना डालो
इत उत नाहक मत दौड़ो, ऊँ से नाता नित जोडो।
निश्चय होगा शुभ परिणाम। भज लो.....
ऊँ का नाम है प्रभु का नाम, ऊँ है परमानन्द का धाम,
ऊँ का सुमरन है अनमोल, सभी मुनियों ने देखा तोल।
ऊँ है चंचल चित की लगाम। भज लो.....

जिनवर तू हैं चंदा

तर्ज :– सावन का महीना

जिनवर तू हैं चंदा, तो मैं हूँ चकोर
दर्शन तेरे पाकर, मेरा झूम उठा मन मोर।
नैया खिवैया तू है पार लगैया
किनारे लगा दो मेरी टूटी है नैया।
मांझी तू है मेरा संभालो मेरी डोर।।
दर्शन तेरे.....

अष्ट कर्म को तूने, मार भगाया।
अज्ञानियों को तूने, ज्ञान सिखाया।
कर्मो का तेरे आगे, चले ना कोई जोर।
दर्शन तेरे.....

आया है जिनवर जो भी, तेरी शरणवा,
छवि तेरी पाकर उसका, खोया है मनवा।
विनती मैं भी करता, तू सुन ले चित्त चोर।
दर्शन तेरे.....

सब पाप करम कट जाते है

सब पाप करम कट जाते है, मुनिराज के दर्शन करने से,
सब संशय भ्रम मिट जाते है, मुनिराज के दर्शन करने से।
यह मूरत जग से न्यारी है, छवि परम दिगम्बर प्यारी है।
जग ताप को हरने वाली है, सुख शान्ति को करने वाली हैं।
सब.....

यह पंच महाव्रत थारी है, मुनिराज बड़े उपकारी है,
अरू राग द्वेष निखारी है, सब जीवन के हितकारी है
सब.....

आरंभ परिग्रह छोड़ा है, इस जग से नाता तोड़ा है
शिवनार से नेहा जोड़ा है, संसार से मुँह को मोड़ा है।
सब.....

जो आत्म ध्यान लगाते है वे जैन साधु कहलाते है
ऐसे साधु नजर न आते है, हम सब इनको शीश नवाते है।
सब.....

तुम्हारे दर्शन बिन स्वामी

तुम्हारे दर्शन बिन स्वामी, मुझे ना चैन पड़ती है,
छवि वैराग्य मूरत सामने आँखों के फिरती है।
निशभूषण विगत दूषण, पद्म आसन मधुर भाषण,
नजर नैनों की नासा की जमीं पर से गुजरती है....
हजारों मूरतें हमने बहुत ही गौर से देखीं,
शांति मूरत तुम्हारी सी नहीं नैनों में पड़ती है
मिले गर स्वर्ग की सम्पत अचम्भा कौन है इसमें
तुम्हें जो नैन भर देखे गति दुर्गत की टलती है....
नहीं कर्मों का डर हमको कि जब तक ध्यान चरणों में
तेरे दर्शन से सुनते हैं करम रेखा बदलती है....
जगत सिरताज हम प्यासों को दर्शन भीख ही दे दो
तुम्हारा क्या बिगड़ता है, मेरी बिगड़ी सुधरती है....

बहिरग में करते है धर्म मन मोन
व्यवहार में कहते फिरते है झूठ, चोरी, पाप है
अनारग से कोई पाप कषाय त्यागे तो जाने
क्रोध नही करना चाहिये यह जहरीला सांप है

सोया भाग्य जगा दो गुरूवर

सोया भाग्य जगा दो गुरूवर, सरपे पीछी लगा दो गुरूवर।
पारस को कुंदन कर देती श्वासों को चन्दन कर देती,
श्वास–श्वास इस गागर के, कण–कण में अमृत भर देती–२
अपना दास बनालो गुरूवर, सर पे पीछी लगादो गुरूवर
सोया भाग्य.....

तन के सारे पाप मिटेंगे, मन के सब संताप मिटेंगे,
जन्म–२ के पाप हमारे, वो सब अपने आप मिटेंगे–२
अंतर ज्योति जगादो गुरूवर, सर पे पीछी लगा दो गुरूवर।
सोया भाग्य.....

ये आशीष की गंगा लाये, संयम के तट तक जो लाये,
णमोकार के महामंत्र में, वैरागी मनवा रम जाये–२
बुरे संकल्प काट दो गुरूवर, सर पे पीछी लगा दो गुरूवर।
सोया भाग्य.....

आज ये चर्तुमास मिला है, तन तपते आवास मिला है,
देखो तुम्हें विश्वास मिला है, धरती को आकाश मिला है–२
अब तो तुम सम्हालो गुरूवर, सर पे पीछी लगा दो गुरूवर
सोया भाग्य.....

आया हूँ तेरे दर पे

आया हूँ तेरे दर पे प्रभु ध्यान के लिये
कर्मों की बेड़ियां कटे वरदान ये मिले
हमको मिले आशीष तेरे ध्यान के लिये.....
कितने जनम गंवा चुका ममता के बीच में
कितने कफन बदलता गया राग द्वेष में
अब तो दफन हो कामना वरदान ये मिले.....
विषयों को आग में जला जलता चला गया
मैं खुद ही अपने जाल में फंसता चला गया
छूटे किनारा मोह का वरदान ये मिले.....
निज की व्यथा सुनानी थी तुमको मेरे गुरू
पग तेरे दर की ओर उठे दर्श को प्रभु
निज रूप में हम सब रहे दान ये मिले.....

सिद्धान्त की डगर पर

सिद्धान्त की डगर पर, हमकों दिखना चलके,
यह धर्म है हमारा, धारेंगे ईश बढके।
एकांतवाद तजकर, भवूकूप से बचेंगे।
हे स्याद्ववाद माता, अमृत जु रस पियेंगे।
हे देवशास्त्र गुरूवर जितने भी पूज्य हमारे।
उनकी विनय करेंगे, काटेंगे पाप सबरे।
दुर्व्यसन से बचेंगे, सद आचरण करेंगे।
माता पिता की सेवा, गुरू वचन उर धरेंगे।
यूरोप, चीन आदि जितने भी देशवासी।
राखि साम्यभाव सब पर, देवेंगे धर्म राशि।
दुखियो का दुख हरने, हरदम खडे रहेंगे।
हो सामने जो शत्रु, उनसे भी न डरेंगे।
कर्तव्य पूर्ण करने, मुक्ति सुपथ गहेंगे।
मुनि वेष धार वन में, वसु कम से लडेगे।
ले भेद ज्ञान आयुध, गुरूवर सद लखेंगे।
पर भाव को हटा के, मुक्ति रमा वरेंगे।

तुमको बांध लिया है

तुमको बांध लिया है मन में,
मन की कलियाँ खिल गई रे
मुझ को खुशियां मिल गई रे।
रवि भी वधा हुआ है
पूर्व पश्चिम के बन्धन में
और अरूण भी बंधा हुआ है
निज भक्तों के बंधन में
तुमको.....
तुम्हें बांधकर मुक्त बनूँगा
भक्ति प्रेम के आलिंगन में
उतरोगे तब खो जाऊँगा
मैं अपने ही सूनेपन में
तुमको.....
बैठ नीड़ में चोंच मिलाकर
आपस में इतना प्रेम जताकर
पंछी कहते जान गये रे
प्रेम से रहना आपस में
तुमको.....

मोहे चौरासी के चक्कर

बचाले बचाले महावीर.....

मोहे चौरासी के चक्कर से बचाले महावीर
बचाले महावीर ओ बचाले महावीर
मोहे.....

राजा राणा छत्रपति, हाथिन के अवसार
मरना सबको एक दिन अपनी अपनी वार
मोहे.....

रहिमन धागा प्रेम का मत तोडो चटकाय
टूटे से फिर न जुडे, जुडे गांठ पडा जाय
मोहे.....

दाम बिना निर्धन दुखी, तृष्णावश धनवान
कही न सुख संसार में, सब जग देख्या छान
मोहे.....

रहिमन वे नर मर चुके, जो कुछ मांगन जाय
उनते पहले वे मरे, जिन मुख निकसत नाय
मोहे.....

सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप
जाके हिरदे सांच है ताके हिरदे आप
मोहे.....

मुनिवर ही रहवर है

मुनिवर ही रहवर है, मुनिवर ही मंजिल।
मुनिवर ही मांझी है, मुनिवर ही साहिल।।
मुनिवर ही कामिल है, मुनिवर ही आदिल।
मुनिवर की मेहर से सुलझे हर मुश्किल।।
मुनिवर ने त्याग दिये है ठाठ अमीरी।
जग को नश्वर जाना धरा भेष फकीरी।।
हो वर्षा या गर्मी इनको क्या हो सर्दी।
त्याग तपस्या संयम दिनचर्या इनकी।।
भूले भटको को ये राह दिखालाते है।
तू भी इनकी राह आ आके ये ही गा।
मुनिवर ही

मुनिवर को जो भी सच्चे मन से ध्याएं।
दाता नजर न आएं पर झोली भर जाऐ।।
जो ध्यानं वो पाएं सब संकट मिट जाये।
जो भी जिसकी इच्छा हो वो पूरी हो जाये।
उपदेशो की गंगा तो बहती रहती है।
धारा में तू भी बह बह के ये ही गा।
क्यों आये इतने नर–नारी, भीड़ क्यूं इतनी होरी स।

अरूण सागर के दर्शन

अरूण सागर के दर्शन हित ही, भीड़ ये इतनी होरी स।।
अरूण सागर जी जिस दिन से ही, फरीदाबाद में आये हैं।
धर्म ध्यान की झड़ी लगी है, खुशियाँ बेहद छाये है।।
दूर दूर से भविजन आये, आये छोरा छोरी स
अरूण सागर के दर्शन.....

जीवन में ऐसे अवसर तो बार बार नहीं आवे रे।
ध्यान पूर्वक पाठ करों, क्यूं मन इत उत भटकावें रे।।
यहाँ भी आके छोड़ सके ना, तोरी स ये मोरी स
अरूण सागर के दर्शन.....

काया माया दोनों नश्वर, मत इनका अभिमान करो।
काया से सुकर्म करो नित, माया को बस दान करो।।
जितना माल निकालो, भैया उतनी भरे तिजौरी स।
अरूण सागर के दर्शन.....

अरूण सागर जी जग उपकारी, बिगडी बात बनाते है।
इन्द फन्द सब मिट जाते है, हर उलझन सुलझाते है।।
यही विनय है मेरी बार ही, देर क्यूं इतनी होरी स।
अरूण सागर के दर्शन.....

जय अरूण सागर तूँ रटता चल

जय अरूण सागर जय अरूण सागर जय अरूण सागर तू रटता चल
पूज्य गुरू के दर्शन होगे मन में भाव तू धरता चल
जय अरूण सागर.....

कितना पूज्य उदय है अपना, जो अरूण सागर जी यहाँ आये
संग में अपने धर्म का सागर, ज्ञान की गंगा है लाये
ज्ञान तुम्हे भी मिल जायेगा, इनके प्रवचन सुनता चल
जय अरूण सागर.....

इनके संग में पूज्य क्षुल्लिका माता श्री भी है आये
प्रभु भक्ति में लीन हो कैसे प्रतिदिन हमको समझाये
कट जायेगे कर्म तेरे भी इनकी भक्ति करता चल
जय अरूण सागर.....

इन गुरूवर के यहाँ आने से सारी जनता हर्षायी
प्रौढ युवा जन जन में देखो नई चेतना है आयी
द्वार मोक्ष का मिल जायेगा, इनकी राह पकड़ता चल
जय अरूण सागर.....

गुरूवर के चरणों में आकर कोई नहीं कनराश हुआ
आया जो भी इन चरणों में वो ही भव से पार हुआ
तू भव से तर जायेगा इनके चरण पकड़ता चल
जय अरूण सागर.....

सब मिलकर के जय बोलो रे

सब मिलकर के जय बोलो रे जय हो अरूण सागर की
जय हो अरूण सागर की जय हो अरूण सागर की
सब मिलकर के.....

श्री अरूण सागर जी मुनिवर जहाँ भी है जावे
आपस के बैर मिटाकर वहाँ शान्ति प्रेम फैलावे
तुम हृदय के पट खोलो रे जय हो अरूण सागर की
सब मिलकर के.....

गुरूवर की करूणा देखो सहर्ष यहाँ पर आये
प्रतिदिन उपदेश सुनाकर यहाँ नई चेतना लाये
चरणों में शीश झुकालो रे जय हो अरूण सागर की
सब मिलकर के.....

जो भी चरणों में आता श्रद्धा से शीश झुकाता
इनके दरबार में आके मन वांछित फल पा जाता
तुम भी पापों को धो लो रे जय हो अरूण सागर की
सब मिलकर के.....

ये धन्य भाग मैं पाया जो गुरू की शरण में आया
चरणों में इनके आकर गुणगान गुरू का गाया
दिल अपना आ टटोलो रे जय हो अरूण सागर की
सब मिलकर के.....

लाखों को नाथ उबारा मुझको भी नाथ उतारो
मेरी नैया बीच भंवर में इसको भी पार उतारो
मुझे शरण में अपनी ले लो रे जय हो अरूण सागर की
सब मिलकर के.....

श्री पुष्पदंत फुलवारी से

तर्ज – मेरे सामने वाली खिड़की में

श्री पुष्पदंत फुलवारी से यहाँ मुनिवर ज्ञानी है
है नाम श्री अरूण सागर जो नगर नगर महकाये है
श्री पुष्पदंत .....

जब से देखा है मैने इन्हें ये लगा कि तारण हार हो तुम
इस पंचम काल में हे स्वामी महावीर का ही अवतार हो तुम
तेरी महिमा का यशोगान विद्वान भी नहीं कर पाये है
है नाम श्री अरूण सागर.....

किया २० वर्ष तक शास्त्र पठन शास्त्रो का चितंन मनन किया
२५ वर्ष कि आयु में तुमने मुनिवर पद ग्रहण किया
दीक्षा गुरू पुष्प दन्त सागर उनको हम शीश नवाये है
है नाम श्री अरूण सागर.....

लाखो को भव से पार किया मुझको भी स्वामी पार करो
मैने तो गुरू तुम्हे मान लिया तुम भी स्वीकार करो
करने को तेरे चरण नमन हम सब चरणों में आये है
है नाम श्री अरूण सागर.....

सारे जग को जो ममता से समता का पाठ पढाते है
हो धर्म प्रिय या धर्म विमुख सबका ही मंगल चहाते है
ऐसे गुरूवर की भक्ति कर हम आज बहुत हर्षाये है
है नाम श्री अरूण सागर.....

जय अरूण सागर की

तर्ज :— हम तुम चोरी से

जय अरूण सागर की ज्ञान के सागर की
बोलो सभी मिलके, करम सब कट जायेगे
जय अरूण सागर की.....

श्री पुष्पदन्त के संघ से यहाँ पर ये मुनिवर आये
है नाम अरूण सागर जी जो नगर नगर महकाये
इन सा नही सानी कोई, पूरे जहान में
जय अरूण सागर की.....

श्री अरूण सागर मुनिवर जो जग को धर्म सिखायें
संग में क्षुल्लिका माता जी जो ज्ञान सुधा बरसाये
पूज्य श्री यहाँ बैठे है हम सब के सामने
जय अरूण सागर की.....

इनकी महिमा तो देखो ये रहे बाल ब्रह्मचारी
अल्पायु में ज्ञान को पाया और मुनिवर दीक्षा धारी
इसीलिए तो करते है सब ही नमन इन्हे
जय अरूण सागर की.....

हम शामली के श्रावक है चरणों में तेरे आये
करना भव पार हमें भी तुमसे और कुछ नहीं चाहे
तुम मान लो विनती मेरी करते है आपसे
जय अरूण सागर की.....

रंग लाग्यो महावीर

रंग लाग्यो महावीर थारो रंग लाग्यो
लाग्यो–लाग्यो महावीर थारो रंग लाग्यो–२
थारे दर्शन करान म्हारो भाव जाग्यो
लाग्यो–लाग्यो महावीर थारो रंग लाग्यो–२
थारी पूजा करवानो म्हारो भाव जाग्यो
लाग्यो–लाग्यो महावीर थारो रंग लाग्यो–२
थारा कीर्तन करवानो म्हारो भाव जाग्यो
लाग्यो–लाग्यो महावीर थारो रंग लाग्यो–२
लाग्यो–लाग्यो महावीर थारो रंग लाग्यो
रंग लाग्यो महावीर थारो रंग लाग्यो

झठ हार जाता है जब सच्चाई से उलझता है
दुर्गंध हार जाती है जब खुशबू से उलझती है
आप मानो या न मानो, पर सत्य जानो
कुदरत हार जाती है जब तपस्या से उलझती है

ऋषभनाथ-२ कहना सभी

तर्ज :— परदेशी—२ जाना नहीं...

ऋषभनाथ—२ कहना सभी, हाथ जोड़ के
ओ मेरे बाबा दुखडा मिटा ना—२
दुखड़ा मिटाना कहीं भूल न जाना।
एक बार जो दर्शन तेरे करता है—२
बार—२ उसे दर पे आना पडता है
रानीला के बाबा फिर से बुलाना
फिर से बुलाना, कहीं भूल न जाना

ऋषभनाथ.....

आदिकाल में तुमने ज्ञान सिखाया है—२
ज्ञान सिखा के उनको पथ दिखलाया है—२
रानीला के बाबा ज्ञान सिखाना—२
कहीं भूल न जाना

ऋषभनाथ.....

भरत बाहुबलि सुन्दर पुत्र तुम्हारे है—२
तप करके वो इक इन मोक्ष पधारे है
ओ प्यारे बाबा मुक्ति दिलाना—२
कहीं भूल न जाना

ऋषभनाथ.....

करमन की गति है न्यारी

करमन की गति है न्यारी, जानो पहिचानो रे
समता से सहो सब भाई, होनी टारे न टरे
ताल तलैया को मीठो जल,
सागर जल क्यूं खारी
उज्जवल रूप दिया बगुला को,
कोयल क्यूं है कारी.....करमन की गति.....
शूल शरण में फूल है खिलता
जा में गंध विकारी
फूल बिराजे प्रभू चरणन में
शूल की किस्मत न्यारी.....करमन की गति.....
बूंद की किस्मत सर्प के मुख में,
गिरकर विष बन जाती
बूंद वही जब सीप से मिलती
मोती बन इठलाती.....करमन की गति.....
गिरती जल की धार गगन से,
कितनी उज्जवल निर्मल
मिलती जब वो आ के धरा से,
कहलाती है दल–दल.....करमन की गति.....

जिनवर तू है चंदा

तर्ज :– सावन का महीना

जिनवर तू है चंदा, तो मैं हूँ चकोर
दर्शन तेरे पाकर, मेरा झूम उठा मन मोर।
नैया खिवैया तू है पार लगैया
किनारे लगादो मेरी टूटी है नैया
मांझी तू है मेरा संभालो मेरी डोर
दर्शन तेरे.....

अष्ट कर्म को तूने, मार भगाया।
अज्ञानियों को तूने, ज्ञान सिखाया
कर्मो का तेरे आगे, चले ना कोई जोर
दर्शन तेरे.....

आया है जिनवर जो भी, तेरी शरणवा
छवि तेरी पाकर उसका, खोया है मनवा।
विनती मैं भी करता, तू सुन ले चित्त चोर।
दर्शन तेरे.....

Come Here, My Dear

Come Here, My Dear सब श्रावक भाई,
देखो Temple अंदर जिनवर बैठे, जय बोलो भाई,
यहाँ जिनवाणी की अमृत धार नित्य बहे भाई.....
Come Here.....

For You Sweet भजन हमने बनाया
सम्यक दर्शन लक्ष्य भजन का हमने है ध्याया
So much delay, so much delay फिर क्यूं लगाई..
Come Here.....

Remembering तुमको प्रभु आसूं बहाऊँ,
Come to my हृदय अंदर आरती दिखाऊँ
हृदय अंदर हुआ उजाला गुरू कृपा पाई.....
Come Here.....

अष्ट द्रव्य से Worship करके जब तुमको ध्याया
आठ कर्म घर छोड़ चले जब Wonderful गाया
णमोकार का अनहद गूंजे अंतस में भाई.....
Come Here.....

Please Keep Silence गुरूवर करते ध्यान,
ध्यान अवस्था ही में प्रभू को हुआ था केवलज्ञान
If you want सम्यक ज्ञान, ध्यान लगा भाई....
Come Here.....

Impossible को Possible करते हैं गुरू OM
जिसको Little Little doubt हो, आये पुकारे OM
OMKAR की ध्वनि से गलता अहंकार भाई.....

सब पाप करम कट जाते है

सब पाप करम कट जाते है, मुनिराज के दर्शन करने से,
सब संशय भ्रम मिट जाते है, मुनिराज के दर्शन करने से।
यह मूरत जग से न्यारी है, छवि परम दिगम्बर प्यारी है
जग तप को हरने वाली है, सुख शान्ति को करने वाली हैं।
सब.....

यह पंच महाव्रत धारी है, मुनिराज बड़े उपकारी है,
अरू राग द्वेष निरवारी है, सब जीवन के हितकारी है
सब.....

आरंभ परिग्रह छोड़ा है, इस जग से नाता तोड़ा है,
शिव नार से नेहा जोड़ा है, संसार से मुँह को मोड़ा है।
सब.....

जो आत्म ध्यान लगाते है वे जैन साधु कहलाते है
ऐसे साधु नजर न आते है, हम सब इनको शीश नवाते है।
सब.....

आया हूँ तेरे दर पे

आया हूँ तेरे दर पे प्रभु ध्यान के लिये
कर्मों की बेड़ियां कटे वरदान ये मिले
हमको मिले आशीष तेरे ध्यान के लिये.....
आया हूँ.....

कितने जनम गंवा चुका ममता के बीचे में
कितने कफन बदलता गया राग द्वेष में
अब तो दफन हो कामना वरदान ये मिले.....
आया हूँ.....

विषयों की आग में जला जलता चला गया
मैं खुद ही अपने जाल में फंसता चला गया
छूटे किनारा मोह का वरदान ये मिले.....
आया हूँ.....

निज की व्यथा सुनानी थी तुमको मेरे गुरू
पग तेरे दर की ओर उठे दर्श को प्रभु
निज रूप में राजेन्द्र रहे वर दान ये मिले.....
आया हूँ.....

मुझे ऐसा वर दे दो

मुझे ऐसा वर दे दो, गुणगान करूं तेरा।
इस बालक के सर पर, गुरूवर हाथ रहे तेरा।
भक्ति और शक्ति दो, अज्ञान को दूर करो–२
दरखास करूं गुरूवर, अभिमान को दूर को
नहीं द्वेष रहे मन में, रहे वास गुरू तेरा।
इस.....

सेवा नित तेरी करूं, तेरे दर पे आऊँ मैं
चरणों की धूलि को, निज शीश लगाऊँ मैं
धर्मामृत पाकर कर, नित कर्म करूं तेरा
इस.....

विश्वास हो ये मन में, तुम साथ ही हो मेरे
तेरे ध्यान में सोऊ मैं, सपनो में रहो मेरे
चरणों में रहूँ गुरूवर, तुम ख्याल करो मेरा
इस.....

मेरी यश कीर्ति को, गुरूवर दूर करो मुझसे
इस मन मन्दिर में तुम, शक्ति भरपूर भरो
तेरी ज्योति जग मन में, नित ध्यान करूं तेरा
इस.....

वीर नाम सुखदाई

वीर नाम सुखदाई, भजन करो भाई
ये मेला दो दिन का
ये तन है जंगल की लकड़ी
आग लगे जल जाई
भजन करो.....
ये तन है, कागज की पुडिया
हवा लगे उड़ जाई
भजन करो.....
ये तन है, फूलो का बगीचा
धूप पडे मुरझाई
भजन करो.....
ये तन है मिट्टी का ढेला
बूंद पडे गल जाई
भजन करो.....
ये तन है भूतो की हवेली
मार पडे भग जाई
भजन करो.....
ये तन है सपने की माया
आंख खुले कुछ नाहिं
भजन करो.....

संसार में सार

संसार में सार को चुन कर के,
संशय में जा मत मेरे मना,
श्रद्धा भक्ति रख गुरू चरणा,
दुस्तर भवसागर गर तिरना.....संसार

जीवन है एक उफनती नदी, इच्छाएं शांत नहीं होती आचार विचार सुधारे बिना जीवन में शांति नहीं होती, जब नर तन तुम्हें निरोग मिला, तेरे धन्य भाग जिन कुल है मिला, निर्ग्रन्थ अवस्था लक्ष्य बना, निज रूप के दर्शन कर लेना. संयम चर्चा का विषय नहीं, ये आत्मतत्व अनूभूति है, संयम की समझ जरूरी है, पल्लवित स्वयं ये होती है संयम का राज सुनाता हूँ, संयम का महत्व बताता हूँ जो यम को जीते वो संयम, याने परमात्मा है संयम.. सन्मति के चरणा सन्मति ले, विद्या के चरणा विद्या ले ले धर्म सुरभि गुरू पुष्प से तू, चरणों में विमल के मल धोले, उपयोग को अंर्तमुखी बना, हो शांत निराकुल मेरे मन, चैतन्य की धारा में धुल जा, हो जा निर्मल बन जा''भक्त''

जो बीत गई सो बीत गई

जो बीत गई सो बीत गई, बीती बातों का क्या रोना,
चल गुरू चरणा, चल गुरू चरणा
कर दे अर्पण तन मन जीवन
नैनन जल से हो प्रक्षालन
अभिशाप तेरे सब धुल जायें
चंदन सम शीतल हो जाये तेरा जीवन....चल.....
लोहा जब गलता अग्नि में
वो पूर्ण समर्पित अग्नि में
गुण दोष तपें सब अग्नि में
बहते विकार जल अग्नि में
जो शेष बचा वो दोष रहित कुंदन कहलाता है जग में
तू भी तज दे सब राग द्वेष
अर्पित यूं हो कुछ रहे ना शेष
चिंता फिर तेरी गुरू करें
तू मन में समता भाव रखे
चल गुरू चरणा.....
एक तारा गगन से टूटा क्या फिर चमक सका नहीं नहीं
एक शोला जलके राख हुआ क्या दहक सका नहीं नहीं
एक फूल जो मुरझाया क्या फिर महक सका नहीं नहीं

तो मुरझाने के पहले होश में आ
मिट जाने के पहले होश जगा
जो बीत गई सो बीत गई
जो शेष बची उसमें जग जा....चल...गुरू.....

आके चरणों में कुछ

आके चरणों में कुछ याद रहता नहीं,
नाम तेरा गुरू याद आने के बाद।
याद आने से पहले चली जाऊँ मैं,
और फिर जाऊँ मैं जान जाने के बाद।।
आके.....

आपका नाम दिल से निकलता नहीं,
मोह माया से दिल ये बहलता नहीं।
अब जरूरत नहीं झूठे संसार की,
बस शरण में प्रभु तेरे आने के बाद।।
आके.....

अब बता दो दिशा जाके किस ओर में,
नाँव मझधार में जाऊँ किस ओर में।
तुम बताओ गुरू उस डगर का पता,
जो खत्म हो तेरे जैसा बनने के बाद।।
आके.....

जान जाये भले ये मंजूर है।
लेकिन जाए दर्श पाने के बाद।।
आके.....

बोलो तो बोलो सदा मीठे

बोलो तो बोलो सदा मीठे वचन, ओ मेरे मन
सारे धर्मो का यही है रे कथन, ओ मेरे मन
बोलो....

कोयल ने देखो लुभाया, तन मन जन–जन का
कोए ने बोलो बिगाडा, क्या जन जीवन का,
बोली–बोली में दिपी जादू किरण
ओ मेरे.....

वाणी ऐसी हो की, जिसमें से अमृत बरसे
फिर से सुनने को, जिससे यह अर्न्तमन तरसे
जिनको सुनते ही मिटे, मन की तपन
ओ मेरे.....

पहले तो होगा नही, कोई अपना दुश्मन
होगा भी तो वो झुकेगा, कदमों में एक दिन
प्रिय वाणी ही कराती, है ये मिलन
ओ मेरे.....

हो मैने तो धार लिया

तर्ज :– कोई मायके को

हो मैने तो धार लिया योगी का वेष
प्रभु का धाम प्यारा लगे।
हो मुझे प्यारा है, सिद्धो का देश
प्रभु का धाम प्यारा लगे।
जीवन न मृत्यु न रोगो का घर,
सुख से भरा ऐसे, सिद्धो का घर।
हो ऽऽऽ वहाँ होता नही कोई क्लेश
प्रभु.....
जीवन के नाना, नजारे भी देखे,
चमकते हुए, चाँद तारे भी देखे।
हो ऽऽऽ वहाँ होता नही, राग द्वेष
प्रभु.....

सब जैन धर्म की जय बोलो

तर्ज :– है प्रीत जहाँ की रीत

सब जैन धर्म की जय बोलो–२, हम गीत उसी के गाते है।
जो विश्वशांति का प्रेरक है, हम उसकी बात सुनाते है।
सब जैन.....

यह सत्य अहिंसा ब्रह्मचर्य का, पाठ हमें सिखलाता है।
अज्ञेय परिग्रह त्याग हमें, मानव बनना सिखलाता हैं।।
ये पंच महाव्रत सार जगत–२ ये शास्त्र।
ये शास्त्र सभी बतलाते हैं।।
जो विश्वशांति....

सच्ची राह बताने को, चौबिस हुए अवतार यहाँ
सबने इसकी महिमा गाई, और पार हुए संसार यहाँ
सिद्धान्त अमर सुखदाई है–२ जो ध्यान।
जो ध्यान धरे तिर जाते है।।
जो विश्वशांति....

है जैन धर्म वट वृक्ष बड़ा, जिसकी छाया अति शीतल है।
जिन वर्धमान और साधू को, पा धन्य हुआ अवनीतल है।
रखाने को जीवित मानवता–२ हम जैन
हम जैन ध्वजा फरहाते है।।
जो विश्वशांति....

इस पथ पर दानव दुनियां में, इंसान का जीना भारी है
विध्वंस सृष्टि को करने की, प्रति दिन होती तैयारी है।।
जो जैन धर्म के पथ चले–२ सुख शांति
सुख शांति सरस वें पाते है।।
जो विश्वशांति....

अपनी अपनी करनी का

इस जनम में न सही परभव में मिलता है–२
अपनी अपनी करनी का फल सबको मिलता है–२
एक फूल वो है जो वेदी पर चढ़ता है
एक फूल वो है जो अर्थी पे सजता है
फूल दोनों एक ही गुलशन में खिलता है
अपनी २.....

एक पत्थर वो है जिसकी मूरत बनती है
एक पत्थर वो है जो सड़कों पर बिछता है
पत्थर दोनों एक ही चट्टान से निकले है
अपनी २.....

एक भाई वो है जो मुनिराज बनता है
एक भाई वो है जो विषयों में रमता है
दोनों की जननी एक है पर अन्तर इतना है
अपनी २.....

आज चंदन के मन की ना पूछो

आज चंदन के मन की ना पूछो, वीर आये है चंदन के द्वारे,
जिनशासन के जो हैं नियंता, आज चंदन के द्वारे पधारे
एक पग देहरी के आगे, एक पीछे,
सूप में कोदों के भात लाई
लौह बंधन में जकड़ी थी काया
फिर भी भावों से प्रभु को बुलाई....२
विधि मिलते ही वीर पधारे, चले आये वो चंदन के द्वारे
भाव पुलकित नयन अश्रुपूरित
किस तरह क्या करें कुछ ना समझे
खुल पड़े तब ही हाथों के बंधन
करले अर्चना प्रभू की ओ चंदन....२
वो खड़ी है ठगी सी निरंतर, दीनों के नाथ प्रभु को निहारे
उसने वंदन किया तब प्रभु को,
भाव पूजा की प्रभु के चरण की
प्रेम से उसने प्रभु को खिलाया
भावना से की अर्चना प्रभु की....२
विश्व ने आज देखा चकित हो, भक्त से कैसे भगवान हारे
पुण्य चंदन से मेरे नहीं है,
भाव फिर भी है पावन हमारे
मन वचन काया शुद्ध कैसे कर दूँ
दोष अनगिन है भारी हमारे....२
फिर भी आस लगाये खड़ा हूँ गुरू पड़गे भक्त में द्वारे

अपनी कहानी सुन जा

अपनी कहानी सुन जा, भव भव की कहानी सुन जा
गुरू चरणन में बैठ जरा, भटकन की कहानी सुनजा
भव–भव भटकने वाले, जनम जरा सहने वाले
मौत की कहानी कहा रहा आ सुन भी जा...
निकला निगोद से तो विकलत्रयी तू बना,
सैनी असैनी कभी, कभी पंचेन्द्रिय बना,
तास भ्रमण की तेरी बहुकथा है ये प्राणी,
गुरू कृपा कर बखानी, भ्रमण की कथा कह रहा आ सुन भी.
स्वयं को दिया रे धोखा, स्वयं से किया रे छल,
मौत से चुराई आंखे, जो है सुनिश्चित अटल
एक श्रांस में अठ–दस बार, मरा और जनमा,
फिर भी भुलया मौत का पल, जनम मरण की कथा कह रहा
आ सुन भी.....
नरकों की पीड़ा भोगी, स्वर्गों के सुख भी भोगे,
जैसे कर्म आये उदय में फल तूने वैसे भोगे
जब तक है पुण्य बाकि, सुख की जलेगी बाती,
दुःखा का अंधेरा उसके बाद है,
पाप पुण्य की है कथा.....

अरिहंत नाम लड्डू

अरिहंत नाम लड्डू, सिद्ध नाम घी
साधु नाम मिश्री को, घोल–२ पी
जो इनके नाम की, हृदय में ज्योति जलाये
फिर बाधा कोई विश्व की, उसको न सताये
है श्रद्धा अटल करके, आनंद से तू पी
साधु.....

हे भक्त जपो प्रेम से, जिन नाम की माला
तुम शीघ्र ही निकाल दो, मिथ्यात्व का जाला
इस सर्व औषधि को बडे प्रेम से तू पी
साधु.....

ये पंच नाम पंच पाप के सदा हर्ता
जो ध्याता वही पंच, परावर्तन न करता
इस जन्म मृत्यु जरा रोग की दवा तू पपी
साधु.....

पंच नाम से संयुक्त ओम योग है
जो उसमें लीन हो न, उसे लगे रोग है
बन सिद्ध शुद्ध तन रहित, अध्यात्म रस तू पी
साधु.....

क्षण भंगुर जीवन की कलियां

क्षण भंगुर जीवन की कलियां, कल सुबह फिर खिली ना खिली
वीर वीर रट ले मेरी रसना, अंत समय तू हिली ना हिली
तिनका तिनका जोड़ के तूने, महल दुमहले बनाया रे,
धूप सही बरसात सही पर बाग बगीचे सजाया रे
सदियों का सामान किया पर अगले पल की खबर नहीं.
खुली आंख से सपने देखे, कैसा तू दीवाना रे
देखे को अनदेखा करता, झूठ को सच्चा माना रे
मौत से आंख मिचौली मत कर, मौत से हारे महाबली.
भ्रमण करो संसार में लेकिन विषयों में मत भ्रमण करो
दोष रहित आचरण रखो, प्रति पल गुरू चरणन नमन करो
करो समर्पण माटी जैसा, मुक्ति की खिल जाये कली.
कर्म की लीला सबसे न्यारी, तितली का नाच नचाती है,
धूल चढ़ाती माथे पर, सम्राट को रंक बनाती है
राजतिलक की शुभ बेला, बनवास को ये प्रभु राम चले
वीर–वीर.....

चरणों में आये हैं

चरणों में आये हैं, शरणों में आये हैं,
चरणन शरणन आये गुरूवर, जनम जनम पछताये गुरूवर,
हो गये हम तो त्रस्त त्रस्त
हम तो हैं तेरे भक्त भक्त
गुरूवर तुम देना ध्यान ध्यान, चरणों में बीते सुबह शाम
सुध बुध खो जाये, भक्ति में हो जायें यू अनुरफ्त रफ्त
हम तो है.....

चंदन को तारा, अंजन को उखारा,
मानतुंग जी को दिया सहारा
क्या मेरी खारी आई आज, हृदय से मैनें दी आवाज
संगीत सुनू, निज अंतस का हो जाऊँ, तुम सा मस्त मस्त
हम तो है.....

तरूण के वंदन, प्रज्ञा के दर्पण,
प्रसन्न की पूजा अरूण प्रबल के चिंतन
सौरभ में सुरभि तुम से आई, पुलकित हैं, पुलक ने दिशा पाई
गुरू पुष्पदंत ने संघ सहित किया जग को धर्म में व्यस्त व्यस्त
हम तो है.....

चाहे दासों का भी दास बना लो
गुरू चरणन में निर्मल को बिठालो
अंतस ज्योति प्रकटा दो नाथ, तप की अग्नि दहका दो नाथ
सब पाप जलें और कर्मो के बंधन हो सारे ध्वस्त–ध्वस्त
हम तो है.....

गुरूवर तू है जग का नूर

गुरूवर है जग का नूर, तेरी ख्याति दूर दूर हमें याद रखना
तुम को जाना है जरूर, हम तो श्रावक मजबूर हमें याद रखना
आयेगे जब मंदिर तो तेरी मीठी वाणी रूलायेगी हमें
सूना सिंहासन ये आँख देख हर पल रूलायेगी हमें
रूलायेगी हमें, तडपायेगी हमें
किसको पडगाऊगी और किसको नमोस्तु कहुगी ये बता
अत्रो अत्रो तिष्ठो कह करके विधि किसकी मिलाऊगी बता
बुलायेगे किसे, पडगायेगे किसे
तेरी गुरूभक्ति ओर तेरी आनन्द यात्रा मिलगी अब कहाँ
प्रवचन करती वाणी ओर तेरी वैयावृति मिलेगी अब कहाँ
याद आयेगी जब जब तडफायेगी तब तब
जा रहे हो जाओ पर वापिस आने का तुम इशारा तो करो
बहुत रोयगे हम, तेरी याद में वे सहारा न करो
वे सहारा न करो – इशारा तो करो

विद्यासागर पुष्पदंत की कथा

विद्यासागर पुष्पदंत की कथा बहुत है ये प्यारी,
आओ तुमको सुनायें
कथनी और करनी दोनों में अंतर बहुत है भारी
आओ तुमको सुनायें...
स्वयं को अहिंसक कहते, कर्मो की हिंसा क्यों करते हैं
शेर से निडर हैं तो फिर, पापों से इतना क्यूं डरते हैं
महावीर का माल बेचते, ये भी तो व्यापारी..आओ..
पंच महाव्रत धारी, तीन रतन का परिग्रह करें
वेदना किसी की ना देखें, अपने बदन पर कितना जुल्म करें
धर्म से जोगी, कर्म से योगी, पर चेतन के भोगी..आओ..
सत्य महाव्रत जिनका भक्तों से परदा किया करते है
ब्रह्मचर्य व्रत है जिनका, मुक्ति नारी पे रिझा करते हैं
मुक्ति दुल्हन जो अभी आ जाये, झट कर लेगें शादी..आओ..
त्याग की शिक्षा देते, धर्मो के दस दस मोती रखते हैं,
अचौर्य महाव्रत पालें, सदगुण की चोरी किया करते है,
चोरी की चोरी, सीना जोरी, गजब है साहूकारी....
एक लुटेरा सिकंदर, विश्व विजय के सपने देखा किया
हिंसा का दिखा के ताण्डव, नगर के नगर जिसने लूट लिया
एक ये हमारे गुरूवर, अहिंसा के दम पर सबपे राज करें,
ताज बिना महाराज, तन मन हम सब अर्पण करें,
प्रेम से लूट ले, सृष्टि सारी गजब के हैं लुटेरे..आओ.

दिल में धर के ध्यान

दिल में धर के ध्यान बोलो जय महावीरा
हृदय जगा अरमान, बोलो जय महावीरा
हो जाये कल्याण बोलो जय महावीरा....जय महावीरा.
जिन दर्शन से पुण्य हैं जागे–२
मोह तिमिर अज्ञान है भागे–२
तज दे वचन कठोर बोलो....जय महावीरा.....
मुनि दर्शन के भाव हैं जागे–२
निराकार आकर में जागे–२
अभय का पाओ दान बोलो....जय महावीरा.....
सोलह कारण भावना जागें–२
स्वर करूणा के भजन में जागे–२
फल है आतमज्ञान बोलो....जय महावीरा.....
सतसंगत में बीज है जगेगा–२
वीतराग का पुष्प खिलेगा–२
राजेन्द्र हुआ निहाल, बोलो....जय महावीरा.....

"वेद पुरान को देख कर किया सभी ने व्यक्त,
वे ही प्रभु के भक्त हैं, जो हैं पलि भक्त"

कबहूँ कीन्हों ना भजनवा

कबहूँ कीन्हों ना भजनवा काहे अब डरी,
जइयो यम के भवनवा काहे अब डरी....कबहूँ....
सहना सके जब कष्ट करम के किया थाये इकरार
प्रभु तुम्हारे भजन करूँगा, करो नर्क से पार,
वादा भूल गयो बेईमनवा.....काहे अब डरी.....
बालकपन में खेल खेल कर आई मस्त जवानी
मात–पिता ने करी सगाइ दूल्हा बने गुमानी
बंध गये हाथों में कंगनवा.....काहे अब डरी.....
धूम–धाम से ब्याह हुआ है, पहन केसरी जामा
बीस बरस की गुड़िया मिल गई, खत्म हुआ सब ड्रामा
बन गये सजनी के सजनवा.....काहे अब डरी.....
विषयों का रस पी पीकर दिन दिन हुये सयाने
पहले तो ये बालक थे अब दादा लगे कहाने,
निहरावे चौथा नपवा.....काहे अब डरी.....
कमर कमान दाँत सब गिर गये, नजर गई नजराना
द्वारे पाले खाटें पड़ गई, बहुएं मारे ताना,
कब ये मरेगा बुढ़नवा.....काहे अब डरी.....

छवि बसालो इनकी

छवि बसालो इनकी आखों में,
ध्यान लगा लो इनकी बातो में,
गुरूवर दौडे चले आयेगे....
हम भक्तो की भक्ति में गुरू...
ये तो बसे कण कण में–२
तुम भी बसालो मनमन में–२
बांध लो प्रेम के बंधन में
छोड न जाये हमें भववन में–२
इनको बसालो ख्यालो तो–२
गुरू देव दौड....
गुरूवर जी आये है–२
ज्ञान की गागर लाये है–२
पास जो इनके आये हैं
भर भर वो ले जाये है–२
इनको बसालो अपनी सासो में
गुरू दौडे चले.....

निर मोहियो से ना मोह

निर मोहियो से ना मोह बढाना–२
निर मोहियो को तो है एक दिन जाना
निर मोहियो से.....

हमने न सोचा गुरूवर आकर जगाओगे–२
आके जगाके हमें यू छोड जायोगे–२
इतना बताते जाना–होगा कब आना
निर मोहियो से.....

प्रवचन तेरा गुरू भक्ति की यादे–२
याद बहुत ही आये तेरी ये बाते–२
सूनी सूनी अखियों में आशु ना बहाना
निर मोहियो से.....

छोटी सी भावना को ठेस न आये–२
आकर के तेरे दर से सुने ना जाये–२
छोटी सी आशा इनकी टूट न जाये
निर मोहियो से.....

अरूण गुरूवर एक ही आशा–२
फरीदाबाद में हो जाये चौमासा–२
आशा न टूटे और दिलना टूट जाये
निर मोहियो से.....

कैसे टूटें बन्धन

आज विसर्जन कल फिर सर्जन
कैसे–टूटे बन्धन, हे वीतरागी भगवन
तन का मोह कभी ना छुटा
उत्पत्ति व्यय क्रम नहीं टूटा
ध्रौव्य तत्व की अनुपेक्षा से
आत्म गुणों का संवर्धन
हे वीतराग भगवान.....

मकड़ी जैसा जाल बनायें
बन्द हुये उसमें सुख पायें
स्वयं विधाता है कर्मों के
फिर भी करते है क्रन्दन
हे वीतराग भगवान.....

करते है हम लोग दिखावा
उधानो के नीचे लावा
राग द्वेष अन्तर में धधके
ऊपर ऊपर परिवर्तन
हे वीतराग भगवान.....

अपने में ही स्थिर हो जाये
अरूण सभी अवरोध हटाये
एक बार हो पूर्ण: विसर्जन
निज में हो ईश्वर दर्शन
हे वीतराग भगवान.....

ओ मेरे आत्मन् जागो

ओ मेरे आत्मन् जागो
निद्रा का रस व्यागो
जगने के अवसर आये
पर तुमने व्यर्थ गँवाये,
सब ओर सवेरा जागो–ओ...
तुम अविनाशी हो अजर अमर
जन्म–मृत्यु है दुःख का कर,
अज्ञान नींद से जागो–ओ....
तुम सोये, मन जाग रहा
नश्वर सुख में भाग रहा
कब से मूर्च्छित हो जागो–ओ...
अनन्तवल को पहचानो
मत बंधन में सुख मानो
आलस्य छोड दो जागो–ओ....
जागो कुछ पुरूषार्थ करो
समत्व का अभ्यास करो
सिद्धात्व मिलेगा–जागो–ओ...
प्रबल करो अपना चिन्तन
मन पर हो अपना अनुशासन
अंगड़ाई लो अब जागो–ओ....

पुष्प रूपा, पुष्प हृदया

पुष्प रूपा, पुष्प हृदया पुष्प से छविमान है
पुष्पा में पुष्पदन्त सागर पुण्य के समान है
पुष्प रूपा.....

गोंदिया नगर आचार्य श्री का भव्य जन्म स्थान है–२
पुत्र कोमल चन्द जी के प्यारे, मथुरा के गुरू लाल है
पुष्प रूपा.....

ज्ञान की सीमा ना, ना गुरू की शक्ति का अनुमान है–२
ये वो गुरू है, जिनके कण्ठ में, सरस्वती विधमान है
पुष्प रूपा.....

धन्य है वे भक्त जिनका पुष्प पद में ध्यान है–२
पुण्य ''कर'' यदि शीश पर रख दे तो बस कल्याण है
पुष्प रूपा.....

मुनियों के उपसर्ग का कीना तुरंत निदान है–२
धर्म सेवा चरित्र रक्षा का संकल्प महान है
पुष्प रूपा.....

प्राज्ञ श्री आचार्य श्री की, योजना का प्रमाण है–२
ये वो शक्ति है कि जिनपर धर्म रक्षा का भार है
पुष्प रूपा.....

प्रेम दाता प्रेम ज्ञाता कल्प वृक्ष समान हैं–२
शब्द छन्दों में असंभव गुरू का गुणगान है
पुष्प रूपा.....

नन्हा सा फूल

नन्हा सा फूल हू मैं चरणों की धूल हूँ मैं
आया मैं तो तेरे द्वारे, प्रभु जी मेरी भक्ति स्वीकार करो
मैं तो निर्गुणिया मुझको कुछ ज्ञान दो
जीवन में जीना सीखू ऐसा वरदान दो
निर्गुण को गुण मिल जाये निर्धन को धन मिल जाये
इतना सा दे दो उपहार
प्रभु जी मेरी.....
सुन लो हमारी अर्जी, बस इतनी बात है
मेरे जीवन की डोरी, अब तेरे हाथ है
सूरज सी ज्योति पाऊँ, चंदा सी ठड़क पाऊ
मानू तुम्हारा उपकार
प्रभु जी मेरी.....
देखी ये सारी दुनियाँ, देखी सब रीत है
मतलब के साथी बनते दुख में न मीत है
तेरी हम शरण में आये तेरी हम चरण में आए
निज सा बना लो इस बार
प्रभु जी मेरी.....
हृदयांगन मेरा सूना तुम बिन अनाथ हूँ
जीवन में तुम मिल जाओ तो मैं सनाथ हूँ
हृदय में तुम बस जाओ चरणो में मैं रह जाऊँ
मानू तुम्हारा उपकार गुरू जी भक्ति करो स्वीकार
नन्हा सा फूल.....

कैसे मिलन प्रभु जी से होय

कैसे मिलन प्रभु जी से होय, गति तो चारो मंद पडी–२
कागज की एक नाव बनाई, छोडी गंगाजल में।
धर्मी–२ पार उतर गए, पापी डूबे जल में।
कैसे मिलन....

आम की डाली कोयल काली, मैना राजी वन में।
घर वाले तो घर में राजी, साधु राजी बन में।।
कैसे मिलन....

कोडी–२ माया जोड़ी, जोड धरी बर्तन में।
काल बली को आयो बुलावो, रह गई मन की मन में।।
कैसे मिलन....

तेल जले बाती जले, नाम दिया को होय।
जल गया तेल पसर गई बाती, ले चल–२ होय।।
कैसे मिलन....

राजा राणा छत्रपति, हाथिन के असवार
मरना सबको एक दिन, अपनी–२ बार
कैसे मिलन....

पशु जो बन में रहते है

पशु जो बन में रहते है भूख और प्यास सहते है
उन्हें क्यों मारते हो.....
दीन बेजुबां है और बिन सहारे
फिरते बनों में मारे मारे
किसी का कभी भी नहीं कुछ बिगारें
अरे बुझा दिल क्यों बनते हो, तीर उनमें क्यों चलाते हो
उन्हें क्यों मारते हो.....
बन्दूक गोली उन पर चलाकर, जिन्दा किसी की भेंट चढाकर
पाये भला क्या किसी को रूलाकर
मिटाना तुमने जाना है, नहीं सीखा बसाना है
उन्हें क्यों मारते हो.....
वे तो बेबस कुछ न कहेंगे, जुल्मो सितम तेरे सब कुछ सहेंगे
आँखों से उनकी अश्क बहेंगे
शूल गर तुमको चुभ जायें, चैन फिर तुमको न आए
उन्हें क्यों मारते हो.....
जीवन अपना सबको प्यारा, फिर तुमने क्यो उनको मारा
मानो कहा ये, मानो हमारा
जो जैसा कर्म करता है, फल वो वैसा ही पाता है
उन्हें क्यों मारते हो.....

जियो और जीने दो, वीर की वाणी, धर्म अहिंसा अपना ले प्राणी
फिरंगी ने भी इससे हार मानी
इसे गौतम ने समझाया और गांधी ने अपनाया
उन्हें क्यों मारते हो.....
छोडकर बदी कुछ नेकी कमा लो, बद्दुवाओ से खुद को बचा लो
गिरते हुओ को विनय है उठा लो
प्यार से जीत दुनियां को सिखा दे प्यार दुनिया को
उन्हें क्यों मारते हो.....

गुरू हमारे जीवन में, आदर्शों के मेघ उड़ोले है
हर बाधा में हर लड़ाई में, गुरू हमारे मंगल है
गुरू हमारी साँसो में है गुरू हमारी धड़कन में
दुनिया को आहालादित करते, गुरू जगती के कण कण में

पलट के रख दी जिसने सब

पलट के रखा दी जिसने सब रेखाये
जय बोलो महावीर की जय बोलो–२
चैत शुदी तेरस का दिन, ये प्यारा प्यारा आये
इस ही दिन कुण्डलपुर में थे, वीर प्रभु जन्माये
हिंसा, पापाचार बडे थे, आकर उन्हें मिटाये
अन्धकार को दूर भगाकर ज्ञान की जोत जगाये
जियो और जीने दो, ये वाणी हैं उस वीर की
जय बोलो महावीर की.....

वीर के शासन में सब हिल मिल, गीत अभय के गाते
शेर, गाय, मृग एक घाट ही पानी पीने आते
किन्तु आज हम इन्सां होकर इन्सा को है सताते
महावीर की वाणी को नाहक बदनाम कराते
हिल मिल रहना सीखो, तब बोलो जय महावीर की
जय बोलो महावीर की.....

हो कोई स्थानक वासी या होते श्वेताम्बर
और इससे हमको क्या लेना कि है कोई दिगम्बर
आपस में झगड़ों की खाई, अब तो मिलकर पाटो
एक पेड की शाखा है मत एक दूजे को काटो
अरे जोडो अब भी जोडो, बिखरी कडियां जंजीर की
जय बोलो महावीर की.....

होटल क्लबों में होती है शर्मोहिया निलाम
आज सभ्यता चौराहो पर होती है बदनाम
शहर शहर और गांव गांव में खुली है जो मधुशाला
वीर ही जाने मेर देश का क्या है होने वाला
पीना पीलाना छोडो, फिर बोलो जय महावीर की
जय बोलो महावीर की.....

बड़े बड़े इन जलसो से ही, काम ना पूरा होगा
और वक्ता गायक बुलाकर ही, फर्ज न पूरा होगा
करनी कथनी एक करो, तब जाकर ही कुछ होगा
वीर प्रभु का जन्म महोत्सव सफल तभी बस होगा
पहले इतना कर लो, तब बोलो जय महावीर की
जय बोलो महावीर की.....

पूज्य गुरूदेव का हृदय से अभिनन्दन
जिनके चरणों की माटी बनी है चन्दन
इनके आशीर्वाद की छाया है सिर पर मेरे
ऐसे गुरू अरूण सागर के चरणों में मेरा शत् शत् वन्दन

खुशियाँ छाई है अपार

खुशियाँ छाई है अपार, जय जय जय जय अरूण सागर।
ठण्डी ठण्डी है ब्यार, जय जय जय जय अरूण सागर।
पृथ्वी नाचे अम्बर नाचे, नाचे दुनिया सारी।
आज प्रकृति ही झूमें–२ झूमें सब नर नारी–२।।
कैसी छाई है बहार, जय जय जय जय अरूण सागर।
फन्द कटे सब ये पावन रज अपने शीश चढ़ाकर
आज हुआ है जन्म सार्थक, अरूण के दर्शन पाकर–२
जीयरा गाये बारम्बार, जय जय जय जय अरूण सागर।
देख देख थकते नहीं नैना ये प्यारी सूरतिया।
मेरे मन में समा गयी ये मोहनी मूरतिया।
कैसे अब दूँ निकार, जय जय जय जय अरूण सागर।
गौरव गाथा कहूँ कहा तक, मैं हूँ निपट अनारी।
सुर लय का कुछ ज्ञान नहीं, गुण गाऊँ क्या गुण धारी।।
तेरी महिमा अपरम्पार, जय जय जय जय अरूण सागर।
हे करूणामय, करूणासागर, करूणा मोपे कीजे।
मैं भी तुम जैसा ही बन जाऊँ, मंत्र मुझे वो दीजे।
ये ही विनय है बारम्बार, जय जय जय जय अरूण सागर।

जन्म सफल सब कर लो रे

अरूण सागर जी फरीदाबाद आये, मन की गागर भर लोरे
जन्म सफल सब कर लो रे....
अरूण सागर जी पलक प्रसम, संग फरीदाबाद में आज आएं है
रोम रोम पुलकित है सबके, सबके दिल हर्षाएं है।
इक इक दिन गिनते थे हम सब, इन्तजार अब खत्म हुआ।
मुनिराजो के दर्शन कर के भव सागर से तरलो रे
जन्म सफल सब कर लो रे.....
अरूण सागर है ज्ञान के सागर हित मित मीठी वाणी कहते है।
सबका हो कल्याण इसीलिये प्रवचन रोज सुनाते है
सभी से कहते जप तप संयम थोडा थोडा कर लो रे
जन्म सफल सब कर लो रे.....
मुनिवर हम तो अज्ञानी है क्षमा हमें तुम कर देना।
श्रद्धा भाव बस है मन में स्वीकार इसे तुम कर लेना।
विश्व धर्म पर सदा ही मुनिवर ज्ञान की वृष्टि करते हैं।
कभी कभी इस ज्ञान की बूंदे फरीदबाद में भी पड़ती रहे
जल्दी जल्दी आये मुनिवर यही विनय सब करलो रे
जन्म सफल सब कर लो रे.....

गुरूवर अरूण सागर जी आये

गुरूवर अरूण सागर जी आये, हम सब फूलें नहीं समाये
गुरूवर अरूण सागर जयकारे, देखो नभ तक गूँजे जाये।।
गुरूवर अरूण सागर.....
सहजपुर में जन्में गुरूवर, अनुपम खुशियाँ छायी।
माता शान्ति देवी हरषाये, बाबूलाल पिता, बहन भाई।।
सब ही वारि वारि जाये, गुरूवर जय जय कार बुलाये
गुरूवर अरूण सागर जयकारे, देखो नभ.....
बचपन में ही अरूण सागर को, झूठा जग ना भाए।
माँ की ममता, प्यार पिता का, रोक इन्हें ना पाए।।
सारी दुनिया ही है फानी, साधू बनने की ठानी।
गुरूवर अरूण सागर जयकारे, देखो नभ.....
भर यौवन में सुख वैभव को, आपने ठोकर मारी।
आचार्य पुष्पदंत सागर से, जैनेश्वरी दीक्षा धारी।।
सब ही जयजय कार लगाये, गुरू चरणों में शीश नवायें।
गुरूवर अरूण सागर जयकारे, देखो नभ.....
आचार्य पुष्पदन्त सागर से आप है शिक्षा पाये
सरल सरस भाषा में आपने शास्त्र बहुत छपायें
गुरू है अपार ज्ञान के ज्ञाता, भक्त तो गीत यही है गाता
गुरूवर अरूण सागर जयकारे, देखो नभ.....

अतिथि भवन हम आये

अतिथि भवन हम आये, अरूण के दर्शन पाये
यही पे रम जाना है
अरूण सागर गुरू गुण गाये, जी शीश नवायें
इन्हीं से बन जाना है।
मात–पिता सुत नारी परिजन, जीवन एक झमेला,
आये कही कोई, जाये कही कोई, दो दिन का है ये मेला।
अब भी समय है कुछ करले, गुरू से नेह धरले
नहीं तो पछताना हैं.....
आचार्य पुष्पदंत की वाणी, यही सन्देश सुनाये
सच्चे देव और शास्त्र गुरू को ही हम तो शीश नवायें
निज को तो निज ही जानो, पर को तो पर ही मानो
यही तो समझाना हैं.....
अरूण सागर की पावन, सूरत दर्शन पाप नशायें
दर्शन करके अरूणसागर के, सब संकट मिट जाये
देखो विनय ध्यान करके, तुम सुमरण करके
कि भव तर जाना है

नी मैं खुशी मनाना नी

नी मैं खुशी मनाना नी, दर्शन अरूण सागर के पाये।
नी मैं रझ रझ गाना नी, दर्शन अरूण सागर के पाये।
अरूण सागर है ज्ञान के सागर, ज्ञानी है महाज्ञानी।
अरूण सागर के ज्ञान के आगे, दुनियां भरती पानी।।
नी मैं यही बताना नी, दर्शन अरूण सागर के पाए...
सरल, सरस, वक्ता है, बोले हर दम मीठी वाणी।
इनके प्रवचन सुनने आते हर मजहब के प्राणी।।
निज पर भेद मिटाना नी, दर्शन अरूण सागर के पाए.
स्वयं कवि है कला–पारखी, कलम नहीं रूक पाती
रचनायें जो रची बनी, वो जैन जगत की थाती।।
सदा ही लिखते जाना नी, दर्शन अरूण सागर के पाए.
अरूण सागर के दर्शन कर, अज्ञान तिमिर मिट जाये।
मन की सारी मैल धुले, और ज्ञान कली खिल जाये।।
अरूण से ज्ञान बढाना नी, दर्शन अरूण सागर के पाए.
पर उपकारी, जग हितकारी, जंत्र–मंत्र के ज्ञाता।
अरूण के नाम मात्र से, कष्ट स्वयं मिट जाता।
झोली भर भर जाना नी, दर्शन अरूण सागर के पाए.
अरूण सागर को पढ़ा सुना, देख नहीं थे पाए।
यहाँ पे आते देखा तो बस देखत ही रह जाये।

चरणन शीश नवाना नी, दर्शन अरूण सागर के पाए.
बच्चों का भी यहां पे आकर, मन मयूर खिल जाता
खेल खेल में धर्म सीख कर मजा बहुत है आता
अरूण से ध्यान लगाना नी, दर्शन अरूण सागर के पाए..
अरूण सागर की जय जय बोलो, सारे ही नर नारी।
फरीदाबाद के पुण्य उदय है जाये हम बलिहारी।
विनय जयकार कराना नी, दर्शन अरूण सागर के पाए.

जिन्दगी भजन बिना लुट गई रे

लुट गई रे....२ लुट गई रे
आज सोचा वीरा तीर्थ यात्राा करूँगी
स्टेशन से गाडी छुट गई रे
जिन्दगानी भजन बिना....लु गई रे
आज सोचा वीरा मैं दान करूँगी
कोने में जाके छिप गई रे
जिन्दगानी भजन बिना....लु गई रे
आज सोचा वीरा उपवास करूँगी
हल्वा पूरी पर जाके जुट गई रे
जिन्दगानी भजन बिना....लु गई रे
आज सोचा वरा सत्संग में जाऊँगी
पड़ोसन से लड़ने में जुट गइ रे
जिन्दगानी भजन बिना....लु गई रे
आज सोचा वीरा मन्दिर जाऊँगी
मन्दिर के दरवाजे बंद मिले रे
जिन्दगानी भजन बिना....लु गई रे

क्यों आये इतने नर नारी

क्यों आये इतने नर नारी, भीड़ क्यूं इतनी होरी से।
अरूण सागर के दर्शन हित ही, भीड ये इतनी होरी से।
अरूण सागर जी जिस दिन से ही, फरीदाबाद नगरी आये है।
धर्म ध्यान की झडी लगी है, खुशियां बेहद छाये है।।
दूर दूर से भविजन आये, आये छोरा छोरी से
अरूण सागर के दर्शन.....

ीवन में ऐसे अवसर तो बार–बार नही आवे रे।
ान पूर्वक पाठ करो, क्यूं मन इत उत भटकावें रे
ाँ भी आके छोड सके ना, तोरी से ये मोरी से
अरूण सागर के दर्शन.....

माया दोनो नश्वर, मत इनका अभिमान करो।
से सुकर्म करो नित, माया को बस दान करो।
माल निकालो, भैया उतनी भरे तिजौरी से
अरूण सागर के दर्शन.....

ागर जी जग उपकारी, बिगडी बात बनाते है
सब मिट जाते है, हर उलझान सुलझाते है
है मेरी बार ही, देर क्यूं इतनी होरी से
अरूण सागर के दर्शन.....

कभी कभी मुनिवर को

कभी कभी मुनिवर को श्रावक से काम पडे
लगी भूख तो भइया उनके घर चल पडे
क्षुधा वेदना उदय में आयी
ज्ञान ध्यान में पडी कठिनाई
भावो ने फिर ली अगड़ाई
कैसी विपदा सामने आई
क्षुधा वेदना शान्त करने को, वो निकल पड़े
लगी भूख.....

ध्यान छोड भोजन को जाये
पंच समिति मन में भाये
श्रावक मन ही मन हर्षाये
घर बैठे गुरू दर्शन पाये
हाथ जोड, गुरू के आगे श्रावक मगन
लगी भूख..

आहार दान को मन ललचाये
श्रावक तीन शुद्धी अपनाये
कहते सुनो हमारी

आरती मुनि अरुण सागर

अरुण सागर जी महाराज, आज थारी आरती उतारूँ।
आरती उतारूँ थारी मूरत निहारूँ।
अरुण सागर जी महाराज.....
माता शान्तिदेवी के हो तुम प्यारे।
पिता बाबूलाल जी के दुलारे।।
जन्मे हो सहजपुर ग्राम। आज थारी आरती उतारूँ
अरुण सागर जी महाराज.....
आचार्य पुष्पदंत सागर से दीक्षा।
बन कर मुनि जब पाई थी शिक्षा।।
करने चले हो कल्याण। आज थारी आरती उतारूँ।
अरुण सागर जी महाराज.....
जग–मग दीपक हाथों में लेकर।
गुरू चरणों में शीश झुकाकर।।
जग के हो सरताज। आज थारी आरती उतारूँ।
अरुण सागर जी महाराज.....

संक्षिप्त सूतक विधि

सूतक में देव शास्त्र गुरू का पूजन प्रक्षालादिक तथा मन्दिर जी की जाप, वस्त्रादि को स्पर्श नहीं करना चाहिये। सूतक का समय पूर्ण होने के बाद पूजनादि करके पात्रदानादि करना चाहिये।

१. जन्म का सूतक दश दिन तक माना जाता है।

२. यदि स्त्री का गर्भपात (पांचवे, छठे महीने में) हो, तो जितने महीने का गर्भपात हो, उतने दिन का सूतक माना जाता है। किन्तु गर्भपात कराने का सूतक छः माह का समस्त परिवार को लगता है।

३. प्रसूता स्त्री को ४५ दिन का सूतक होता है, कहीं कहीं चालीस दिन का भी माना जाता है। प्रसूति स्थान एक मास तक अशुद्ध है।

४. रजस्वला स्त्री चौथे दिन पति के भोजनादिक के लिए शुद्ध होती है, परन्तु देव–पूजन एवं पात्रदान के लिए पांचवे दिन शुद्ध होती है। व्यभिचारिणी स्त्री के लिए सदा ही सूतक रहता है।

५. मृत्यु का सूतक तीन पीढ़ी तक १२ दिन का माना जाता है। चौथी पीढ़ी में छह दिन का, पांचवी–छठी पीढ़ी तक चार दिन का, सातवीं पीढ़ी में तीन दिन, आठवीं पीढ़ी में एक दिन रात, नवमी पीढ़ी में स्नान मात्र से शुद्धता हो जाती है।

६. जन्म तथा मृत्यु का सूतक गोत्र के मनुष्य का पाँच दिन का होता है। तीन दिन के बालक की मृत्यु का एक

श्रावक जन ने आज पुकारा
हो यही आहार तुम्हारा
मुनिवर की आँखे मुस्काई
श्रावक मन में खुशियाँ छाई
तार दिया तुमने सबको हम सब त्याग करे
लगी भूख.....

मुझे तजकर मेरे गुरूवर

मुझे तजकर मेरे गुरूवर, किधर चल दिए।
बिन तुम्हारे आज हम, किस तरह जियें।।मुझे तजकर.
हो दयालु माफ करना यदि हुई कुछ भूल–२।।
मन पकड़ कर चुभ रहे हैं वेदना के शूल–२।।
कौन से ये पाप मेरे अब उदय हुये।।मुझे तजकर..
कुछ कहा न कुछ सुना, मुझसे चल दिए चुपचाप–२।
कौन समझे पीर जब ये, समझे न आप–२।।
वीर की निज बात प्रकटी नयन बह गये। मुझे तजकर.
हो सके तो लौट के आना, जाना नहीं हमें भूल–२।
हो चौमासा यहाँ पर, गुरू जी करो ये कबूल–२।।
कौन से वे भाग्य मेरे तब उदय होंगे। मुझे तजकर..
मैं रहूं पग धूल बनकर, बस यही चाहूँ–२।
हो मरण उत्तम हमारा, यह सदा भाऊँ।।
तेरे सुध की किरण पाकर, तुमसे मिल गया।। मुझे तजकर.

आरती आचार्य श्री पुष्पदन्त सागर

ओम् जय पुष्पदन्त स्वामी, स्वामी जय पुष्पदन्त स्वामी
तुम हो पाप निवारक–२ पुण्य वृद्धि दानी
ओम् जय पुष्पदन्त.....

गोंदिया नगर में जन्म लिये थे हो करूणाधारी–२
हमको पार करो तुम–२ तुम गुण है भारी
ओम् जय पुष्पदन्त.....

विमल सागर से दीक्षा पाई विद्या ज्ञान दिया–२
गुरू द्वय चरण में रहकर–२ सेवा खूब किया
ओम् जय पुष्पदन्त.....

गुरू तुम दीपक हम है बाती, धर्म की ज्योति जले–२
श्रद्धा घृत को लेकर–२ आरती तेरी करें
ओम् जय पुष्पदन्त.....

पाँच महाव्रत धार के तुमने जग से मुख फेरा–२
राजा हो या भिखारी–२ सब पर प्रेम तेरा
ओम् जय पुष्पदन्त.....

आरती करते तेरी दूर करो तम को–२
''हम सब'' सेवक तेरे–२ पार करो हमको
ओम् जय पुष्पदन्त.....